@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
शुक्रवार, 26 सितंम्बर 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 317 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

राजस्थान के बांसवाड़ा में पीएम मोदी ने बिजली को लेकर कांग्रेस पर कसा तंज

कांग्रेस ने राजस्थान को लूटकर जो जख्म दिए : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने राजस्थान के बांसवाड़ा में कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया।

एजेंसी
बांसवाड़ा। प्रधानमंत्री मोदी ने राजस्थान के बांसवाड़ा में कई विकास परियोजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया। इसके साथ पीएम मोदी ने यहां 15,000 से अधिक नियुक्ति पत्र भी बांटे और तीन ट्रेनों को हरी झंडी भी दिखाई। इस दौरान पीएम मोदी ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस पार्टी पर जमकर निशाना साधा।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकार ने बिजली के महत्व पर ध्यान ही नहीं दिया। जब 2014 में आपने मुझे सेवा का अवसर दिया और जब मैंने दायित्व संभाला, तब भारत के 2.5 करोड़ घर ऐसे थे जहां बिजली का कनेक्शन नहीं था। आजादी के 70 साल बाद भी देश के 18,000 गांवों में बिजली के खंभे तक नहीं लगे थे। देश के बड़े-बड़े शहरों में घंटों तक बिजली कटौती होती थी और गांवों में तो 4-5 घंटे बिजली आ जाए, यह बड़ी बात मानी जाती थी। उन्होंने कहा कि 2014 में हमारी सरकार ने इन हालातों को बदलने का संकल्प लिया और हमने देश के हर गांव तक बिजली पहुंचाई। हमने 2.5 करोड़ घरों को मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया, और जहां-जहां तार पहुंचे, वहां

बिजली भी पहुंची। इससे लोगों की जिंदगी आसान हुई और नए-नए उद्योग भी स्थापित हुए। 21वीं सदी में जिस देश को तेजी से विकास करना है, उसे अपने यहां बिजली उत्पादन बढ़ाना ही होगा। इसमें सबसे सफल वही देश होंगे, जो स्वच्छ ऊर्जा में आगे रहेंगे। इसलिए हमारी सरकार स्वच्छ ऊर्जा के अभियान को जनआंदोलन बनाकर आगे बढ़ा रही है। पीएम मोदी ने कहा कि कांग्रेस ने राजस्थान को लूटकर जो जख्म दिए, उसे भरने का काम हमारी सरकार कर रही है। कांग्रेस सरकार में राजस्थान पेपर लीक का केंद्र बन गया था, जल जीवन मिशन को भी कांग्रेस ने भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ा दिया था, महिलाओं पर अत्याचार चरम पर था और बलात्कारियों को संरक्षण दिया जा रहा था। कांग्रेस सरकार में बांसवाड़ा, डूंगरपुर, प्रतापगढ़ जैसी जगहों पर अपराध और अवैध शराब का कारोबार खूब पनपा। जब आपने भाजपा को मौका दिया, तब हमने कानून व्यवस्था को मजबूत किया और विकास परियोजनाओं में तेजी लाई। आज भाजपा सरकार राजस्थान को तेज विकास की राह पर आगे बढ़ा रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने आगे कहा कि आज से 11 साल पहले, कांग्रेस के समय हालात कितने खराब थे, क्योंकि कांग्रेस सरकार देशवासियों का शोषण करने में लगी हुई थी। कांग्रेस सरकार देश के लोगों को ही लूट रही थी। कांग्रेस के समय में टैक्स और महंगाई दोनों आसमान पर थे। जब आपने मोदी को आशीर्वाद दिया, तब हमने कांग्रेस की लूट को बंद किया। पीएम मोदी ने कहा कि राजस्थान की धरती से आज बिजली क्षेत्र में भारत के सामर्थ्य का एक नया अध्याय लिखा जा रहा है। आज राजस्थान, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में 90 हजार करोड़ रुपये से अधिक के प्रोजेक्ट शुरू हुए हैं। यह दिखाता है कि आज देश बिजली की रफ्तार से आगे बढ़ रहा है, और इस रफ्तार में देश का हर हिस्सा शामिल है। हर राज्य को प्राथमिकता दी जा रही है।

बांसवाड़ा में मोदी-राजे की मंचीय मुलाकात, सियासी चर्चाओं को नया आयाम

बांसवाड़ा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बांसवाड़ा में हजारों करोड़ की योजनाओं का शिलान्यास और उद्घाटन किया, लेकिन इससे ज्यादा सुर्खियों में रही उनकी पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ मंच पर हुई मुलाकात। लंबे समय बाद यह पहला मौका था जब दोनों नेताओं ने आंखों में आंखें डालकर संवाद किया। मंच पर दोनों नेताओं का लंबा संवाद और सहयोगपूर्ण व्यवहार यह दर्शाता है कि पार्टी में राजे का कद अभी भी मजबूत है। जनता और मीडिया के सामने यह दृश्य भाजपा की सियासी

ताकत और नेताओं के बीच सामंजस्य का संदेश भी देता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि बांसवाड़ा की यह मुलाकात आगामी चुनावों और पार्टी निर्णयों के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण मानी जा सकती है। कार्यक्रम के दौरान मोदी ने राज्य और जिले के विकास की कई बड़ी योजनाओं का उद्घाटन किया, लेकिन सियासी नजरिए से मंच पर यह दृश्य सबसे अधिक चर्चा में रहा।

भाजपा ने धर्मेंद्र प्रधान को बिहार का चुनाव प्रभारी बनाया

भूपेंद्र यादव को बंगाल और बैजयंत पांडा को तमिलनाडु की जिमेदारी

एजेंसी
नई दिल्ली। भाजपा ने गुरुवार को बिहार, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में विधानसभा चुनाव के लिए प्रभारी और सह प्रभारी नियुक्त किए। बिहार के लिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को चुनाव प्रभारी जबकि उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य और केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल को सह-प्रभारी बनाया है।

केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव को पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव का प्रभारी और त्रिपुरा के पूर्व मुख्यमंत्री बिप्लब कुमार देब को सह प्रभारी बनाया गया है। इसके अलावा तमिलनाडु में भाजपा सांसद बैजयंत पांडा को प्रभारी और मुरलीधर मोहोल को सह प्रभारी नियुक्त किया गया है। बिहार में अक्टूबर-नवंबर में विधानसभा चुनाव होने हैं, यहां फिलहाल नीतीश कुमार की JD और भाजपा गठबंधन की सरकार है। वहीं, 2026 में मार्च से मई के बीच पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में चुनाव होंगे। बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी TMC और तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK) सत्ता में है।

एक बार फिर कानूनी विवाद में फंसे आर्यन खान, समीर वानखेड़े ने किया मानहानि का मुकदमा

नई दिल्ली। अभिनेता शाहरुख खान के बेटे और वेब सीरीज 'बैड्स ऑफ बॉलीवुड' के डायरेक्टर आर्यन खान एक बार फिर से कानूनी विवाद में फंसते दिखाई दे रहे हैं। आईआरएस अधिकारी समीर वानखेड़े ने दिल्ली हाईकोर्ट में मानहानि का एक मुकदमा दायर किया है। समीर वानखेड़े का कहना है कि रेड चिलीज की वेब सीरीज 'बैड्स ऑफ बॉलीवुड' ने एंटी-ड्रग एजेंसियों और कानून प्रवर्तन की छवि खराब की है और जनता का भरोसा तोड़ा है। उनका कहना है कि सीरीज में कुछ अश्लील और अपमानजनक दृश्य हैं, खासकर एक पात्र राष्ट्रीय प्रतीक 'सत्यमेव जयते' के नारे का अपमान करता है। इसके कारण सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम और भारतीय दंड संहिता की धाराओं का उल्लंघन हुआ है। समीर वानखेड़े की याचिका में कहा गया है कि इस वेब सीरीज में उन्हें और उनके समर्थकों को अपमानित किया गया है, जबकि समीर वानखेड़े और आर्यन खान से संबंधित मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट और मुंबई की एनडीपीएस की एक विशेष अदालत में सुनवाई जारी है। समीर वानखेड़े ने अपनी याचिका में शाहरुख खान और गौरी खान के स्वामित्व वाली रेड चिलीज इंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड, मेमोरियल बिल्डिंग और अन्य लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

डर नहीं, अब योगी के राज में उड़ान भर रही हैं यूपी की 'दीदियां'

प्रधानमंत्री मोदी के समक्ष प्रदेश की महिला उद्यमियों ने विस्तार से बताई अपनी सक्सेस स्टोरी

एजेंसी
ग्रेटर नोएडा। कभी लचर कानून-व्यवस्था के कारण महिलाओं के लिए असुरक्षित माने जाने वाला उत्तर प्रदेश आज महिला सशक्तिकरण की मिसाल बन चुका है। साल 2017 से पहले, प्रदेश में उद्यम लगाने की बात तो दूर, महिलाएं घर से बाहर निकलने में भी हिचकिचाती थीं। लेकिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के शासनकाल में विगत साढ़े 8 वर्ष में आए बदलावों ने उत्त प्रदेश की तस्वीर को पूरी तरह बदल दिया है। ग्रेटर नोएडा के इंडिया एक्सपो मार्ट में आयोजित यूपी इंटरनेशनल ट्रेड शो 2025 में भी इसकी झलक दिखाई दी, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं सहायता समूहों की महिला उद्यमियों से मुलाकात की। इन महिलाओं के लिए यह क्षण किसी सपने के सच होने जैसा था। इन पांच महिलाओं की कहानियां सिर्फ उनकी व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि यह पूरे उत्तर प्रदेश में आए क्रांतिकारी बदलाव की तस्वीर पेश करती हैं। ये कहानियां बताती हैं कि योगी सरकार की नीतियों से अब महिलाएं सुरक्षित महसूस करती हैं और उन्हें अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक सुरक्षित माहौल मिला है। मेरठ की रहने वाली संगीता एक विद्युत सखी हैं। उन्होंने आत्मविश्वास के साथ प्रधानमंत्री को बताया कि वह हर महीने लोगों के बिजली बिल जमा करके अच्छी कमाई कर लेती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी कहानी को बड़े ध्यान से सुना

और उनसे पूछा कि आपको फील्ड में काम करते हुए कोई दिक्कत तो नहीं होती? इस पर संगीता ने गर्व से जवाब दिया कि अब हमें कोई दिक्कत नहीं होती। लोग हमें सम्मान से पहचानते हैं। लखनऊ से आई बैंकिंग सखी सरला ने प्रधानमंत्री को बताया कि वह लोगों के बैंक खाते खुलवाती हैं और इस काम से अच्छी कमाई कर लेती हैं। पीएम ने उनसे भी उनके काम के अनुभव के बारे में पूछा। सरला ने बताया कि शुरुआत में लोगों को समझाना मुश्किल था, लेकिन अब लोग भरोसा करते हैं। सरला ने बताया कि वो अबतक 2000 से अधिक जनधन खाते, 700 से अधिक सुरक्षा बीमा, 200 से अधिक जीवन ज्योति बीमा खाते और 200 से अधिक अटल पेंशन योजना के तहत खाते खोल चुकी हैं।

वाराणसी की नमो ड्रोन दीदी नीतू सिंह: तकनीक और उद्यमशीलता का बेजोड़ संगम

वाराणसी की नीतू सिंह की कहानी प्रेरित करने वाली है। उन्होंने प्रधानमंत्री को बताया कि वह एक नमो ड्रोन दीदी हैं और उन्होंने ड्रोन चलाना सीखा है। नीतू ने बताया कि वह ड्रोन से खेतों में खाद छिड़कने का काम करती हैं और एक बीघे के लिए ?200 लेती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि कभी-कभी वह एक दिन में 20 से 25 एकड़ खेतों में छिड़काव कर लेती हैं। नीतू ने बताया कि पिछले डेढ़ साल में वो 1000 एकड़ से अधिक खेतों में ड्रोन से छिड़काव कर चुकी हैं।

दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर मनोहर

एजेंसी
चंडीगढ़। पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर स्वच्छता पखवाड़े के तहत केंद्रीय आवास एवं शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल ने यहां के किरण थिएटर के पास सेक्टर-22 मार्केट में श्रमदान किया। इस मौके पर 'एक दिन, एक घंटा, एक साथ' पहल के अंतर्गत देशभर में केंद्रीय मंत्रियों, राज्यों के अधिकारियों और आम नागरिकों की सहभागिता के साथ अभियान चलाया गया। मंत्री मनोहर लाल ने एक्स पर लिखा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत संकल्प को आगे बढ़ाते हुए चंडीगढ़ स्थित सेक्टर-22 की मार्केट में श्रमदान करने का अवसर मिला।

भारत में पहली बार ट्रेन से अग्नि-प्राइम मिसाइल का टेस्ट: स्पेशल ट्रेन बनाई

रूस, चीन और नॉर्थ कोरिया के बाद ऐसा करने वाला चौथा देश

एजेंसी
नई दिल्ली। भारत ने बुधवार की देर रात रेल पर बने मोबाइल लॉन्चर सिस्टम के जरिए अग्नि-प्राइम मिसाइल की टेस्टिंग की। यह कैनिस्ट्राइज्ड लॉन्चिंग सिस्टम से लॉन्च की गई। इसके लिए ट्रेन को विशेष रूप से डिजाइन किया गया। यह ट्रेन देश के हर उस कोने तक जा सकती है, जहां रेल लाइन मौजूद है।

रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने इसकी जानकारी दी। टेस्ट ओडिशा के चांदीपुर इंटीग्रेटेड टेस्ट रेंज से किया गया। इस टेस्ट ने भारत को उन चुनिंदा देशों के ग्रुप में शामिल कर दिया है जिनके पास रेल नेटवर्क से मिसाइल लॉन्च करने वाला कैनिस्ट्राइज्ड लॉन्चिंग सिस्टम है।

भारत से पहले रूस, चीन और नॉर्थ कोरिया मोबाइल रेल लॉन्चर का टेस्ट कर चुके हैं। लिस्ट में अमेरिका का नाम भी शामिल है, लेकिन उसने पुष्टि कभी नहीं की। अग्नि प्राइम मिसाइल 2000 किलोमीटर तक की मारक क्षमता के लिए डिजाइन की गई है। जो एडवांस्ड फीचर से लैस है।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वृंदावन के ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में किए दर्शन

एजेंसी
वृंदावन। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वृंदावन के प्रसिद्ध ठाकुर बांके बिहारी मंदिर में दर्शन किए हैं। राष्ट्रपति के दर्शन के लिए मंदिर को कुछ समय के लिए आम भक्तों के लिए बंद रखा गया, ताकि उनकी सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित की जा सके। इस दौरान रिजर्व समय में किसी भी भक्त को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं दी गई। कार्यक्रम के अनुसार, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू दोपहर 3:30 बजे मथुरा के कुब्जा कृष्ण मंदिर पहुंचेंगी, जहां वह करीब 30 मिनट तक रहेंगी। इसके बाद, 4:15 बजे वह श्रीकृष्ण जन्मस्थान पहुंचेंगी, जहां वह दर्शन और पूजन करेंगी। शाम 5 बजे राष्ट्रपति मथुरा जंक्शन रेलवे स्टेशन पहुंचेंगी, जहां से वह ट्रेन से दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान करेंगी।

सीडीएस बोले- 1962 जंग में एयरफोर्स को परमिशन नहीं मिली

वायुसेना का इस्तेमाल चीनी हमले को कमजोर कर सकता था, दुश्मन दबाव में आ जाता

एजेंसी
पुणे। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) जनरल अनिल चौहान ने कहा कि 1962 के भारत-चीन युद्ध के दौरान एयरफोर्स के इस्तेमाल की परमिशन नहीं दी गई थी। अगर ऐसा होता तो चीनी आक्रमण को काफी हद तक कम किया जा सकता था। CDS चौहान ने यह टिप्पणी पुणे में दिवंगत लेफ्टिनेंट जनरल एस पी पी थोराट की संशोधित आत्मकथा - 'रेवेइल टू रिट्रीट' के विमोचन कार्यक्रम में की। वे इस कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए शामिल हुए थे। उन्होंने कहा कि वायुसेना के इस्तेमाल से दुश्मन पर जल्दी हमला करने और दबाव डालने का अवसर मिलता है। हां अब हालात बदल गए

हैं। तब एयरफोर्स के इस्तेमाल को तनाव बढ़ाने वाला कदम कहा जाता था। अब ऐसा नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर इसका एक सटीक उदाहरण है।

केंद्र सरकार ने CDS जनरल अनिल चौहान (64) का कार्यकाल 8 महीने बढ़ाकर 30 मई 2026 तक कर दिया। जनरल चौहान का कार्यकाल पहले 30 सितंबर 2025 को समाप्त होने वाला था। छ्ष्ठस् के लिए आयु सीमा 65 साल है और सरकार इस अवधि को बढ़ा भी सकती है। जनरल चौहान सितंबर 2022 से CDS और डिपार्टमेंट ऑफ मिलिटरी अफेयर्स के सचिव के रूप में सेवा दे रहे हैं। CDS ने ऑपरेशन सिंदूर में तीनों सेनाओं (थल सेना, नौसेना, वायु सेना) के समन्वय को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने सेना में संयुक्त कार्य और रणनीतिक योजना पर भी ध्यान केंद्रित किया है। जनरल चौहान ने मई 2021 में सेवा से सेवानिवृत्त होने के बाद CDS का पद संभाला था। वे जनरल बिपिन रावत के निधन के 9 महीनों बाद इस पद पर आए थे।

कपिल देव, धोनी को नहीं जानता, अभिषेक ने दी टीम इंडिया को मजबूती : योगराज सिंह

चंडीगढ़। पूर्व ऑलराउंडर योगराज सिंह ने कहा है कि वह भारतीय क्रिकेट टीम के दो पूर्व कप्तानों कपिल देव और एमएस धोनी को नहीं जानते हैं। योगराज का यह बयान एक बार फिर से उन्हें चर्चा में ला सकता है। कपिल देव और धोनी के खिलाफ योगराज सिंह पूर्व में भी बयान देते रहे हैं। एशिया कप पर बात करते हुए उन्होंने कहा, भारत को एशिया कप जीतना है, तो शुभमन गिल और अभिषेक शर्मा को शुरुआत के 15 ओवर खेलने होंगे। दोनों जितना ज्यादा समय पिच पर बिताएंगे भारत के लिए उतना ही अच्छा होगा। बांग्लादेश के खिलाफ जिस तरह अभिषेक ने बल्लेबाजी की, उससे मैं बहुत खुश हूं। उसने क्रीज पर टिकने का समय लिया और जब शुरू हुआ, तो फिर मारता ही चला गया।

'विधवा-निसंतान महिला की संपत्ति पर ससुरालवालों का अधिकार'

सुप्रीम कोर्ट बोला- शादी के बाद गोत्र बदल जाता है, ऐसे में मायके का हक नहीं

एजेंसी
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि हिंदू समाज में कन्यादान की परंपरा है, जिसके तहत जब एक महिला शादी करती है, तो उसका गोत्र (कुल या वंश) भी बदल जाता है। ऐसे में विधवा और निसंतान हिंदू महिला की मौत के बाद उसकी संपत्ति उसके पति के परिवार को मिलेगी, न कि उसके अपने माता-पिता को। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट में उन याचिकाओं पर सुनवाई कर रही थी, जिसमें हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 15(1)(बी) को चुनौती दी गई है। इस अधिनियम के तहत, अगर किसी विधवा और निसंतान हिंदू महिला की बिना वसीयत के मौत हो जाती है, तो

उसकी संपत्ति उसके ससुरालवालों को मिल जाती है। सुप्रीम कोर्ट की एकमात्र महिला जज जस्टिस बी.वी. नागरत्ना ने याचिका पर सुनवाई के दौरान कहा- हमारे हिंदू समाज की जो संरचना पहले से है, उसे नीचा मत दिखाइए। महिलाओं के अधिकार जरूरी हैं, लेकिन सामाजिक संरचना और महिलाओं को अधिकार देने के बीच बैलेंस होना चाहिए।

डीपफेक वीडियो अलर्ट: पाकिस्तानी एक्स हैंडल ने एयर मार्शल का फर्जी वीडियो फैलाया

फैक्ट चेक में गलत निकला दावा

एजेंसी
नई दिल्ली। सोशल मीडिया पर पाकिस्तान समर्थित एक एक्स हैंडल एक डीपफेक वीडियो वायरल कर रहा है, जिसमें दावा किया जा रहा है कि एयर मार्शल राकेश सिन्हा ने यह स्वीकार किया है कि पाकिस्तानी ड्रोन दिल्ली और गुजरात तक पहुंच गए और भारत की एस-400 प्रणालियां नष्ट की जा रही हैं।

असल में एयर मार्शल सिन्हा ने जानकारी दी थी कि अक्टूबर के पहले सप्ताह में हेडक्वार्टर्स इंटीग्रेटेड डिफेंस स्टाफ द्वारा एक बड़ा अभ्यास किया जाएगा, जिसमें ड्रोन और काउंटर-ड्रोन सिस्टम की क्षमताओं का परीक्षण किया जाएगा। दिल्ली में आयोजित एयर डिफेंस सिस्टम्स पर एक कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि

'ऑपरेशन सिंदूर' से कई महत्वपूर्ण सबक मिले हैं और यह ज़रूरी है कि सैन्य सोच और योजना में भारत हमेशा अपने प्रतिद्वंद्वी से आगे रहे।

सरकार ने चेतावनी दी है कि इस तरह के एआई-जनरेटेड वीडियो केवल लोगों को गुमराह और भ्रमित करने के लिए फैलाए जाते हैं।

साथ ही, लोगों से अपील है कि ऐसे किसी भी संदिग्ध कंटेंट को शेयर करने से पहले उसकी सत्यता अवश्य जांचें और ग़लत सूचनाओं के प्रसार पर रोक लगाने में सहयोग करें। हालांकि, यह दावा बिल्कुल गलत है। पीआईबी फैक्ट चेक ने इस वीडियो को पूरी तरह फर्जी करार दिया है। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि एयर मार्शल राकेश सिन्हा ने ऐसा कोई बयान नहीं दिया है।

सीएम भजनलाल शर्मा ने त्रिपुर सुंदरी मंदिर में पूजा-अर्चना की

बांसवाड़ा। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बांसवाड़ा के तलवाड़ा स्थित शक्ति पीठ त्रिपुर सुंदरी मंदिर में दर्शन किए। उन्होंने मंदिर में विधि-विधान से पूजा अर्चना की और प्रदेश की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। इससे पहले मुख्यमंत्री ने नापला हेलीपैड पर मीडियाकर्मियों से बातचीत करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के प्रति जनता में विशेष आकर्षण, लगाव और विश्वास है, इसलिए इतनी विशाल सभा का आयोजन आज नापला में हुआ। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जब भी राजस्थान आते हैं प्रदेश को सौगातें देते हैं। आज उन्होंने प्रदेश के लिए लगभग 1 लाख 8 हजार करोड़ रुपये के कार्यों का शिलान्यास एवं लोकार्पण किया। साथ ही, 15 हजार से ज्यादा युवाओं को नियुक्ति पत्र भी प्रदान किए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार अब तक 91 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नियुक्ति दे चुकी है।

टीएमसी नेता घोष को मिथुन चक्रवर्ती पर टिप्पणी करने से हाईकोर्ट ने रोका

कोलकाता (एजेंसी)। कलकत्ता हाईकोर्ट की एकल पीठ ने पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के राज्य महासचिव कुणाल घोष को अगले तीन महीनों तक सुपरस्टार और बीजेपी नेता मिथुन चक्रवर्ती के बारे में किसी भी प्रकार की सार्वजनिक टिप्पणी करने से मना कर दिया है। मानहानि याचिका में चक्रवर्ती ने घोष पर कुछ सार्वजनिक टिप्पणियां करने का आरोप लगाया था। चक्रवर्ती ने अपनी याचिका में शिकायत की कि घोष द्वारा की गई अपमानजनक टिप्पणियों से उनकी सामाजिक छवि को धूमिल किया गया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक बुधवार को जब मामला सुनवाई के लिए आया, तो मिथुन चक्रवर्ती के वकील ने कोरट में दलील दी कि घोष द्वारा सार्वजनिक रूप से की गई अपमानजनक टिप्पणियों ने न केवल चक्रवर्ती और उनके परिवार के सदस्यों की सामाजिक छवि को धूमिल किया है, बल्कि एक अभिनेता के रूप में उनकी पेशेवर संभावनाओं को भी प्रभावित किया है। इस मामले में विस्तृत सुनवाई के बाद, एकल पीठ ने घोष को इस मामले में नोटिस जारी करने का निर्देश दिया और उन्हें अगले तीन महीनों तक चक्रवर्ती के बारे में किसी भी प्रकार की सार्वजनिक टिप्पणी करने से रोक दिया। बता दें हाल ही में घोष ने मिथुन पर चिटफंड संस्थाओं के साथ संलिप्तता का आरोप लगाते हुए कई सार्वजनिक टिप्पणियां की थीं। घोष ने चक्रवर्ती पर राजनीतिक खेमा बदलने को लेकर निशाना साधा था। चक्रवर्ती ने टीएमसी के राज्य महासचिव पर उनके बेटे और पत्नी के बारे में अपमानजनक और असत्य टिप्पणियां करने का भी आरोप लगाया। शुरुआत में मिथुन चक्रवर्ती ने घोष को एक कानूनी नोटिस भेजा था। हालांकि, जब नोटिस का कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला, तो उन्होंने कलकत्ता हाईकोर्ट में उनके खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया।

वोट चोरी मामले में राहुल गांधी के हाइड्रोजन बम वाले बयान के बाद आदित्य ठाकरे ने कहा- चुनाव आयोग पर सर्जिकल स्ट्राइक करेंगे हम

मुंबई(एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने वोट चोरी का गंभीर आरोप लगाते हुए हाइड्रोजन बम जैसी जानकारी उजागर करने की बात कह रहे हैं। इसी तर्ज पर अब आदित्य ठाकरे ने कहा है कि चुनाव आयोग पर सर्जिकल स्ट्राइक वे करेंगे। एक तरफ जहां विभिन्न मंचों से कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने चुनावी पारदर्शिता और मतदान प्रक्रिया में कथित गड़बड़ियों को लेकर तीखे आरोप लगाए हैं, वहीं उन्होंने दावा दोहराया कि कांग्रेस के पास कुछ ऐसे सबूत हैं जो इस मामले में बड़ा खुलासा कर सकते हैं, उन्होंने इसे एक हाइड्रोजन बम बताया। राहुल गांधी ने महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के नतीजों और वोटर-रोल में दर्ज असामान्यताओं के संदर्भ में भी गंभीर आरोप लगाए। अब इसी तर्ज पर आदित्य ठाकरे ने भी मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में सर्जिकल स्ट्राइक करने की बात कह कर सभी का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। यहां पर आदित्य ठाकरे ने राहुल गांधी के तेवर को दोहराते हुए कहा कि वे भी महाराष्ट्र के पिछले विधानसभा चुनावों में हुई कथित गड़बड़ियों के पर्दाफाश के लिए तैयारी कर रहे हैं और चुनाव आयोग पर 'सर्जिकल स्ट्राइक' जैसी कार्रवाई करने का संकेत उन्होंने दिया। आदित्य ने बताया कि उनकी टीम संबंधित डेटा और शिकायतों का विश्लेषण करने में लगी हुई है। हालांकि उन्होंने इसका समय और विस्तृत जानकारी साझा करने से फिलहाल इनकार कर दिया और कहा कि प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सभी जरूरी बातें सभी के सामने रखेंगे।

दिल्ली हिट-एंड-रन मामला- गगनप्रीत की जमानत याचिका पर सुनवाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली बीएमडब्ल्यू हिट-एंड-रन मामले में आरोपी गगनप्रीत की जमानत याचिका पर सुनवाई पूरी हो गई है और कोर्ट ने अपना फैसला 27 सितंबर को सुनाने के लिए सुरक्षित रख लिया है। कोर्ट में सुनवाई के दौरान 0दिल्ली पुलिस ने घटना से जुड़ा सीसीटीवी फुटेज कोर्ट को सौंपा और कोर्ट ने उस सीसीटीवी फुटेज को देखा। सुनवाई के दौरान पुलिस ने तर्क दिया कि घायल को दुर्घटनास्थल के पास के स्पेशियलिटी हॉस्पिटल में ले जाने के बजाय न्यू लाइफ नर्सिंग होम में ले जाया गया, जो गंभीर मामलों के लिए उचित नहीं है। वहीं गगनप्रीत के वकील ने कहा कि उन्होंने अपने घायल पति को छोड़कर घायल व्यक्ति को अस्पताल पहुंचाया। उन्होंने यह भी बताया कि पुलिस को पीसीआर कॉल भी की गई थी। इस मामले में कोर्ट का फैसला 27 सितंबर को आएगा, जो इस केस की आगे की दिशा तय करेगा। गगनप्रीत पर गैर-इरादतन हत्या का मामला दर्ज है।

नवरात्रि उत्सव के बीच महाराष्ट्र के शांतिपूर्ण माहौल को खराब करने की कोशिश ना करे : नितेश राणे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मंत्री नितेश राणे ने नवरात्रि उत्सव के बीच राज्य के शांतिपूर्ण माहौल को खराब करने को लेकर आगाह किया है। राणे ने मुंबई के मानखुर्द इलाके में सकल हिंदू समाज द्वारा आयोजित एक दुर्गा पंडाल के दौरे में कहा कि त्यौहार के समय किसी को भी हिंदू देवी-देवताओं का अपमान करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। गौरतलब है कि मानखुर्द में देवी दुर्गा की मूर्ति को कथित तौर पर अपवित्र करने के बाद तनाव बढ़ गया, जिसके कारण दो समूहों के बीच झड़प हुई। राणे ने कहा कि राज्य में सत्तारूढ़ महायुति एक हिंदुत्ववादी सरकार है, जो हिंदू वोटों के समर्थन से चुनी गई है, और जो लोग गोल टोपी पहनते हैं, उन्होंने इस सरकार को वोट नहीं दिया। भाजपा नेता राणे ने प्रदेश का शांतिपूर्ण माहौल बिगाड़ने के खिलाफ आगाह कर कहा, आप अपने त्यौहार शांतिपूर्वक मनाएं, हम अपने त्यौहार मनाएंगे। हमारी तरफ आंख उठाकर मत देखिए। मंत्री ने कहा, हम मुंबई का माहौल बिगाड़ने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति को बर्दाश्त नहीं करने वाले है। उन्होंने कहा कि अगर किसी को त्यौहार मनाने के लिए अनुमति चाहिए, उन्हें सरकार से संपर्क करना चाहिए और तुरंत अनुमति दे दी जाएगी। राणे ने कार्यक्रम के दौरान महाआरती में भाग लिया।

आखिरकार क्या है संविधान की छठी अनुसूची... जिसके लिए जल उठा केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख

-पुलिस और अर्धसैनिक बलों ने 50 लोगों को हिरासत में लिया

नई दिल्ली(एजेंसी)। केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख को पूर्ण राज्य का दर्जा देने और संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग पर हजारों युवाओं ने लेह की सड़कों पर हंगामा, आगजनी, हिंसा और उपद्रव किया। कई जगहों पर प्रदर्शनकारियों की सुरक्षा बलों के साथ हिंसक झड़प हुई, जिसमें अब तक चार लोगों की मौत की खबर है, जबकि इन झड़पों में 80 से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। गुरुवार को पुलिस और अर्धसैनिक बलों द्वारा कर्फ्यू का सख्ती से पालन करने के दौरान करीब 50 लोगों को हिरासत में लिया गया है।

दरअसल छठी अनुसूची भारतीय संविधान की एक अहम अनुसूची है, जो पूर्वोत्तर भारत के कुछ आदिवासी क्षेत्रों को स्वायत्तता देती है, ताकि उनकी संस्कृति, जमीन और संसाधनों की रक्षा हो सके। यह अनुसूची आदिवासी बहुल पहाड़ी चार राज्यों जिसमें असम, मेघालय, त्रिपुरा, और मिजोरम में लागू है। यह जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित है जो इन समुदायों को अपनी पहचान और परंपराओं को बनाए रखने में मदद करती है। इसके तहत स्वायत्त जिला परिषदों का गठन होता है, जो स्थानीय स्तर पर भूमि, जंगल, शिक्षा और टैक्स जैसे मामलों पर कानून बना सकती हैं।

छठी अनुसूची के प्रावधान भारतीय संविधान के अनुच्छेद 244(2) और 275(1) के तहत दिए गए हैं। इस अनुसूची का मुख्य उद्देश्य इन क्षेत्रों की जनजातीय आबादी की संस्कृति, उनकी पहचान और उनके अधिकारों की रक्षा करना है। प्रावधानों के मुताबिक, प्रत्येक स्वायत्त जिले में एक परिषद होता है, इसमें करीब 30 सदस्य होते हैं। इसमें से 4 राज्यपाल या उपराज्यपाल द्वारा मनोनीत होते हैं और 26 वोटिंग के जरिए चुने जाते हैं।

स्वायत्त परिषद के क्या अधिकार?

इन परिषदों के पास कानून बनाने, भूमि, वन, नहर, जल, स्थानांतरण, ग्राम प्रशासन, विवाह और सामाजिक रीति-रिवाजों जैसे मामलों को कंट्रोल करने की शक्तियाँ होती हैं। वे भूमि राजस्व और कुछ अन्य टैक्स भी लगा सकते हैं। इसके अलावा इन परिषदों के पास कुछ न्यायिक शक्तियां भी होती हैं। छठी अनुसूची के प्रावधान इन स्वायत्त परिषदों को कुछ सिविल और आपराधिक मामलों की सुनवाई करने और उस पर फैसला सुनाने के भी शक्ति देता है।

बात दें कि लद्दाख के लोग लंबे समय से संविधान की छठी अनुसूची में शामिल करने की मांग करते रहे हैं। यह मांग इस क्षेत्र के लोगों, खासकर जनजातीय समुदायों की पहचान, उनकी भूमि और संस्कृति की सुरक्षा से जुड़ी है। दरअसल, लद्दाख एक आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ की 97 प्रतिशत से अधिक आबादी अनुसूचित जनजाति (एसटी) मानी जाती है। यहां मुख्यत-बौद्ध और मुस्लिम संस्कृति है, इस बचने की मांग होती रही है। अगर लद्दाख को छठी अनुसूची में शामिल किया जाता है, तब इन समुदायों के पारंपरिक रीति-रिवाजों, सामाजिक प्रथाओं और सामाजिक चलन समेत उनकी ऐतिहासिक विरासत को संरक्षण मिल सकेगा।

लेकिन लद्दाख के लोगों को अब यह डर भी है कि केंद्र शासित प्रदेश बनने के बाद, बाहरी लोग उनकी जमीनें खरीद सकते हैं और उनके संसाधनों को हाथिया सकते हैं। इसके कारण छठी अनुसूची लागू होने से उन्हें अपनी भूमि और संसाधनों पर नियंत्रण मिल जाएगा, और बाहरी लोगों द्वारा उनके शोषण नहीं हो सकेगा। लद्दाख के लोगों की यह भी मांग है कि सरकारी नौकरियों में स्थानीय युवाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित किया जाए। छठी अनुसूची के तहत स्वायत्त परिषदें रोजगार और शिक्षा के मामलों पर नियम बना सकेंगी जिससे स्थानीय लोगों के हितों की रक्षा हो सकेगी।

जयशंकर ने ग्लोबल साउथ की आवाज मजबूत करने के साथ ही वैश्विक चुनौतियों के समाधान की रखी रणनीति

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने ग्लोबल साउथ देशों को अपनी क्षमताओं का बेहतर उपयोग करने और उभरती वैश्विक चुनौतियों का समाधान सामूहिक रूप से खोजने की रणनीति पेश की। जयशंकर ने कहा कि ग्लोबल साउथ देशों को राजनीति, कूटनीति, विकास और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में मिलकर आगे बढ़ना चाहिए। बैठक में 18 देशों ने हिस्सा लिया, इसमें सिंगापुर, इंडोनेशिया, नाइजीरिया, क्यूबा, चाड, जमैका, वियतनाम, मॉरीशस और मोरक्को जैसे देश शामिल थे। भारत की यह पहल 'ग्लोबल साउथ की आवाज' को मजबूत करने की उसकी रणनीति का हिस्सा है। मालदीव के विदेश मंत्री ने कहा कि ग्लोबल साउथ की असली ताकत उसकी एकता और सामूहिक कार्रवाई में है। उन्होंने समावेशी और टिकाऊ विकास पथ को आगे बढ़ाने के लिए साझेदारी की प्रतिबद्धता जताई। जयशंकर ने सुझाव दिया कि ये देश एक-दूसरे की उपलब्धियों और अनुभवों से लाभ उठा सकते हैं। उन्होंने वैक्सीन उत्पादन, डिजिटल क्षमताओं, शिक्षा, कृषि पद्धतियों और लघु एवं मध्यम उद्योगों जैसे क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएं गिनाईं। भविष्य की दिशा बताते हुए विदेश मंत्री ने कहा कि इन देशों को उभरती प्रौद्योगिकियों, विशेषकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के अवसरों पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र और बहुपक्षीय मंचों में सुधार के लिए मिलकर प्रयास करने का भी आह्वान किया। जयशंकर ने कहा कि मौजूदा मंचों का उपयोग कर देशों के बीच एकजुटता बनाई जा सकती है और यही ग्लोबल साउथ की सामूहिक ताकत को वैश्विक स्तर पर स्थापित करेगा।

असम राइफल्स पर हमला करने वाला गिरफ्तार, भारी संख्या में हथियार बरामद

नई दिल्ली (एजेंसी)। मणिपुर में 19 सितंबर को असम राइफल्स के काफिले पर मणिपुर के प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के आतंकवादियों द्वारा ही फायरिंग की गई थी। मामले में खोमद्रम ओजित सिंह उर्फ कीलाल (47) को गिरफ्तार किया है, जो हमला करने वालों में शामिल था। हमले के दौरान इसने जर्मनी राइफल हेकलर एंड कोच से और इसके तीन से चार साथियों ने अमेरिकी राइफल एम-16 और एके-47 से गोलियां बरसाई थीं।

मणिपुर पुलिस के डीजीपी ने बताया कि आरोपी खोमद्रम को 23-24 सितंबर की रात गिरफ्तार किया था। इस बारे में एक खुफिया सूचना मिली थी। जिस पर इंफाल पश्चिम पुलिस और 33-एआर समेत अन्य सुरक्षाबलों की अलग-अलग टीमों ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 24 सितंबर की रात एक बजे से विशेष अभियान चलाया, जिसमें इंफाल पश्चिम के लेइकाई इलाके का रहने वाला यह मुख्य आरोपी पकड़ा गया। पूछताछ में इसने अपना गुनाह कबूल कर बताया कि इसने अपने कुछ अन्य साथियों के साथ मिलकर 19 सितंबर को मणिपुर के नांबोल में असम राइफल्स के काफिले पर हमला किया था। पुलिस को उसने यह भी कि बताया कि वह पीएलए का मेंबर है और जमानत पर जेल से बाहर आया है। वह अभी भी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के लिए काम करता है। इससे पहले उसे 22 अप्रैल 2007 को भी गिरफ्तार किया गया था। हमला करने के बाद वह अन्य हमलावरों के साथ भाग गया था। जहां उन्होंने अपने हथियार और गोला-बारूद छिपाए।

आंध्र में नायडू सरकार के खिलाफ पूर्व सीएम जगन मोहन रेड्डी ने 'ऑल आउट वॉर' का ऐलान किया

अमरावती (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी ने अपनी पार्टी वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के नेताओं और कार्यकर्ताओं से तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार के खिलाफ 'ऑल आउट वॉर' यानी पूरी तरह से जंग के लिए तैयार रहने को कहा है। उन्होंने नायडू सरकार की कथित गलत नीतियों, भ्रष्टाचार और कानून व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति को उजागर करने का आव्हान किया है। उन्होंने ये घोषणा गुंटूर जिले के ताडेपल्ली में कार्यकारी कमेटी की बैठक के दौरान की गई, जिसमें पार्टी के विधायक, एमएलसी और अन्य प्रमुख नेता शामिल थे। पूर्व सीएम रेड्डी ने दावा किया कि गठबंधन सरकार के 15 महीनों के शासन में ही लोगों में काफी गुस्सा है क्योंकि वे भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद और कानून व्यवस्था की बिगड़ी स्थिति से परेशान हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार अपने सुपर सिक्स वादों को पूरा करने में विफल रही है, जिसमें बेरोजगारी भत्ता, स्त्री निधि और 50 वर्ष से कम उम्र की महिलाओं को पेंशन देने जैसे प्रमुख वादे शामिल थे। उन्होंने कहा कि जब विपक्षी पार्टियां सरकार की गलतियों को उजागर करती हैं, तब उन्हें परेशान करते है। उन्होंने इसतरह के मामलों को रिकॉर्ड करने के लिए डिजिटल बुक लांच करने की बात कहकर चेतावनी दी कि आने वाले दिनों में इसका हिसाब लिया जाएगा।

जगन मोहन रेड्डी ने आरोप लगाया कि सरकार यूरिया की कमी को दूर करने में विफल रही है और सत्तारूढ़ पार्टी के नेता बिचौलियों के साथ मिलकर प्रीमियम पर यूरिया बेच रहे हैं। उन्होंने सरकार पर सार्वजनिक स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने और मेडिकल कॉलेजों का निजीकरण करने की योजना बनाने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भूमि, शराब, बजरी और क्वार्ट्ज जैसे क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार हो रहा है, जिससे सरकारी खजाने को नुकसान हो रहा है और यह पैसा सत्ता में बैठे लोगों की जेब में जा रहा है।

टीडीपी का पलटवार

वाईएसआरसीपी के इन आरोपों पर पलटवार कर टीडीपी के वरिष्ठ नेता और राज्य के ऊर्जा मंत्री गोटीपति रवि कुमार ने रेड्डी के ऐलान का मज़ाक उड़ाया। उन्होंने कहा कि जगन मोहन रेड्डी भ्रष्टाचार के आरोपों में खुद 16 महीने जेल में रह चुके हैं, और उनका भ्रष्टाचार पर बात करना हास्यास्पद है। रवि कुमार ने कटाक्ष करते हुए कहा कि ऐसा लगता है कि जगन ने यह बैठक अपनी सीबीआई मामले में जेल से रिहाई के 12 साल पूरे होने का जश्न मनाने के लिए बुलाई है।

कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने माना... मैंच के बाद खिलाड़ियों को हाथ मिलाना चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने भारत-पाकिस्तान के बीच खेले गए टी20 एशिया कप मैच के बाद पैदा हुए विवाद पर बयान दिया। उन्होंने कहा कि खेल की भावना को राजनीति और सैन्य संघर्षों से दूर रखना चाहिए। दरअसल, भारत और पाकिस्तान के बीच हुए मुकाबले के बाद भारतीय कप्तान सूर्यकुमार यादव और बल्लेबाज शिवम दुबे बिना हाथ मिलाए मैदान से बाहर चले गए थे, जिस पर बहस छिड़ गई।

कांग्रेस नेता थरूर ने कहा, ÷मेरा व्यक्तिगत मानना है कि अगर हमें पाकिस्तान से इतनी आपत्ति है, तब हमें उनसे खेलना ही नहीं चाहिए था। लेकिन, एक बार खेलने का निर्णय हो गया, तब फिर खेल की भावना के साथ खेलकर खिलाड़ियों से हाथ मिलाना चाहिए था।

थरुर ने 1999 विश्वकप की याद दिलाकर कहा कि जब भारत और पाकिस्तान का मुकाबला कारगिल युद्ध की पृष्ठभूमि में हुआ था। उस दौरान दोनों देशों के सैनिक मोर्चे पर लड़ाई लड़ रहे थे, माहौल तनावपूर्ण था, लेकिन मैनचेस्टर में हुए मैच के अंत में खिलाड़ियों ने आपस में हाथ मिलाकर खेल भावना का परिचय दिया था।

थरूर ने कहा कि भारत और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मुकाबले हमेशा खेल से आगे बढ़कर राष्ट्रीय भावनाओं और राजनीतिक तनावों का प्रतीक बन जाते हैं। लेकिन खिलाड़ियों का दायित्व खेल भावना को निभाने का है।

कांग्रेस सांसद ने कहा कि खेल को राजनीति और राज्य से अलग रखना चाहिए। उन्होंने कहा, हाथ मिलाने से इंकार करना साहस नहीं बल्कि असुरक्षा की भावना का प्रतीक है। सच्ची ताकत प्रतिद्वंद्वी को सम्मान देने में है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि आतंकवाद से लड़ाई को पूरे पाकिस्तान से जोड़ना खतरनाक प्रवृत्ति है। उन्होंने कहा, ÷हमें गैर-राज्य कारकों और पाकिस्तान की आम जनता में फर्क करना होगा। पूरे मुल्क को दुश्मन मान लेना न सिर्फ बौद्धिक भूल है, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी हानिकारक है।÷थरूर के अनुसार, भारत को पाकिस्तान की जनता में शांति और संयम की ताकतों को बढ़ावा देने वाली नीति अपनानी चाहिए, ताकि कट्टरपंथी विचारधाराओं को कमजोर किया जा सके। उन्होंने कहा कि भारत एक आत्मविश्वासी लोकतंत्र और उभरती वैश्विक शक्ति है, और उसके आचरण में यही आत्मविश्वास झलकना चाहिए।

बेंगलुरु का ट्रैफिक संकट गंभीर सरकार के साथ मिलकर स्थाई समाधान खोजेंगे: अजीम प्रेमजी

बेंगलुरु (एजेंसी)। आईटी राजधानी बेंगलुरु के आउटर रिंग रोड पर बढ़ते ट्रैफिक जाम को कम करने के लिए कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने आईटी कंपनी विप्रो से सहयोग की अपील की थी। उन्होंने प्रस्ताव रखा था कि यदि सरजापुर कैंपस का एक हिस्सा सीमित समय के लिए आम लोगों के आवागमन के लिए खोल दिया जाए तो ओआरआर पर ट्रैफिक का दबाव लगभग 30 प्रतिशत तक घट सकता है। उन्होंने इसी के साथ कहा कि बेंगलुरु का ट्रैफिक संकट गंभीर है और वे सरकार के साथ मिलकर इसका स्थाई समाधान खोजने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया की इस आशय की अपील पर विप्रो के फाउंडर चेयरमैन अजीम प्रेमजी ने इंकार करते हुए जवाब दिया है। उन्होंने अपने जवाब में साफ किया कि सरजापुर कैंपस स्पेशल इकोनॉमिक ज़ोन (सेज) के अंतर्गत आता है और यहां ग्लोबल क्लाइंट्स की सर्विस दी जाती है। ऐसे में पब्लिक मूवमेंट की अनुमति न तो कानूनी रूप से संभव है और न ही यह सुरक्षा दृष्टि से ही सही है। दरअसल अजीम प्रेमजी ने अपने जवाब में कहा है, कि सरजापुर कैंपस निजी संपत्ति है और इसे पब्लिक आवागमन के लिए इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। सेज नियम और कॉन्ट्रैक्चुअल दायित्व सख्त सुरक्षा व्यवस्था की मांग करते हैं। यह कदम किसी भी रूप में दीर्घकालिक समाधान नहीं साबित होगा। हालांकि, प्रेमजी ने बेंगलुरु के ट्रैफिक संकट को गंभीर मानते हुए सरकार के साथ मिलकर स्थायी समाधान खोजने की प्रतिबद्धता जताई। उन्होंने सुझाव दिया कि डेटा-ड्रिवन और कोलैबोरेटिव स्टडी कराई जाए, जिससे शॉर्ट, मीडियम और लॉन्ग टर्म समाधान निकाले जा सकें।

ई-मेल ने बाबा और उसकी सहयोगी 3 महिलाओं की करतूतों को किया उजागर

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली(ईएमएस)। श्री शारदा इंसटीट्यूट ऑफ इंडियन मैनेजमेंट से जुड़े स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती की करतूतें सामने आ गई हैं। परेशान छात्राओं ने जब यौन उत्पीड़न की शिकायतें तो बाबा एक्सपोस हो गया। दरअसल एक वायू सेना के ग्रुप कमांडर का ई-मेल ने पूरे मामले का खुलासा कर दिया। इसमें बाबा की 3 सहयोगी महिलाओं की भी मिलीभगत सामने आई है। यह सनसनीखेज मामला तब सामने आया जब एक पूर्व छात्रा का पत्र और भारतीय वायुसेना के एक ग्रुप कैप्टन का ईमेल दोनों ही संस्थान को कुछ दिनों के अंदर प्राप्त हुए। इन शिकायतों ने शारदा पीठ और संस्थान की गवर्निंग काउंसिल को चौंका दिया। पूर्व छात्रा की चिट्ठी और ग्रुप कैप्टन के ईमेल ने बाबा और उनके तीन महिला सहयोगियों की साजिश का पर्दाफाश कर दिया।

खुद को आध्यात्मिक गुरु बताने वाला यह बाबा बड़ा कांडी निकला। एक या दो नहीं, बल्कि दर्जनभर से ज्यादा छात्राओं ने चैतन्यानंद पर गंभीर आरोप लगाए हैं। आरोपी बाबा लंबे समय से छात्राओं के साथ खिलवाड़ कर रहा था। लेकिन कहते हैं न कि हर पापी के पाप का घड़ा एक दिन जरूर फूटता है। चैतन्यानंद के साथ भी कुछ वैसा ही हुआ। काली दुनिया का राज जबसे सामने आया है, बाबा के वीवीआईपी खेल का पर्दाफाश हुआ।शारदा पीठ की एक पूर्व छात्रा (जिसने इसी साल संस्थान से पढ़ाई पूरी की थी) ने 28 जुलाई को संस्थान के प्रशासन को पत्र लिखा। यह पत्र 31 जुलाई को रिसीव हुआ। इसमें छात्रा ने आरोप लगाया कि स्वामी छात्राओं से छेड़छाड़ और यौन उत्पीड़न कर रहे हैं। इसके बाद, 1 अगस्त को भारतीय वायुसेना के एक ग्रुप कैप्टन का ईमेल आया। उन्होंने बताया कि उन्हें भी एयरफोर्स परिवारों की कई छात्राओं से यौन शोषण की शिकायतें मिली हैं। शिकायतों के बाद 3 अगस्त को संस्थान की गवर्निंग काउंसिल ने 30 से ज्यादा छात्राओं के साथ वर्चुअल मीटिंग की। पुलिस अब तक 32 छात्राओं के बयान दर्ज कर चुकी है। इनमें ज्यादातर छात्राएं गरीब तबके या फिर फौजी परिवारों से ताल्लुक रखती हैं। आरोप है कि चैतन्यानंद और उनकी महिला सहयोगियों ने छात्राओं के एजुकेशन से जुड़े असली सर्टिफिकेट अपने कब्जे में ले लिए। इस वजह से विरोध करने वाली छात्राओं की पढ़ाई और करियर खतरे में पड़ गया।

मार्च 2025 में स्वामी ने नई कार की पूजा के लिए कुछ छात्राओं को ऋषिकेश ले गया था। आरोप है कि वापसी के दौरान उन्होंने लड़कियों पर अश्लील कमेंट किए। लौटने के बाद महिला स्टाफ ने छात्रा को स्वामी के साथ हुए चैट डिलीट करने के लिए मजबूर किया। छात्रा ने यह भी आरोप लगाया कि होली के बाद स्वामी ने उसे ऑफिस बुलाया और 'बेबी' कहकर संबोधित किया। इसके अलावा मोबाइल से वीडियो बनाकर व्हाट्सएप पर भेजा। जून 2025 में 35 लड़कियों को एक कमर्शियल यात्रा पर ऋषिकेश ले जाया गया। वहां, स्वामी रात को छात्राओं को बुलाते थे। जब छात्रा ने विरोध किया तो उसे परीक्षा में बैठने से रोक दिया गया और उसके सारे असली सर्टिफिकेट रख लिए। एफआईआर और छात्राओं के आरोपों के अनुसार, स्वामी चैतन्यानंद ने मठ के कमरे में वीआईपी और वीवीआईपी लोगों के साथ अपनी फर्जी तस्वीरें लगाई थीं। इन फर्जी फोटो का मकसद संस्थान और मठ में अपना रुतबा कायम रखना और छात्राओं व स्टाफ पर दबाव बनाना था। आरोपी बाबा इसके दम पर अपनी ठसक बनाने में कामयाब भी रहा।

फरार बाबा के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर जारी

बाबा स्वामी चैतन्यनंद सरस्वती के खिलाफ लुकआउट सर्कुलर भी जारी कर दिया गया है। डिप्टि कमिश्नर ऑफ पुलिस (दक्षिण-पश्चिम) अमित गोयल ने कहा, देश से भागने के किसी भी प्रयास को रोकने के लिए उसके खिलाफ लुकआउट सर्कुलर जारी किया गया है। पुलिस द्वारा स्वामी के मोबाइल, सीसीटीवी फुटेज और डिजिटल डिवाइस जब्त कर लिए गए हैं। पुलिस यह भी कोशिश कर रही है कि जिन अश्लील चैट्स को उसने छात्राओं से डिलीट करवाया था, उन्हें फॉरेंसिक तरीके से रिकवर किया जाए। यह पहला मौका नहीं है जब उस पर आरोप लगे हैं। साल 2006, 2009 और 2016 में भी उस पर यौन शोषण और धोखाधड़ी के केस दर्ज हुए थे। स्वामी पर 2009 में दिल्ली के डिफेंस कॉलोनी थाने में धोखाधड़ी का केस चला था। इसके अलावा, साल 2016 में एक छात्रा ने वसंत कुंज थाने में उसके खिलाफ छेड़छाड़ की शिकायत दर्ज कराई थी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार भी किया, लेकिन बाद में वह जमानत पर बाहर आ गया और संस्थान में काम करता रहा। उसके खिलाफ इस साल तीन और नए मामले दर्ज हुए हैं - 17 छात्राओं का यौन उत्पीड़न, फर्जी नंबर प्लेट का इस्तेमाल और मठ से धोखाधड़ी।

मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंसेज में बोन ग्राफ्टिंग की सुविधा शुरू

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली। मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंसेज के पेरिओडोंटोलॉजी विभाग में मरीजों के लिए सेंटल टिश्यू बैंक की सुविधा शुरू हो गई। मरीजों को अब बोन ग्राफ्टिंग के लिए इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा। मेक इन इंडिया के तहत इंस्टीट्यूट में बोन ग्राफ्टिंग हो सकेगी। मंगलवार को दिल्ली सरकार के स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने इस सुविधा का शुभारंभ किया। साथ ही दिल्ली डेंटल काउंसिल के नए अत्याधुनिक कार्यालय का भी उद्घाटन किया। इंस्टीट्यूट की निदेशक डॉ. अरुणदीप कौर लांबा ने बताया कि हड्डी रोग विभाग से बोन ग्राफ्टिंग के लिए बोन ली जाती है। यह ऐसी बोन होती है जो किसी तरह के रिप्लेसमेंट सर्जरी के दौरान इस्तेमाल नहीं हो पाती है उसको ट्रीट कर फिर ग्राफ्ट तैयार किया जाता है। मरीज में जहां पर बोन की कमी होती है उसे भरकर उपचार करते हैं। अभी मुंबई के एक संस्थान में बोन ग्राफ्ट तैयार होते हैं। अंतरराष्ट्रीय संस्थान से इंपोर्ट करना पड़ता था। उन्होंने कहा कि अब मेक इन इंडिया के तहत इंस्टीट्यूट में बोन ग्राफ्टिंग की जा सकेगी। गामा रेडिएशन से स्टेराइल किया जाता है ताकि किसी को संक्रमण न हो। ग्राफ्ट को पांच साल तक सुरक्षित रखा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय मानकों के आधार पर सेंट्रल टिश्यू बैंक को तैयार किया गया। सेंट्रल टिश्यू बैंक की प्रमुख अन्वेषक डॉ. श्रुति टंडन ने बताया कि दांत के आसपास हड्डी की कमी होने, दांत लगाने के लिए पर्याप्त हड्डी न होने, जबड़े को नुकसान पहुंचने की स्थिति में बोन ग्राफ्टिंग की जरूरत पड़ती है। अमेरिका और जर्मनी से इसको इंपोर्ट किया जाता है। अब यह सुविधा इंस्टीट्यूट में ही उपलब्ध हो गई है। बोन ग्राफ्टिंग के लिए मलेशिया में खासतौर पर प्रशिक्षण भी मिला है। इस प्रक्रिया में एक से डेढ़ घंटे का समय लगता है। दो हफ्ते बाद टांके कटते हैं। इस सुविधा के लिए वर्ष 2016 से काम किया जा रहा था। वहीं इंस्टीट्यूट में दिल्ली डेंटल काउंसिल के कार्यालय का भी शुभारंभ हो गया है। काउंसिल के रजिस्ट्रार डॉ. ज्ञानेंद्र कुमार ने बताया कि पहले विकास भवन में काउंसिल का कार्यालय संचालित हो रहा था। अब इंस्टीट्यूट में पंजीकरण, नवीनीकरण सहित कई दूसरी सुविधाएं दंत चिकित्सकों को उपलब्ध हो सकेगी। यह व्यवस्था पूरी तरह से डिजिटल और कैशलेस होगी। मौलाना आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ डेंटल साइंसेज में पत्रकारों से बातचीत में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. पंकज कुमार सिंह ने अस्पतालों में चिकित्सा अधीक्षकों को सख्त चेतावनी देते हुए कहा कि दवा की कमी को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। अगर किसी अस्पताल में दवा की कमी है तो वह मेरे फोन नंबर और ईमेल कर सूचित कर सकता है। अगर कोई चिकित्सा अधीक्षक लापरवाही करेगा तो उस पर कार्रवाई करेंगे। अगर किसी अस्पताल में 95 फीसदी से कम दवा मिलती है तो उस पर भी कार्रवाई होगी। इस दौरान एक डॉक्टर ने मंत्री से पूछ कि अस्पताल की बीमारियों को इंश्योरेंस में क्यों नहीं रखा जाता तो उन्होंने कहा कि

पार्क की दीवार और पेड़ों की अवैध कटाई के मामले में याचिका निस्तारित

नई दिल्ली। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने पार्क की दीवार को नुकसान, पेड़ों की अवैध कटाई और निर्माण कार्यों से फैले प्रदूषण के खिलाफ दायर एक याचिका को निस्तारित कर दिया। यह मामला 25 जनवरी, 2024 को दिए गए निर्देशों के पालन में देरी के कारण पुनः सूचीबद्ध किया गया था। अदालत के अनुसार, दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) ने पर्यावरण क्षतिपूर्ति के रूप में 3,00,000 रुपये दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) को जमा कर दिए हैं। लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) ने 10,000 रुपये अदालत को और 1,00,000 रुपये एनजीटी रजिस्ट्रार के पास जमा किए, जिसे अब डीपीसीसी को हस्तांतरित करने का निर्देश दिया गया है। वहीं, दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने 10,000 रुपये का जुर्माना अभी तक जमा नहीं किया है, लेकिन उनके वकील ने एक महीने के भीतर इसे जमा करने का आश्वासन दिया है। डीडीए ने बताया कि क्षतिग्रस्त पार्क की दीवार को फिर से बनाया गया है और पार्क की बहाली के साथ-साथ पौधरोपण का कार्य प्रगति पर है। डीपीसीसी ने अदालत को बताया कि आवेदक को 50,000 रुपये की लागत राशि का भुगतान कर दिया गया है।

नेशनल म्यूजियम से डांसिंग गर्ल की रेप्लिका चोरी

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में स्थित नेशनल म्यूजियम से डांसिंग गर्ल की रेप्लिका की चोरी होने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। नई दिल्ली जिले की कर्तव्य पथ थाना पुलिस ने इस मामले में हरियाणा के सोनीपत स्थित निजी यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर को पकड़ा है। नई दिल्ली जिला पुलिस अधिकारियों का कहना है कि प्रोफेसर को बाद में छोड़ दिया गया। उसके कब्जे से रेप्लिका बरामद कर ली गई है। हालांकि प्रोफेसर ने चोरी करने के आरोपों से इन्कार किया है। नई दिल्ली जिला पुलिस अधिकारियों के अनुसार शनिवार को चोरी की घटना के बाद तैनात सीआईएसएफ के जवान ने तलाशी लेते हुए आरोपी प्रोफेसर को पकड़ लिया और कर्तव्य पथ पुलिस थाने में पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि शनिवार दोपहर करीब 2.40 बजे राष्ट्रीय संग्रहालय से डांसिंग गर्ल की रेप्लिका चोरी होने के बारे पता लगा।

फर्जी वीजा रैकेट का भंडाफोड़, पंजाब का एजेंट गिरफ्तार

नई दिल्ली। आईजीआई एयरपोर्ट थाना पुलिस ने फर्जी वीजा रैकेट का भंडाफोड़ करते हुए पंजाब के एजेंट को गिरफ्तार किया है। गिरोह के सदस्य यूके जाने के इच्छुक लोगों के लिए नकली वीजा उपलब्ध कराते थे। आईजीआई एयरपोर्ट पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि मामला तब सामने आया जब पंजाब के कपूरथला की युवती को इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर इमिग्रेशन जांच के दौरान लंदन यात्रा के लिए रोका गया। जांच में उसके पासपोर्ट पर चिपकाया गया यूके वीजा फर्जी पाया गया। इस पर भारतीय न्याय संहिता और पासपोर्ट अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया और युवती अमरजीत कौर को हिरासत में लिया गया। पुलिस उपायुक्त ने बताया कि पूछताछ के दौरान युवती ने बताया कि उसका भाई लंदन में रहता है और उसने आईईएलटीएस परीक्षा में असफल होने के बाद पंजाब निवासी एजेंट सरवन सिंह उर्फ कोहली को 5 लाख रुपये दिए थे। पुलिस के अनुसार, सरवन और उसके सहयोगियों ने महिला को कुल 22 लाख में यूके वीजा और यात्रा की व्यवस्था कराने का झांसा दिया था। तकनीकी निगरानी और स्थानीय खुफिया इनपुट के आधार पर आईजीआई एयरपोर्ट थाने की एक टीम ने कपूरथला से आरोपी को उसके ठिकाने से गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने बताया कि उसके सहयोगियों की तलाश की जा रही है। पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि सितंबर माह में अब तक फर्जी वीजा, पासपोर्ट, धोखाधड़ी और जालसाजी से संबंधित मामलों में 23 लोगों के खिलाफ केस दर्ज किए गए हैं।

खेलते-खेलते तालाब में डूबने से भाई-बहन की गई जान, काई पर पैर फिसलते ही गहरे पानी में समा गए दोनों

दिल्ली। बाबा हरिदास नगर के झाड़ौदा कलां गांव में तालाब में डूबने से रुद्राक्ष (8) और बड़ी आराध्या (10) की मौत हो गई। सोमवार शाम दोनों खेलते हुए गायब हो गए थे। देर रात तलाशी अभियान के दौरान पुलिस ने दोनों बच्चों का शव तालाब में तैरते हुआ देखा। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का खुलासा होगा। गीतांजलि कॉलोनी निवासी दीपक पांडेय कापसहेड़ा स्थित फैक्टरी में काम करते हैं। उनकी पत्नी आशा कर्चर है। परिवार वालों ने बताया कि कुछ दिनों इलाके में जल जमाव होने की वजह से दीपक को अपना घर छोड़ना पड़ा। वह कॉलोनी के पास झाड़ौदा कलां गांव में अपने एक रिश्तेदार के घर में रह रहे थे। परिवार वालों ने पुलिस को बताया कि सोमवार शाम करीब चार बजे उनके दोनों बच्चे रुद्राक्ष और आराध्या घर के बाहर खेल रहे थे। कुछ देर बाद दोनों गायब हो गए। परिवार वालों ने उनकी काफी तलाश की। यहां तक की गांव वालों ने माइक से उदघोषणा करवाई, लेकिन बच्चों का कोई सुराग नहीं मिला। शिकायत मिलने के बाद पुलिस टीम ने बच्चों की तलाश शुरू कर दी। सीसीटीवी कैमरे की जांच में बच्चों को मंदिर की तरफ जाते हुए देखा गया। पुलिस टीम मंदिर परिसर में मौजूद तालाब के पास गई। जहां पुलिस ने बच्चों के शव को पानी के ऊपर तैरता हुआ देखा। छानबीन में पता चला कि तालाब की सीढ़ियों पर काई जमी हुई थी। आशंका है कि पैर फिसलने से दोनों बच्चे पांच फीट गहरे पानी में चले गए। जिसकी वजह से हादसा हुआ।

NAME CHANGE
I, Poopandar Singh S/o- Arjun Singh R/o C-75, Chander nagar Janakpuri B-1, Delhi 110058 have changed my name from Poopandar Singh to Bhupinder Singh for all future purposes.

NAME CHANGE
I, BIDHYA RAI is legally mother of No. 13768885L Rank HAV, Name-PAWAN RAI is presently residing VILL-UPPER DUNGRA CHI, SO-PANI, PO-KALIMPONG TEH-KALIMPONG, DIST-DARJEELING , WEST BENGAL have changed my name from BIDHYA RAI to VIDYA RAI for all future purposes. Vide affidavit No.IN-DL62087865561819X dated 25/09/2025 before Notary Public, New Delhi.

NAME CHANGE
I, M JAGATHEESWARI Spouse of Army No. 15500574F, Rank HAV Name MURUGAN G Unit-3IDSR, presently residing of VILL- SANIP-POONDI, PO: SANIPPOONDI TEH-KILPENNATHUR, DIST-TIRUVAN-NAMALAI, STATE- TAMIL NADU, PIN-606755 have changed my name from M JAGATHEESWARI to JAGATHEESWARI M for all future purposes. And in my husband service record my date of birth wrongly mentioned is 06 July 1993 instead of 06/ June 1993. Vide Affidavit No. IN-DL62122831429237X, dated 25/09/2025 before Notary Public New Delhi.

NAME CHANGE
I, VINAYAK is legally father of No. 2803064K Rank- CHM Name CHIKANE MUKUND VINAYAK, R/O VILL- A 02, GAJGAMINI APT, MANVELPADA, POST-VIRAR EAST. TEH- VASAI, DIST-PALGHAR, STATE-MAHARASHTRA PIN-401305, have changed my name from VINAYAK to VINAYAK RAMCHANDRA CHIKANE and date of birth from 29/05/1960 to 23/09/1960 for all future purposes. Vide affidavit dated 23.09.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
Mohan Ram Arya S/O Nanad Ram H.o No Quarter No 1156 Type -2 Sector -7 R k Puram Delhi- 110022 , I have changed my name to MOHAN RAM Permanently

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, HARSH KUMAR S/O SUSHIL KUMAR R/O K-23B, STREET NO 4, WAZIRABAD VILLAGE, BURADI, NORTH DELHI, DELHI-110084 declare that name of my father has been wrongly written as SUSHIL KUMAR SAXENA in my Driving Licence-DL1 20220016583. The actual name of my father is SUSHIL KUMAR, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I SANDEEP KUMAR S/O TEJ PAL SINGH R/O House No. A/39, Gali No. 3, Soniya Nagar, Bahaita Hajipur, Loni Dehat, Ghaziabad, Uttar Pradesh-201102, have changed the name of my minor son SAKSHAM aged 8 years and he shall hereafter be known as LAXDEEP.

NAME CHANGE
I,MOHAMMAD SALMAN KHAN S/O SALEEM KHAN Residing at H NO-A-132 NEW SEELAMPUR NORTH EAST DELHI 110053 have changed my name to MOHD SALMAN KHAN for all future purpose.

NAME CHANGE
I, hitherto known as Km Anjum Aara alias ANJUM D/O Zamir Hasan W/O AFROZ AHMED KHAN R/O L-65 MCD Flats, Sunder Nagri, Mandoli, Mandoli Saboli, Seema Puri, North East Delhi, Delhi-110093 have changed my name and shall hereafter be known as ANJUM AARA.

NAME CHANGE
I hitherto known as Vishal alias Vishal Kumar alias Vishal Kanojia S/O Sham Lal, R/O D-30, New Police Line Kingsway Camp Delhi, Dr.Mukerjee Nagar S.O, North West Delhi, Delhi -110009,have changed my name and shall hereafter be known as VISHAL KANOJIA.

NAME CHANGE
I, DESAI HIRABAI is legally mother of No. JC 462767H Rank-NB/SUB, Name-DESAI BRAMHADEV MARUTI R/O VILL-SHIRALE TARF MALKAPUR, POST-SHAHUWADI, TEH-SHAHUWADI, DIST- KOLHAPUR, STATE-MAHARASHTRA, PIN- 416215,have changed my name from DESAI HIRABAI to HIRABAI MARUTI DESAI and date of birth from 26/07/1958 t? 01/01/1958 for all future purposes. Vide affidavit dated 23.09.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
I, RANI is legally Wife of No. JC 462767H Rank-NB/SUB Name DESAI BRAMHADEV MARUTI, R/O VILL SHIRALE TARF MALKAPUR, POST SHAHUWADI, TEH SHAHUWADI, DIST- KOLHAPUR, STATE-MAHARASHTRA, PIN-416215,have changed my name from RANI to RANI BRAMHADEV DESAI for all future purposes. Vide affidavit dated 23.09.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
I, DESAI MARUTI is legally father of No. JC 462767H Rank-NB/SUB Name DESAI BRAMHADEV MARUTI, R/O VILL SHIRALE TARE MALKAPUR, POST-SHAHUWADI, TEH-SHAHUWADI, DIST-KOLHAPUR, STATE-MAHARASHTRA, PIN 416215,have changed my name from DESAI MARUTI to MARUTI NAMDEV DESAI and date of birth from 26/07/1957 to 01/01/1949 for all future purposes. Vide affidavit dated 23.09.2025 before Public Notary Delhi.

NAME CHANGE
I, SMT ASHA YADAV wife of No. 15434463F HAV GANESH PRASAD YADAV residing at VILL-TALKESHWAR PUR, PO-SALWAHI, TEHSIL-RAMANUJGANJ, DIST-BALRAMPUR, CHHATTISGARH-497225 have changed my name from SMT ASHA YADAV to ASHA YADAV for all future purposes vide Affidavit dated 23/09/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, Vandana Pathak, D/o Mahesh Chandra, R/o H. No. 24/3 & 25/3, Gali No. 2, Munirka Kunj, Deenpur, Najafgarh, New Delhi-110043, declare that name of mine and my father has been written as Bandana and Mahesh Chand Pathak in my 10th & 12th marksheet & certificate. The actual name of mine and my father are Vandana Pathak and Mahesh Chandra (as par Aadhar Card), which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, VINAY KUMAR S/O HARIOM SINGH R/O HOUSE NO. 56, REWADI KHEDA, MURADNAGAR, MURADNAGAR, REWADI KHEDA, PO: SULTANPUR, DIST: GHAZIBAD-Uttar Pradesh 201206 have changed the name of my minor daughter Mishti Kasana aged 10 years and she shall hereafter be known as Anaya Kasana.

NAME CHANGE
I, Ghyan chandra S/O PATMESHWARI,R/O HOUSE NO-175-A/1, GROUND FLOOR, BLOCK-D5, KUNWAR SINGH NAGAR, Nangloi, PO: Nangloi, DIST: West Delhi, Delhi -110041, have changed the name of my minor son Rupanjali aged 7 years and she shall hereafter be known as Kuldeep.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, MAHAVIR SINGH S/O MUL CHAND SINGH R/O G-214, SAVITRI PUBLIC SCHOOL, SANGAM VIHAR, MEHRAULI, DIST-SOUTH DELHI, DELHI-110062, declare that name of mine has been wrongly written as MAHAVEER in my minor son GAURAV KUSHWAHA aged 16 years in his 10th class Educational documents. The actual name of mine is MAHAVIR SINGH, which may be amended accordingly.

Name Change
It is for general information that I, NEKI RAM LAMBA S/O JAG RAM LAMBA R/O FLAT NO-181, FIRST FLOOR, BLOCK-D, SECTOR-8 METRO STATION, SECTOR-8, DWARKA, SOUTH WEST DELHI, DELHI-110077, declare that name of mine and my father has been wrongly written as NEKI RAM and JAG RAM in my service record. The actual name of mine and my father are NEKI RAM LAMBA and JAG RAM LAMBA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I,Busra Begam w/o touphik ahmed R/o kareem baksh jalalabad (rural)shamli jalalabad utter pradesh,247772 have changed my name to BUSHRA BEGAM

NAME CHANGE
I hitherto known as ANKITA GOYAL D/O JITENDRA KUMAR GOYAL, R/o A 604, Civitech Sampirity Apartments, Sector - 77, Noida, Gautam Budh Nagar, Uttar Pradesh – 201304 have changed my name and shall hereafter be known as AANKITA GOYAL.

NAME CHANGE
I, Jnanesh singh s/o Raj kumar singh R/o A-602 Lincoln grand omaxe sector 93 b noida.have change my name Jnanesh singh to jnanesh raj singh all future purchases.

PUBLIC NOTICE
Be it known to the public at large that Mohammed Touqeer S/o Abdus Samad R/o 660, Sector 7, Faridabad Haryana 121006, Dealing with artificial deals in properties etc., via Original Infraventures Pvt Ltd. and other methods, My client Sh. Munish Vats, S/o Late Sh. Bishan Dayal Sharma is not concerned/associate dealing with the above said firm/person/company. If anybody deals with the above entities, then She/He will do so at his/her own risks, costs & consequences. My client shall not be responsible for the same.

SHATRUGHNA PRASAD
Advocate
Chamber No. 316
Lawyers' Chamber
Dwarka Courts, Sec-10
New Delhi-110075

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Naveen Kumar & Dr. Sushma Jindal Hospital** is the owner of **Property bearing no. 117-A, admeasuring 58.52 Sq. meter i.e. 70 Sq. yards, out of Khasra no. 18/12/1, situated in the area of Village Hastsal, in the colony Known as B-Block, Vikas Vihar, Vikas Nagar, Uttam Nagar, New Delhi- 110059** vide Gift Deed dated 20.05.2024 and Intend to mortgage the said property with **UTKARSH SMALL FINANCE BANK LIMITED.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.

Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mr. Ajay Kumar S/o Mr. Pooran Singh is the owner of Freehold Residential Built-up Property Bearing No. 1/4270 Land Measuring 55 sq. yds, Out of Khasra no. 578., Situated at Village Sikdarpur, in the Abadi of Ram Nagar Extn. Illaqa Shahdara Delhi-32. by virtue of Notarized GPA along with ATS & Will dated 26.02.2001 now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and same property Sold too be Mr. Kiranpal & Mrs. Kanchan and same has been financed by SMFG India Home Finance Company Limited Branch: Moti Nagar New Delhi. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
It is for general information that I, SANDEEP JAIN S/o MAHENDER JAIN R/o G-1/106,107 UG Floor, Sector-16 Rohini, Rohini Sector-15, PO: Rohini Sector-15, Dist: North West Delhi, Delhi-110089, declare that name of my wife has been wrongly written as ANJALI JAIN in my minor daughter TANISHA JAIN aged 14 years in her School Records and Birth Certificate Registration No. MCDOLIR-0111-004814210. The actual name of my wife is POOJA JAIN.

NAME CHANGE
I hitherto known as AKASH KUMAR S/o NIROTTAM SINGH, R/o Sofipur, Sufipur, PO: Chandwar, Dist.: Firozabad, Uttar Pradesh-283203, have changed my name and shall hereafter be known as ANKIT SINGH.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, PRINCE S/O RAJIV KUMAR, R/O A-46, GALI NO-6, VIDYAPATI NAGAR, Mubarak Pur Dabas, North West Delhi, Delhi -110081, declare that name of my father has been wrongly written as Rajeev Kumar in my 10th class educational document. The actual name of my father is Rajiv Kumar. which may be amended accordingly .

NAME CHANGE
I, Krishan Sejwal S/O Dharmbir R/O F-15 Lado Sarai Village Mehrauli Delhi 110030 Have changed my name to Krishan for all future purposes.

NAME CHANGE
I, Naval Kishore S/O Ram Charan R/O A-101/ LG-1, Block -A, Dilshad Colony, jhilmil, PO: Jhilmil , Dist: East Delhi , Delhi -110095, have changed the name of my minor Son Deepak aged 16 years and he shall hereafter be known as Deepak Naval Kishore

Name Correction
I, MITHILESH KUMAR PANDEY (hereinafter referred to as my Real Name), S/O Late TrilokiNath Pandey alias T.N. Pandey, presently residing at A-502, Youngster Society, Plot No. 13C, Sector-06, Dwarka South-West, New Delhi-110075, also at Village Post-Bahuara, PS- DOKTI, District Ballia, Uttar Pradesh declare That my real and correct name is MITHILESH KUMAR PANDEY for all future purposes.My name has been recorded (inadvertently) and reflected in the educational certificates and mark-sheets of my children in three variations, namely "Mithlesh Kumar Pandey". Mithilesh Kumar Panday and "M.K. Pandey", in certain official records and documents

PUBLIC NOTICE
My clients Shri Gauri Shankar son of Shri Ramji Lal and Smt. Geeta Rani wife of Shri Gauri Shankar both resident of G-219, Sultan Puri, Delhi-110086 had debarred their son Shri Sandeep Kumar and his wife Smt. Bhavna from all of their movable and immovable properties by a joint statement/ affidavit and public notice dated 08.03.2020. However, reconciliation has happened between them and my clients have withdrawn the aforesaid debarment and have resumed the relationship, vide a joint statement/ declaration/ affidavit dated 19.09.2025, with their son and daughter-in-law for all intents and purposes as per law.

UDYAN SRIVASTAVA ADVOCATE
CH. 380, LAWYERS' CHAMBER,
BLOCK-II DELHI HIGH COURT,
NEW DELHI-110003
#9873994286
udyan.srivastava@gmail.com

NAME CHANGE
I hitherto known as MOHD USMAN CHAUDHARY S/o BUNDU KHAN CHAUDHARY R/o House No. 216/5, Hindon Vihar, Ghaziabad, PO: Ghaziabad, Dist: Ghaziabad, Uttar Pradesh-201001, have changed my name and shall hereafter be known as MOHD USMAN, for all future purposes.

NAME CHANGE
I hitherto known as Amresh alias Babli W/O Manoj Kumar, R/O H No- , Rampuri, new modern school k pass, Muzaffarnagar, Muzaffarnagar, Uttar Pradesh - 251002 Have changed my name and shall hereafter be known as BABLI.

Date of Birth Changed
I, SAUBAI is legally mother of No. 2807538X Rank- NK.STW Name-SHAMRAO PATIL, R/O VILL KONGNOLI, POST-KONGNOLI, TEH-KAVTHE MAHANKAL, DIST SANGLI STATE-MAHARASTRA, PIN-416418,have changed my name from SAUBAI to SAUBAI MAHADEV PATII. and date of birth from 27-10-1955 to 01-01-1968 for all future purposes. Vide affidavit dated 29.08.2025 before Public Notary Delhi.

PUBLIC NOTICE
It is general fir general information that I, DALBIR SINGH PANWAR S/o VIJAY SINGH R/o F-156 Moti Bagh Chankya puri New Delhi-110021 delclare that name of my wife has been wrongly written as DEEPA DALVEER in my minor son HAREETH SINGH PANWAR aged 13 years in his school record the actual name of my wife is DEEPA PANWAR which may be amended accordingly

सार्वजनिक सूचना
सर्व साधरण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किलों श्री ओम पाल सिहं पुत्र श्री हरवीर सिह व श्रीमती हेम लता पत्नी श्री ओम पाल सिहं पता प्लाट नं0 56ए, फर्नीचर एफ/एफ, एस एक्सटेंशन, मोहन गार्डन, उत्तम नगर, पश्चिमी दिल्ली, दिल्ली-110059 ने अपनी पुत्री शिवानी के अवज्ञाकारी व नियन्त्रण में न होने के कारण अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है और अपने सारे संबंध विच्छेद कर लिये है। यदि कोई व्यक्ति मेरे मुवक्किलों की पुत्री से किसी भी तरह का लेन देन %करता है तो वह स्वयं जिम्मेदार होगा इसमें मेरे मुविक्कलों व मेरे मुविक्कलों के परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी ।

एन के. तिवारी अधिवक्ता
चैम्बर नं0 832 जिला न्यायालय,
द्वारका कोर्ट, द्वारका, नई दिल्ली 110075

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Santosh Kumari W/o Late Mr. Suresh Kumar is the owner of Freehold Residential House No. 347 LIG/GF, admeasuring 90 sq. yds., Situated at Waka Mauza Sector- 10 Housing Board Colony Tehsil Ballabgarh Distt. Faridabad, Haryana. by virtue of Sale Deed dated 01.06.2020 duly registered in the office of SR Ballabgarh, as Doc No. 340, Book no. 1 Dated 01.06.2020. in the chain Document below mentioned documents not available i.e. (1) Probate order of Regd. Will dated 20.03.1992 & (2) Probate order of Regd. Will dated 27.10.2010., now our client is declaring that that any other Person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mrs. Sunita Garg and same has been finance by ICICI Home Finance Co. Ltd. Branch: Sohna, Haryana. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained

[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad
Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

NAME CHANGE
I, AMIT KUMAR S/O INDER PAL SINGH R/O H NO-B-2/10, GALI NO-1, HARSH VIHAR, NEAR GYAN SAROWAR PUBLIC SCHOOL, NORTH EAST DELHI, DELHI-110093, have changed the name of my minor son KARTIK KUMAR aged 13 years and he shall hereafter be known as KUSHAGRA KUMAR.

NAME CHANGE
I, ARJUN SAHNI S/O RAMESH SAHNI R/O DE-67, TAGORE GARDEN, WEST DELHI, DELHI-110027, have changed the name of my minor Daughter PURVY SAHNI aged 03 years and she shall hereafter be known as PURVIKA SAHNI.

NAME CHANGE
I, Rakesh Sawal S/o Onkar Nath Sawal R/o A2/6A, Lawrence Road, Keshav Puram, Delhi-110035 have changed my name from Rakesh Sawal to Rakesh Kumar Sawal for all future purposes.

NAME CHANGE
I, SHUBHANGI D/o VIJAY PREWA R/o EA-138, 3rd FLOOR, OPP AROSE MENS PARLOUR, INDERPURI, DELHI-110012, have changed my name from SHUBHANGI to SHUBHANGI PREWA for all future purposes.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Deepak Kumar Sharma S/O Ram Kumar Sharma R/O H-512, Village Nithari, Sector-31, Noida, PO: Noida, DIST: Gautam Buddha Nagar, Uttar Pradesh - 201301, declare that name of mine has been wrongly written as Deepak Sharma in my minor son namely Parth Sharma aged 14 years in his school records. The actual name of mine is Deepak Kumar Sharma.

NAME CHANGE
It is for general information that I Hemlata D/O Janki Prasad W/O Late Bharat Chaudhary R/O house no-111, gali no-2, ASHOK - MOHALLA NANGLOI, Bakkar Wala, West Delhi, Delhi-110041,declare that name of mine and my husband has been wrongly written as Hema Chaudhary and bharat Choudhary in my minor daughter namely Akansha aged 16 years in her school records The actual name of mine and my husband are HEMLATA AND BHARAT CHAUDHARY, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, MUKESH S/o Onkar Chand R/o H.No.3/6, 2nd Floor, Nehru Nagar, Sriniwaspuri, Delhi-110065, have changed my name to MUKESH KUMAR permanently

सार्वजनिक सूचना
चूँकि **श्री कृष्ण कुमार कुशवाह, आदित्य बिरला हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड** से **प्लॉट संख्या P-65, सामने की ओर का क्षेत्रफल 50 वर्ग गज, कुल क्षेत्रफल 100 वर्ग गज में से, खसरा संख्या 116 के लिए गृह ऋण चाहते हैं, जो गाँव बिंदापुर, दिल्ली राज्य, कॉलोनी P-ब्लॉक, विजय विहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059 में स्थित है, जिसे आगे उक्त संपत्ति कहा जाएगा। श्री कृष्ण कुमार कुशवाह** ने हमें बताया कि उक्त संपत्ति GPA, ATS और वसीयत के आधार पर कई बार श्री हरीश चंद मल्होत्रा को हस्तांतरित की गई थी, जबकि उनकी मृत्यु हो चुकी है और वे अपने पीछे कानूनी उत्तराधिकारी छोड़ गए हैं। अब उक्त संपत्ति त्याग विलेख संख्या 3468 दिनांक 07.08.2014 के माध्यम से श्रीमती मीनू को हस्तांतरित कर दी गई और अंततः विक्रय विलेख संख्या 2024/25/1/4739 दिनांक 16.02.2024 के माध्यम से श्रीमती सुमन कंसल इसकी स्वामी बन गईं। यह स्पष्ट है कि श्रीमती सुमन कंसल उक्त संपत्ति की पूर्ण स्वामी है। अब, मैं आम जनता को सूचित करना चाहता हूँ कि जिस किसी व्यक्ति का उस संपत्ति/हिस्से या दस्तावेज़ों पर कोई अधिकार, स्वामित्व या हित है, वह सात दिनों के भीतर हमारे दिल्ली कार्यालय में आकर दस्तावेज़ी और वैध साक्ष्यों के साथ अपना दावा प्रस्तुत कर सकता है। अन्यथा, उसे दावारहित और अखंडित मानकर आगे बढ़ाया जाएगा।

मेसर्स पास एंड एसोसिएट्स, एलएलपी
बी-132, मालवीय नगर,
नई दिल्ली-110017
मोबाइल-09991116006

NAME CHANGE
I hitherto known as NEHA KUMARI D/o PARMANAND RAI , W/o MOHAMMAD ZAINUL ABDDIN, Permanent R/o M.C.Road, P.O. Assam Rifle Demseiniong, Assam Rifles, East, Khasi Hills, Meghalaya - 793011 and Present R/o 234 A, Badarpur Village, Near Sharma Medical Wali Gali, Badarpur, South Delhi, Badarpur, Delhi-110044, have changed my name and shall hereafter be known as NEHA ABDDIN. I have changed my name only not my religion.

NAME CHANGE
It is for general information that I SIDDHARTH S/o SUBHASH residing at House No. A - 253 Part 6, Gali No. 11, C.R.P.F Camp, Sonia Vihar Pusta Pahala, Karawal Nagar, North East, Delhi - 110094, declare that name of mine has been wrongly written as SIDHARTH in my SC Certificate No. SC/04/948/6016/23/5/ 2014/90519489467265 issued by Govt. of NCT of Delhi. The actual name of mine is SIDDHARTH , which may be amended accordingly.

नाम परिवर्तन
मैं अनीता अहिरवार धर्मपत्नी श्री जय नारायण मेरी सुपुत्री गरिमा, निवासी मकान नंबर 1/19 ई ब्लॉक, भाग्य विहार रानी खेड़ा, नॉर्थ वेस्ट दिल्ली 110081 गरिमा का नाम के साथ उसका हमारी जाती अहिरवार लगती है और भविष्य में *गरिमा का नाम आगे से *गरिमा अहिरवार* से जाना जाये. !

NAME CHANGE
I, Jannuddin S/o Umardraz Khan R/o House No.C-108, Gali No.11, North Ghonda, Garhi Mendu, Delhi-110053 have changed ny name to Zainuddin Khan.

NAME CHANGE
I, Taheera W/o Zainuddin Khan R/o House No.C-108, Gali No.11, North Ghonda, Garhi Mendu, Delhi-110053 have changed ny name to Tahira Begum.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Hitesh Kaushik S/O Naresh Kumar, R/O 234, MAYUR VIHAR PHASE-1, PATPARGANJ, East Delhi, Delhi, 110091, declare that name of my father has been wrongly written as Naresh Kaushik in my all Educational document .The actual name of my father is Naresh Kumar,which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, MOHIT SHARMA S/O SURESH CHANDRA SHOBHAWAT resident of 72 A GIRIRAJ NAGAR KALWAR ROAD JHOTWARA JAIPUR RAJASTHAN-302012 . have changed my name to MOHIT KUMAR for all future purposes.

NAME CHANGE
I, MANISH KUMAR NAHATA S/o RAJENDER SINGH NAHATA R/o 4311, Gali Bhairon Wali Jogiwara, Nai Sarak, Chandni Chowk, Delhi-110006, have changed my name to MANISH NAHATA permanently

NAME CHANGE
I, SARVESH SOLANKI S/o Jai Pal Singh R/o F-52, Jawahar Park, Khanpur, Delhi-110062, have changed my name to SARVESH KUMAR permanently.

NAME CHANGE
I Renu Bala Rawal W/O Rajender Prasad Khurana R/O. N-17-Gali No-1, Vijay Vihar, Uttam Nagar-110059 changed my name to Renu Khurana.

NAME CHANGE
I, hitherto known as AMRESH KUMAR S/O SUDHIR KUMAR TIWARI R/O J-1/131, FIRST FLOOR, DDA FLATS, KALKAJI, SOUTH DELHI, DELHI-110019 have changed my name and shall hereafter be known as AMRESH KUMAR TIWARI.

NAME CHANGE
I, hitherto known as RESHO D/O RAM KISHORE BARERIA W/O AMRESH KUMAR TIWARI R/O J-1/131, FIRST FLOOR, DDA FLATS, KALKAJI, SOUTH DELHI, DELHI-110019 have changed my name and shall hereafter be known as RESHO TIWARI.

NAME CHANGE
I hitherto Known as ROHIT JUYAL S/o NAGENDER JUYAL,R/o RZ I 85 Mahavir Enclave, Old Som Bazar road, Dhari Devi Temple, Palam, Dabri, Palam Village, PO: Palam Village, DIST: South West Delhi, Delhi - 110045 have changed my name and shall hereafter be known as ROHIT.

NAME CHANGE
I, LALIT KUMAR S/o KISHAN LAL R/o House No. - 67, Old No.- 194 and 211, F/F, Khajoor Wali Gali, Near Ambedkar Bhawan, Ambedkar Basti, Ghonda, Garhi Mendu, PO: Bhajan Pura, Dist: North East Delhi, Delhi - 110053 declare that name of my minor daughter has been wrongly written as MAYRA in my minor daughter namely MAYRA SINGH aged 7 years in her SC Caste Certificate No. 9051000634604. The actual name of my minor daughter is MAYRA SINGH which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, Satender Sharma s/o Sunder lal sharma r/0 B 1 sec 9 Vijay Nagar Ghaziabad have change my name to Satender Kumar Sharma for all purpose.

NAME CHANGE
I, Raj Kumar Kanujia S/o Ashok Kumar R/o G-984, Shakurpur, J J Colony, Delhi-110034 have changed my name to Raj Kumar.

NAME CHANGE
I, Ashok Kumar Kanujia S/o Mahi Lal R/o G-984, Shakurpur, J J Colony, Delhi-110034 have changed my name to Ashok Kumar.

NAME CHANGE
I, Asha Kanujia W/o Ashok Kumar R/o G-984, Shakurpur, J J Colony, Delhi-110034 have changed my name to Jaywanti.

सार्वजनिक सूचना
यह सूचित किया जाता है कि श्री सुनील कुमार, पुत्र स्व. श्री सरदारी लाल गुप्ता, तीसरी मंजिल (छत/टेरेस अधिकार सहित), जो कि 150 वर्ग गज के भूखंड पर निर्मित है, खरीदने का इरादा रखते हैं। यह संपत्ति मकान संख्या J-7, खसरा संख्या 1812 में से, गांव तिहाड़ क्षेत्र में स्थित है तथा जे-ब्लॉक, बेरी वाला बाग, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 के रूप में जानी जाती है। यह संपत्ति वह श्रीमती अर्चना कपूर, पत्नी श्री राजेश कपूर, से खरीदना चाहते हैं। मूल स्वामी श्री नरसिंह दास ने यह संपत्ति श्रीमती चंद्रावली को बिक्री विलेख दिनांक 03.11.1966 के माध्यम से विक्रय कर दी। श्रीमती चंद्रावली ने दिनांक 03.11.1966 को एक वसीयत के माध्यम से संपत्ति श्री जय सिंह एवं श्री उमेद कुमार के नाम कर दी। श्रीमती चंद्रावली का निधन 20.03.1996 को हो गया। तत्पश्चात श्री जय सिंह का भी निधन 24.02.2013 को हो गया, उनके पीछे निम्नलिखित वैध उत्तराधिकारी शेष रहे- श्री ललित सिंह (पुत्र), सुश्री नेहा सिंह (पुत्री), सुश्री पूजा कुमार (पुत्री), श्रीमती शांता (पत्नी), उपरोक्त तीनों संतानों – श्री ललित सिंह, सुश्री नेहा सिंह, एवं सुश्री पूजा कुमार – ने अपनी-अपनी हिस्सेदारी ½ अविभाजित भाग अपनी माता श्रीमती शांता के पक्ष में परित्याग विलेख दिनांक 17.07.2014 के माध्यम से त्याग दी। तत्पश्चात श्री उमेद कुमार का भी निधन 15.05.2020 को हो गया, उनके पीछे वैध उत्तराधिकारी रहे- श्री पवन कुमार (पुत्र), श्रीमती वर्षा कुमार (पुत्री), श्रीमती अनीता (पत्नी), श्री पवन कुमार एवं श्रीमती वर्षा कुमार ने अपनी-अपनी हिस्सेदारी, जो कि शेष ½ अविभाजित हिस्सा था, अपनी माता श्रीमती अनीता के पक्ष में परित्याग विलेख दिनांक 10.02.2021 के माध्यम से त्याग दी। अंततः, श्रीमती अनीता एवं श्रीमती शांता ने मिलकर तीसरी मंजिल के दायाँ भाग (Right-Side Portion) और बायाँ भाग (Left-Side Portion) श्रीमती अर्चना कपूर को दो बिक्री विलेख दिनांक 18.08.2023 के माध्यम से विक्रय कर दिए। कृपया ध्यान दें कि उपरोक्त संपत्ति वर्तमान में आरबीएल बैंक लिमिटेड, शाखा- ओखला, नई दिल्ली से वित्तपोषित की जा रही है। यदि किसी व्यक्ति को उपरोक्त संपत्ति के संबंध में कोई आपत्ति हो, तो कृपया इस सूचना की तिथि से 07 दिनों के भीतर अपनी आपत्ति लिखित रूप में प्रस्तुत करें। उक्त आपत्ति नीचे दिए गए पते पर पंजीकृत डाक के माध्यम से एवं ई-मेल द्वारा अधोहस्ताक्षरी को भेजी जा सकती है। यदि निर्दिष्ट अवधि में कोई आपत्ति प्राप्त नहीं होती है, तो उक्त संपत्ति के संबंध में कोई भी दावा अमान्य और निष्प्रभावी माना जाएगा।

[ASHWANI KUMAR] Advocate
Chamber No. 122,
Tehsil Compound, Ghaziabad, U.P.

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी/84 भा.न.स.स.देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **आकाश दुबे** पुत्र अनिल दुबे, निवासी- मकान नंबर 892, कृष्णा नगर बागू, विजय नगर के पास, पुलिस स्टेशन क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 134/2025 धारा 318(2)/338/336(3)/340(2) भारतीय न्याय संहिता, 2023, थाना कमला मार्केट, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है की किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह कह कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे** मिल नहीं रहा और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है की उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे** अपने आपको छिपा रहा है)। इस लिए इस के द्वारा उद्घोषणा कि जाती है की उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 134/2025 धारा 318(2)/338/336(3)/340(2) भारतीय न्याय संहिता, 2023, थाना कमला मार्केट, दिल्ली** न्यायालय के समक्ष या मेरे समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **28.10.2025** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेश से
सुश्री भारती बेनीवाल
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-12 (केंद्रीय)
कक्ष संख्या 264, द्वितीय तल
तीस हजारी न्यायालय, दिल्ली

DP/12886/CD/2025

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

(धारा 82 सीआरपीसी/84 भा.न.स.स.देखिए)

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि **आकाश दुबे** पुत्र अनिल दुबे, निवासी- मकान नंबर 892, कृष्णा नगर बागू, विजय नगर के पास, पुलिस स्टेशन क्रॉसिंग रिपब्लिक, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 134/2025 धारा 318(2)/338/336(3)/340(2) भारतीय न्याय संहिता, 2023, थाना कमला मार्केट, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है की किया है) और उस पर जारी किये गए गिरफ्तारी के वारंट को यह कह कर लौटा दिया गया है कि उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे** मिल नहीं रहा और मुझे समाधानप्रद रूप से दर्शित कर दिया गया है की उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे** अपने आपको छिपा रहा है)। इस लिए इस के द्वारा उद्घोषणा कि जाती है की उक्त अभियुक्त **आकाश दुबे, प्रथम सूचना रिपोर्ट संख्या 134/2025 धारा 318(2)/338/336(3)/340(2) भारतीय न्याय संहिता, 2023, थाना कमला मार्केट, दिल्ली** न्यायालय के समक्ष या मेरे समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए दिनांक **28.10.2025** को या उससे पहले हाजिर हो।

आदेश से
सुश्री भारती बेनीवाल
न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी-12 (केंद्रीय)
कक्ष संख्या 264, द्वितीय तल
तीस हजारी न्यायालय, दिल्ली

DP/12886/CD/2025

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002

फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

गुरुग्राम के मानेसर नगर निगम की बैठक में 171 करोड़ के 60 विकास कार्यों को मंजूरी

एजेंसी

गुरुग्राम। हरियाणा के गुरुग्राम के मानेसर नगर निगम की साधारण बैठक मेयर डॉ. इंद्रजीत कौर यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में 171 करोड़ के सभी 60 प्रस्तावों को सर्वसम्मति से मंजूरी दी गई। मेयर और पार्षदों ने मानेसर के चहुंमुखी विकास को प्राथमिकता बताया। निगम आयुक्त आयुष सिन्हा और अधिकारियों की सफाई व्यवस्था में सुधार के लिए सदन ने तालियां बजाकर सराहना की। मेयर डॉ. इंद्रजीत कौर यादव ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि मानेसर नगर निगम का चंहुमुखी विकास हमारी प्राथमिकता है। सभी वार्डों में एक समान काम किए जाएंगें। सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त करके वहां से निगम के लिए आय के स्त्रोतों की दिशा में काम करना उनकी सूची में प्रथम स्थान पर है। सभी गांवों में जोहड़ों का सौंदर्यीकरण करके वहां पर ग्रामीणों के लिए ओपन जिम, बच्चों के लिए झूले लगाकर पार्क विकसित किए जाएं। इसके अलावा दोनों डिवीजन में 500-500 कंक्रीट के बेंच लगाए जाएं, ताकि लोगों को सहूलियत मिले। गांव की मुख्य गलियों में स्पीड ब्रेकर लगाए जाने चाहिए। आयुक्त आयुष सिन्हा ने कहा कि सफाई व्यवस्था में परिवर्तन वार्डों में दिखने लगा है। रोड स्वीपिंग के काम पर अगले 5 साल के लिए निगम करीब 77 करोड़ रुपये खर्च करने की योजना बना रहा है।

पलवल में तीन दिवसीय राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ का रंगारंग आगाज

पलवल। नेताजी सुभाष चंद्र बोस स्टेडियम पलवल में राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के द्वितीय चरण का शुभारंभ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों और राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर उपायुक्त डॉ. हरीश कुमार वशिष्ठ ने मुख्य अतिथि के रूप में तीन दिवसीय कबड्डी और तीरंदाजी प्रतियोगिताओं का विधिवत उद्घाटन किया। उन्होंने तीर चलाकर 70 मीटर तीरंदाजी मुकाबले का आगाज किया तथा खिलाड़ियों से परिचय लिया। राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ में पलवल सहित प्रदेशभर से 1100 से अधिक खिलाड़ी कबड्डी और तीरंदाजी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर रहे हैं।शुभारंभ अवसर पर खिलाडि़यों को नशा त्याग कर खेल भावना के साथ मैदान में उतरने का संकल्प भी दिलाया गया। खिलाड़ियों ने मार्चपास्ट कर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। डॉ. वशिष्ठ ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी और खेल राज्य मंत्री गौरव गौतम के मार्गदर्शन में पिछले आठ माह में पलवल में पांचवीं बड़ी खेल प्रतियोगिता आयोजित हो रही है, जो जिले के लिए गर्व की बात है। उन्होंने कहा कि केंद्र व राज्य सरकार की नीतियों से हरियाणा खेल हब के रूप में उभर रहा है और इससे खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा निखारने का सुनहरा अवसर मिल रहा है।

गुरुग्राम में सार्वजनिक स्थलों से अतिक्रमण हटाने के लिए निगम की कार्रवाई तेज

गुरुग्राम। शहर की सडक़ों, फुटपाथों, ग्रीन बेल्ट और सार्वजनिक स्थानों को अतिक्रमण मुक्त बनाने के लिए नगर निगम गुरुग्राम द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है। निगम की स्ट्रीट वेंडिंग मैनेजमेंट टीम रोजाना अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई कर रही हैं, ताकि यातायात सुगम हो व सुरक्षित एवं स्वच्छ वातावरण मिल सके। निगम टीम ने चौधरी बख्तावर सिंह रोड, सेक्टर-32, सेक्टर-39, रेजांगला रोड, अंसल यूनिवर्सिटी रोड, सेक्टर-50, सेक्टर-51 और आसपास के क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। इस दौरान टीम ने सडक़ किनारे बनी रेहडि़यों, पटरियों, खोखों, ढाबों, टपरी व शेड नुमा संरचनाओं को हटाया। कार्रवाई के दौरान अतिक्रमण करने वालों का सामान मौके पर ही जब्त कर लिया गया। साथ ही उन्हें स्पष्ट चेतावनी दी गई कि यदि वे दोबारा अतिक्रमण करते हैं तो उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस कार्रवाई से स्थानीय निवासियों ने राहत की सांस ली और उम्मीद जताई कि भविष्य में भी इस तरह की कार्रवाई निरंतर जारी रहेगी। निगमायुक्त प्रदीप दहिया ने कहा कि नगर निगम की प्राथमिकता शहर को अतिक्रमण मुक्त बनाना है।

स्वच्छता अभियान में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली तीन ग्राम पंचायत सम्मानित

नारनौल। सेवा पर्व एवं स्वच्छता अभियान के तहत महेंद्रगढ़ जिले में स्वच्छता के क्षेत्र में बेहतरीन काम करने वाली तीन ग्राम पंचायतों को बुधवार को जिला स्तरीय सम्मान समारोह में सम्मानित किया गया। अटेली खंड के खोड ग्राम पंचायत में 100 में से 88 अंक हासिल कर शीर्ष स्थान प्राप्त किया। कनीना के सिहोर गांव ने 83 अंक प्राप्त कर दूसरा स्थान हासिल किया। वहीं निजामपुर के हसनपुर गांव को 83 अंक के साथ तीसरा स्थान मिला है। उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार ने लघु सचिवालय में आयोजित इस कार्यक्रम में इन पंचायतों को प्रशस्ति पत्र देकर उनके प्रयासों की सराहना की। इस सम्मान समारोह में अटेली, कनीना और निजामपुर खंड की ग्राम पंचायतों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान से नवाजा गया। उपायुक्त कैप्टन मनोज कुमार ने इन पंचायतों की सराहना करते हुए क्हा कि ये सभी पंचायतें अन्य गांवों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। उन्होंने आगे कहा कि स्वच्छता एक सामूहिक जिम्मेदारी है। इस अभियान का लक्ष्य हर गांव, हर घर और हर संस्थान को स्वच्छ बनाना है। उन्होंने बताया कि इस अभियान के तहत 17 सितंबर से दो अक्टूबर तक अलग-अलग चरणों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है।

खेल और पुलिस बलों का गहरा संबंध, अच्छे स्वास्थ्य के साथ-साथ टीम भावना होती है विकसित : नायब सिंह सैनी

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी मधुबन पुलिस अकादमी में 74वें अखिल भारतीय पुलिस कुश्ती प्रतियोगिताओं के समापन समारोह में बतौर मुख्य अतिथि पहुंचे। इस मौके पर उन्होंने कहा कि इस प्रतियोगिता का आयोजन संस्कृति के शुभ दिन शरद नवरात्रों में हुआ है, जो खुशी की बात है। खेल और पुलिस बलों का गहरा संबंध है। खेल अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने के साथ-साथ टीम भावना, आपसी सहयोग और अनुशासन सिखाते हैं। उन्होंने प्रतियोभागियों व विजेता खिलाड़ियों को बधाई दी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि प्रधानमंत्री ने फिटनेस के महत्त्व को देखते हुए कहा है कि जो फिट है वह हर क्षेत्र में हिट है। इसे साकार करने के लिए उन्होंने फिट इंडिया अभियान 2019 से शुरू किया। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2036 के ओलंपिक खेलों में भारत को खेल महाशक्ति के रूप में स्थापित करने

का लक्ष्य रखा है। उन्होंने इन खेलों को भारत में आयोजित कराने की इच्छा जताई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हरियाणा पुलिस के जवानों ने सुरक्षा की ड्यूटी को तो बखूबी निभाया ही है, साथ ही देश को अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी भी दिए हैं। ऐसे खिलाडि़यों ने देश का मान और गौरव बढ़ाया है। हरियाणा पुलिस का प्रदेश में खेलों के प्रति उत्साहजनक माहौल बनाने में सराहनीय योगदान दिया है। हरियाणा पुलिस के खिलाडि़यों ने पद्मश्री, खेल रत्न, मेजर ध्यानचंद, अर्जुन, द्रोणाचार्य अवार्ड जीतकर प्रदेश का नाम रोशन किया है। कुश्ती हरियाणा का खेल है। यहां के धाकड़ पहलवान पूरे मनोबल के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि वर्तमान सरकार ने लगभग 11 साल पहले खेलों के लिए एक विजन विकसित किया था। यह विजन है- हर बच्चे, हर युवा को खेल से जोड़ने व उसे अवसर देने का जिसमें खेल के प्रति ललक है, हर गांव में खेल का मैदान बनाने का।

इस विजन का लक्ष्य है हरियाणा को भारत की खेल राजधानी बनाने का। सरकार ने खेल ढांचे को आधुनिक बनाया है। वर्ष 2015 में हरियाणा स्पोर्ट्स एंड फिजिकल फिटनेस पॉलिसी लागू की। इस नीति से खेल के प्रति युवाओं का रूझान बढ़ा। तभी वे राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं।

विकसित भारत के संकल्प में हरियाणा एक प्रमुख भागीदार राज्यः राव नरबीर सिंह

एजेंसी

गुरुग्राम। उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि हरियाणा को वर्ष 2047 तक एक ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए मेक इन हरियाणा इंडस्ट्रियल पॉलिसी-2025 एक मजबूत नींव होगी। इस पॉलिसी से प्रदेश में पांच लाख करोड़ रुपए निवेश तथा रोजगार के 10 लाख नए अवसर पैदा करने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने यह बात गुरुग्राम के ग्रैंड हयात होटल में हितधारकों के साथ इस पॉलिसी के प्रावधानों को लेकर परामर्श बैठक को संबोधित करते हुए कही।

उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के वर्ष 2047 में विकसित भारत के संकल्प में हरियाणा एक प्रमुख भागीदार राज्य होगा। भारत को आत्मनिर्भर ओर विकसित बनाने में उद्योग जगत की प्रमुख भूमिका होगी। सरकार आपके हितों को लेकर बेहद सजग है। ऐसे में आप भी बाजार के अनुकूल अच्छे व सस्ते प्रोडक्ट तैयार करें ताकि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में हमारे प्रोडक्ट पीछे न रहें। राव नरबीर सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी भी औद्योगिक विकास को प्रोत्साहन देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उद्योग जगत आगे बढ़ेगा तो देश भी आगे बढ़ेगा। सरकार आपको सभी सुविधाएं उपलब्ध कराएगी। आज की बैठक में उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने जो भी सुझाव रखे हैं, उनका अध्ययन करवाकर सभी आवश्यक सुझावों को नई नीति में शामिल किया जाएगा। उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के महानिदेशक डॉ.यश गर्ग ने कहा कि नई औद्योगिक नीति मेक इन हरियाणा 2025 केवल एक औपचारिक कदम नहीं,बल्कि एक महत्वपूर्ण संवाद है।

हरियाणा विधानसभा और लोकसभा सचिवालय का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 26-27 सितंबर को

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा विधानसभा और लोकसभा सचिवालय की ओर से विधानसभा व हरियाणा सरकार के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 26-27 सितंबर को चंडीगढ़ के महात्मा गांधी राज्य लोक प्रशासन संस्थान में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित होगा। विधानसभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने तैयारियों की समीक्षा के लिए अधिकारियों के साथ बैठक की।संविधान एवं संसदीय अध्ययन संस्थान के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में अधिकारियों और कर्मचारियों को लेजिस्लेटिव ड्राफ्टिंग की बारीकियां सिखाई जाएंगी। कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र शुक्रवार सुबह 10 बजे होगा। इस अवसर पर लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला, मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, विधान सभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण, विधान सभा उपाध्यक्ष डॉ.कृष्ण लाल मिड्ढा, लोकसभा महासचिव उत्पल कुमार सिंह, हरियाणा सरकार के मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी, विधान सभा सचिव राजीव प्रसाद संबोधित

करेंगे। इसके बाद कर्नाटक विधान सभा अध्यक्ष यू.टी. खादर फरीद भी प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करेंगे।प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन समारोह 27 सितंबर को दोपहर बाद होगा। इसे हरियाणा के राज्यपाल प्रो. असीम कुमार घोष, विधान सभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण, महाराष्ट्र विधान परिषद के सभापति प्रो. राम शिंदे, विधान सभा हरियाणा विधान सभा उपाध्यक्ष डॉ. कृष्ण लाल मिड्ढा संबोधित करेंगे। इस दौरान उन्होंने एक-एक व्यवस्था के बारे में जानकारी ली तथा अधिकारियों को इसकी सफलता के लिए उत्साह से काम करने के लिए कहा।

भारतीय संस्कृति की जड़ें आत्मीयता, नैतिकता में गहराई तक स्थापित : डा. महेश चंद्र शर्मा

एजेंसी

हिसार। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के तत्वावधान में 'एकात्म मानवदर्शन और भारतीय संस्कृति' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। एकात्म मानव दर्शन अनुसंधान एवं विकास संस्थान, नई दिल्ली के अध्यक्ष डा. महेश चंद्र शर्मा संगोष्ठी में मुख्य अतिथि रहे जबकि अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने की। दीनदयाल उपाध्याय शोध संस्थान, नई दिल्ली के महासचिव अतुल जैन मुख्य वक्ता रहे। मुख्य अतिथि डॉ. महेश चंद्र शर्मा ने बुधवार को अपने संबोधन में कहा कि राष्ट्र निर्माण केवल शासन व्यवस्था या नीतियों के बल पर नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की सक्रिय सहभागिता से ही संभव है। भारतीय संस्कृति की जड़ें आत्मीयता, नैतिकता और लोकमंगल की भावना में गहराई तक स्थापित हैं। उन्होंने दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को

उद्धृत करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति व्यक्ति, समाज और प्रकृति इन तीनों के बीच संतुलन स्थापित करने का संदेश देती है। उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र का अवसर सभी राष्ट्र का अवसर होना चाहिए। पूरे विश्व को इस परिभाषा को समझना होगा। आपदा में अवसर तलाशने की बजाय सभी को मिलजुल करके इससे निकलने का मार्ग ढूंढना होगा। मुख्य वक्ता अतुल जैन ने एकात्म मानवदर्शन की समकालीन प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शिक्षा केवल जानकारी अर्जित करने का साधन भर नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र जीवन को ऊर्जा देने और मानवता को दिशा देने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के आदर्शों में प्रकृति का संरक्षण शामिल हैं। पंडित दीनदयाल जी के विचार भी गुरु जी के आदर्शों पर आधारित थे। उन्होंने भी प्रकृति के संरक्षण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि दीनदयाल जी का दर्शन आज भारत की सांस्कृतिक और आर्थिक दिशा तय करने वाला एक मजबूत मार्गदर्शन है।

विद्यार्थियों को समाज हित के लिए तैयार करता एनएसएस : रणबीर गंगवा

ज्योति दर्पण

हिसार। राज्य के लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा है कि राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास और व्यक्तित्व निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह केवल सेवा का मंच नहीं है, बल्कि युवा पीढ़ी के चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों की स्थापना और समाजहित के संस्कारों को विकसित करने का सशक्त माध्यम है। रणबीर गंगवा बुधवार को यहां के गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय में एनएसएस के 57वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम 'भारतीय संस्कृति संगम' में मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना विद्यार्थियों के अंदर से अहंकार को समाप्त कर उनमें सेवा, सहयोग, अनुशासन और समर्पण की भावना का संचार करती है। यह संगठन युवाओं को केवल समाज सेवा ही नहीं सिखाता, बल्कि उनमें देशहित और जनहित की चेतना भी जाग्रत करता है। उन्होंने कहा कि

वर्तमान समय में नशा, अपराध और असामाजिक प्रवृत्तियों की ओर युवाओं का झुकाव एक गंभीर चुनौती है, परंतु एनएसएस जैसी संस्थाएं विद्यार्थियों को सकारात्मक दिशा देने में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। एनएसएस के स्वयंसेवक स्वयं तो जागरूक बनते ही हैं, साथ ही अपने प्रयासों से समाज को भी जागरूक करने का कार्य करते हैं।मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने के बाद गंगवा ने एनएसएस स्वयंसेवकों द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों की थीम पर तैयार की गई आर्ट एंड क्राफ्ट प्रदर्शनी का अवलोकन किया। उन्होंने स्वयंसेवकों की कल्पनाशीलता, सृजनात्मकता और मेहनत की सराहना करते हुए कहा कि यह प्रदर्शनी भारत की अद्भुत सांस्कृतिक विविधता को एक ही छत के नीचे प्रस्तुत करने का अनुपम प्रयास है। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में पहुंचे पूर्व प्राचार्य डॉ. रमेश आर्य ने भी एनएसएस स्वयंसेवकों के प्रयासों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विवेक सैनी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और पुष्पगुच्छ भेंट कर मुख्य अतिथि रणबीर गंगवा और विशिष्ट अतिथि डॉ. रमेश आर्य का हार्दिक स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं सुव्यवस्थित आयोजन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारियों प्रो. कुमारी सरोज, प्रो. भावना, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद और प्रो. सुनील कुमार ने संयुक्त रूप से किया।

बाल अधिकार आयोग ने स्कूल वाहनों की सुरक्षा पर जोर दिया

एजेंसी

सिरसा। हरियाणा राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के सदस्य अनिल कुमार और श्याम शुक्ला ने सिरसा के लघु सचिवालय में अधिकारियों के साथ बैठक में कहा कि स्कूली बच्चों की सुरक्षा के लिए सुरक्षित स्कूल वाहन पॉलिसी का सख्ती से पालन जरूरी है। पॉलिसी का उल्लंघन करने वाले वाहनों को तत्काल इंपाउंड या चालान करना चाहिए। आयोग के सदस्य अनिल कुमार ने कहा कि स्कूल बस के अंदर ही आरसी, इंश्योरेंस, लाइसेंस बस चालक के पास होना चाहिए। सभी बसों में स्पीड गवर्नर, सीसीटीवी कैमरे, फर्स्ट ऐड बॉक्स, जीपीएस, फायर उपकरण हर हालत में उपलब्ध होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं हो तो बस को इंपाउंड या उसका चालान कर देना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्कूली विद्यार्थियों को यातायात सुविधा देने वाले हर वाहन की सही चेकिंग होनी चाहिए। सीसीटीवी का लिंक स्कूल प्रशासन के पास हो। साथ ही तीन माह तक की रिकॉर्डिंग भी स्कूल को रखनी होगी। आयोग के सदस्यों ने जोर दिया कि जिला स्तर पर सुरक्षित वाहन पॉलिसी के तहत हर माह बैठक होनी चाहिए।

हरियाणा सरकार ने पैरा ओलंपिक विजेताओं पर की धनवर्षा

मुख्यमंत्री ने पंचकूला में राज्य स्तरीय खेल महाकुंभ के द्वितीय चरण का किया उद्घाटन

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य हरियाणा को न केवल भारत की बल्कि विश्व की खेल राजधानी बनाना है। उन्होंने कहा कि सरकार ने पिछले सालों में हरियाणा में खेलों के लिए एक विजन विकसित किया, जिसका उद्देश्य हर बच्चे को खेल से जोड़ना है।

मुख्यमंत्री पंचकूला स्थित ताउ देवीलाल स्टेडियम में राज्य स्तरीय खेल महाकुम्भ के द्वितीय चरण के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि खेल महाकुम्भ की शुरुआत हरियाणा के स्वर्ण जयंती वर्ष 2017 में की गई थी। तब से अब तक पांच खेल महाकुम्भों का सफलतापूर्वक आयोजन किया जा चुका है। गत 2 अगस्त से 4 अगस्त तक चले खेल महाकुम्भ के पहले चरण में 26 खेलों में प्रदेश के कुल 15 हजार 410 खिलाड़ियों ने भाग लिया था। आज इसके दूसरे चरण में 9 हजार 959 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के लिए खेलने का सपना हर खिलाड़ी का होता है, परंतु उस सपने को सच करने के लिए लगातार अभ्यास,

नायब सिंह सैनी ने आठ खिलाड़ियों को दी 42 करोड़ प्रोत्साहन राशि

अनुशासन और आत्मबल चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2036 के ओलम्पिक खेलों में भारत को खेल महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। उन्होंने उन खेलों को भारत में करवाने की इच्छा भी व्यक्त की है। उन्होंने कहा कि उत्कृष्ट खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित रोजगार सुनिश्चित करने के लिए हरियाणा उत्कृष्ट खिलाड़ी सेवा नियम 2021 बनाये हैं। इसके तहत खेल विभाग में 550 नए पद बनाए गये हैं। इस मौके पर मुख्यमंत्री ने गत वर्ष पेरिस में हुए पैरा-ओलम्पिक में पदक जीतने वाले हरियाणा के 8 खिलाड़ियों को 42 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि देकर सम्मानित किया। इस प्रतियोगिता में हरियाणा के खिलाडियों ने पांच स्वर्ण पदक और तीन रजत पदक अर्जित किए। इसके अलावा मुख्यमंत्री ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 31 प्रशिक्षकों को 3 करोड़ 56 लाख रुपये की राशि देकर सम्मानित किया। उन्होंने कार्यक्रम में हरियाणा के उत्कृष्ट खिलाड़ियों, राष्ट्रीय खेल-2025 के स्वर्ण पदक विजेताओं, 75 उत्कृष्ट खेल नर्सरियों के इंचार्ज और खेल विभाग के 75 उत्कृष्ट कोच को भी प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इससे पूर्व खेल मंत्री गौरव गौतम ने कहा कि खेल महाकुंभ 2025 के दूसरे चरण में 9959 खिलाड़ी तीन दिनों तक 17 विभिन्न खेल प्रतिस्पर्धाओं में अपना दमखम दिखाएंगे। उन्होंने कहा कि यह प्रतिस्पर्धाएं प्रदेश के अलग-अलग जिलों में आयोजित की जाएंगी। उन्होंने कहा कि हरियाणा की खेल नीति देश मे सर्वश्रेष्ठ है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में 15 साल बाद नवंबर में हरियाणा ओलंपिक खेलों का आयोजन होने जा रहा है।

दयानंद कॉलेज में हिंदी व अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

एजेंसी

हिसार। दयानंद कॉलेज में प्रतिभा खोज कार्यक्रम के तहत हिंदी और अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन संयोजक डॉ. सुरेंद्र बिश्नोई और सह-संयोजिका डॉ. संगीता मलिक के मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. विक्रमजीत सिंह ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रस्तुति कौशल सभी सफलताओं का आधार है। महाविद्यालय इस कौशल को निखारने के लिए विद्यार्थियों को निरंतर मंच प्रदान करता है। मंच संचालन प्रो. बिजेंद्र सिंह ने किया तथा डॉ. सुरेंद्र बिश्नोई, डॉ. संगीता मलिक और प्रो. अनुराग ने निर्णायक मंडल की भूमिका निभाई। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने समसामयिक और विचारोत्तेजक विषयों पर अपनी बात रखी जिनमें 'कृत्रिम बुद्धिमता और रोजगार का भविष्य', 'छात्रों में मानसिक स्वास्थ्यः एक मौन संकट', 'नशाः आत्मविश्वास की ओर पहला कदम' शामिल थे।

पत व हिसार में स्थापित होंगी अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल थर्मल इकाइयां : अनिल विज

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के ऊर्जा मंत्री अनिल विज ने कहा है कि राज्य के पानीपत में 800 मेगावाट व हिसार में 800 मेगावाट की नई अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल थर्मल इकाइयां स्थापित की जाएंगी और इन परियोजनाओं के स्थापित होने से राज्य की बिजली उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी और बढ़ती हुई ऊर्जा मांग को पूरा किया जा सकेगा।हरियाणा में बिजली की बढती मांग को देखते हुए ऊर्जा क्षेत्र से संबंधित विभिन्न विषयों पर केंद्रीय ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल की अध्यक्षता में एक बैठक मंगलवार की रात नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस बैठक में ऊर्जा मंत्री अनिल विज सहित केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय के साथ-साथ हरियाणा ऊर्जा विभाग के शीर्ष अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक के बाद विज ने बताया कि एचपीजीसीएल (हरियाणा पावर जनरेशन कारपोरेशन लि.) द्वारा विस्तार परियोजनाओं के रूप में हिसार और पानीपत में अल्ट्रा सुपरक्रिटिकल थर्मल इकाइयों की स्थापना की जाएगी। इससे हरियाणा में बिजली की उपलब्धता बढ़ेगी और राज्य की बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने में सहयोग मिलेगा। इन परियोजनाओं को सिरे चढाने के लिए केंद्रीय मंत्री ने एचपीजीसीएल को

कोयला लिंकेज/आवश्यकता की मांग करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए ताकि केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय इस पर अनुमोदन देने पर विचार कर सकें। इसके अलावा, को अवगत कराया गया और विभिन्न बायोमास उपयोग के संबंध में आ रही दिक्कतों के बारे में जानकारी दी गई जिस पर केन्द्रीय मंत्री ने ऊर्जा मंत्रालय के अधिकारियों को उपयुक्त समाधान के निर्देश दिए। बैठक में एचवीपीएनएल ने ट्रांसमिशन नेटवर्क की क्षमता बढ़ाने और ग्रिड को बनाए रखने के लिए एसीएसआर कंडक्टरों के स्थान पर एचटीएलएस कंडक्टर लगाने हेतु पीएसडीएफ निधि की मांग की, जिस पर केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय के अधिकारियों ने कहा कि पीएसडीएफ अनुदान का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाए और जिस पर विधिवत विचार किया जाएगा।

NAME CHANGE
I hitherto known as VANDANA D/o DILEEP KUMAR R/o Jabarauli, Jabrauli, Lucknow, Uttar Pradesh-227305, have changed my name and shall hereafter be known as ARPITA TIWARI.

बहादुरगढ़ नगर परिषद में 22 करोड़ का बजट पास

एजेंसी

झज्जर। बहादुरगढ़ नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि बहादुरगढ़ शहर के प्रत्येक वार्ड में विकास कार्यों को समान रूप से प्राथमिकता दी जाएगी। नगर परिषद द्वारा आयोजित पार्षदों की बैठक में उन्होंने स्पष्ट किया कि शहर के 31 वार्डों में कम से कम 50-50 लाख रुपये तक के विकास कार्य कराए जाएंगे। इसके लिए पार्षदों से उनके अपने वार्डों की प्राथमिकता सूची मांगी गई है, ताकि टेंडर की प्रक्रिया जल्द से जल्द पूरी कर कार्य प्रारंभ कराया जा सके। बैठक में परिषद का 22 लाख रुपये का वार्षिक बजट पास किया गया। चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि अब तक विकास कार्यों में सबसे बड़ी अड़चन बजट की कमी थी। लेकिन प्रदेश सरकार के सहयोग और प्रयासों से नगर परिषद को करीब 22 करोड़ रुपये का बजट प्राप्त हुआ है। इस बजट से शहर के लंबे समय से अटके पड़े कार्यों को गति मिलेगी और जनता को जल्द ही इसके परिणाम दिखाई देंगे। उन्होंने बताया कि ईओ अरुण नांदल के नेतृत्व में पार्षदों ने अपने.अपने वार्डों की सूची प्रस्तुत करनी शुरू कर दी है और इसी आधार पर कार्यों के टेंडर लगाए जाएंगे।उन्होंने कहा कि बहादुरगढ़ नगर परिषद का उद्देश्य केवल कागजों पर नहीं बल्कि धरातल पर वास्तविक विकास कराना है। शहरवासियों को बेहतर सड़केंए साफ.सफाईए पेयजल व्यवस्था और रोशनी जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराना परिषद की पहली प्राथमिकता है। बैठक के दौरान कई पार्षदों ने सफाई व्यवस्था की कमी पर सवाल उठाए। इस पर चेयरपर्सन सरोज राठी ने साफ कहा कि नगर परिषद किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाशत नहीं करेगी। चेयरपर्सन ने भरोसा दिलाया कि आने वाले समय में बहादुरगढ़ शहर विकास के नए आयाम स्थापित करेगा। उन्होंने कहा कि उनकी प्राथमिकता है कि कोई भी वार्ड विकास कार्यों से वंचित न रहे और सभी क्षेत्रों में समान रूप से कार्य हों। सरोज राठी ने कहा कि नगर परिषद की ओर से सभी वार्डों में संतुलित और पारदर्शी विकास कार्य होंगे। उन्होंने पार्षदों से भी अपील की कि वे अपने.अपने वार्डों में जनता से संवाद कर उनकी समस्याओं को सामने रखें और सूची बनाते समय उन्हें प्राथमिकता दें। उन्होंने दोहराया कि नगर परिषद की कार्यप्रणाली पूरी तरह पारदर्शिता पर आधारित होगी।

डीआरडीओ और टाटा ने तैयार किया अत्याधुनिक व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफॉर्म

मॉड्यूलर लड़ाकू वाहन से भारत को रक्षा क्षेत्र में मजबूती, मोरक्को में टाटा की नई विनिर्माण इकाई शुरू

नई दिल्ली

भारत ने रक्षा क्षेत्र में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है। रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड (टीएएसएल) ने मिलकर एक अत्याधुनिक पहियों वाला बख्तरबंद लड़ाकू वाहन व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफॉर्म विकसित किया है। यह पूरी तरह से स्वदेशी तकनीक पर आधारित है और अब इसके सभी परीक्षण सफलतापूर्वक पूरे हो चुके हैं। व्हील्ड आर्मर्ड प्लेटफॉर्म एक आधुनिक मॉड्यूलर प्लेटफॉर्म है, जिसे विभिन्न सैन्य अभियानों के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। इसमें स्केलेबल बैलिस्टिक और माइन प्रोटेक्शन, टिकाऊ मोनोकॉक हल, स्वतंत्र सस्पेंशन सिस्टम, सेंट्रल टायर इन्फ्लेशन सिस्टम और उच्च-शक्ति इंजन जैसी आधुनिक सुविधाएं शामिल हैं। ये सभी विशेषताएं इसे कठिन भू-भाग में भी कुशल संचालन के योग्य बनाती हैं। यह प्लेटफॉर्म विभिन्न प्रकार की सैन्य भूमिकाएं निभा सकता है जैसे कि पैदल सेना लड़ाकू वाहन, बख्तरबंद कार्मिक वाहक, टोही वाहन, कमांड पोस्ट, मोर्टार वाहक और सैन्य एम्बुलेंस। इसमें मानवयुक्त या मानवरहित रिमोट हथियार स्टेशन और एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल जैसी क्षमताएं भी जोड़ी जा सकती हैं। इससे जुड़ा एक और महत्वपूर्ण घटनाक्रम 23 सितंबर को देखने को मिला, जब भारत के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और मोरक्को के रक्षा मंत्री अब्देलतीफ लौदी ने मोरक्को के बेरेकिड में टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स की रक्षा विनिर्माण इकाई का उद्घाटन किया।।

एआई बूम से चमके लैरी एलिसन, बने दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति

95 फीसदी संपत्ति दान करने का वादा

मुंबई

ओरेकल के सह-संस्थापक लैरी एलिसन अब दुनिया के दूसरे सबसे अमीर व्यक्ति बन गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलियनेयर्स इंडेक्स के मुताबिक, उनकी कुल संपत्ति 368 अरब डॉलर पहुंच गई है। इस साल एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) में आई तेजी के कारण ओरेकल के शेयरों में जबरदस्त उछाल देखा गया, जिससे एलिसन की संपत्ति में 176 अरब डॉलर का इजाफा हुआ।

अभी वे केवल टेस्ला के सीईओ एलन मस्क (458 अरब डॉलर) से पीछे हैं। एलिसन की संपत्ति भारत के शीर्ष 8 उद्योगपतियों मुकेश अंबानी, गौतम अडानी, सावित्री जिंदल, शिव नाडर, शापूर मिस्त्री, सुनील मित्तल, लक्ष्मी मित्तल और अजीम प्रेमजी की कुल संपत्ति के बराबर है।

हालांकि, कम लोग जानते हैं कि एलिसन ने 2010 में गिविंग प्लेज पर हस्ताक्षर करते हुए अपनी 95 फीसदी संपत्ति दान करने का वादा किया था।

वे परंपरागत एनजीओ या चैरिटी के बजाय अपनी शर्तों पर और अपने संस्थान के ज़रिए परोपकार करना पसंद करते हैं। उनका प्रमुख परोपकारी मंच है इेलिसन इंस्टीटयूट आफ टेक्नोलॉजी (ईआईटी) जो स्वास्थ्य, खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन और एआई रिसर्च जैसे क्षेत्रों में कार्य करता है।

ईआईटी का नया कैंपस 2027 तक ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में खुलेगा, जिसकी लागत 1.3 अरब डॉलर है।

हालांकि, हाल ही में संस्थान को नेतृत्व संकट का सामना करना पड़ा। 2024 में नियुक्त रिसर्च प्रमुख जॉन बेल ने 2025 में इस्तीफा दे दिया। इसके बाद मिशिगन यूनिवर्सिटी के पूर्व अध्यक्ष सांता ओनो को परियोजना में जोड़ा गया।

मानस पॉलिमर्स एंड एनर्जीज़ लिमिटेड का आईपीओ 26 सितंबर को खुलेगा

मुंबई

पॉलीमर और नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में सक्रिय मानस पॉलिमर्स एंड एनर्जीज़ लिमिटेड, अपने व्यापार को नई ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए तैयार है। कंपनी ने अपने बहुप्रतीक्षित आईपीओ की घोषणा की है, जो 26 सितंबर 2025 को खुलेगा और 30 सितंबर 2025 को बंद होगा।

यह सार्वजनिक निर्गम कंपनी की महत्वाकांक्षी योजनाओं को साकार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

कंपनी इस आईपीओ के माध्यम से ₹23.52 करोड़ जुटाने का लक्ष्य रखती है, जिसमें 29.04 लाख नए शेयर जारी किए जाएँगे। शेयरों का मूल्य ₹76 से ₹81 प्रति शेयर निर्धारित किया गया है और इसका लॉट साइज़ 1600 शेयर होगा। जुटाई गई पूँजी का उपयोग मुख्य रूप से सोलर पावर प्लांट की स्थापना के लिए किया जाएगा, जिसके लिए ₹1,350 लाख आवंटित किए गए हैं। कंपनी का लक्ष्य अपनी सौर ऊर्जा क्षमता को 1 मेगावाट से बढ़ाकर 5 मेगावाट करना है।

मानस पॉलिमर्स के प्रबंध निदेशक विनीत भदौरिया ने इस अवसर पर कहा, यह आईपीओ हमारी विकास यात्रा का एक निर्णायक मोड़ है। हम निवेशकों को हमारे भविष्य के विकास का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करते हैं।

कंपनी ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। इस दौरान इसका राजस्व ₹3,154.4 लाख रहा, जबकि एबिटा और पीएटी क्रमशः ₹570.8 लाख (18.1त्न मार्जिन) और ₹429.3 लाख (13.6त्न मार्जिन) रहे। ग्वालियर, मध्य प्रदेश में स्थित अपने अत्याधुनिक विनिर्माण संयंत्र से, मानस पॉलिमर्स पीईटी प्रीफॉर्म, बोतलें, जार और कैप्स का उत्पादन करती है और इसे 16 राज्यों में आपूर्ति करती है।

इसके साथ ही, कंपनी अक्षय ऊर्जा उत्पादन में भी सक्रिय है, जो स्वच्छ ऊर्जा के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को और मजबूत करता है।

भारत में ट्रैक्टर और टू-व्हीलर सेगमेंट में बंफर ब्रिकी की उम्मीद

नई दिल्ली

भारत में ट्रैक्टर और टू-व्हीलर सेगमेंट वित्त वर्ष 2025 में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। आईसीआरए की रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रैक्टर इंडस्ट्री में चालू वित्त वर्ष में 4-7 प्रतिशत की वृद्धि की उम्मीद है, जबकि टू-व्हीलर इंडस्ट्री में भी अच्छी बढ़त दर्ज होने की बात की जा रही है। ट्रैक्टर सेगमेंट ने अब तक वित्त वर्ष में अच्छा प्रदर्शन किया है। अगस्त 2025 में थोक बिक्री सालाना आधार पर 28.2 प्रतिशत बढ़ी, और वित्त वर्ष के पहले पांच महीनों में कुल वृद्धि 11.7 प्रतिशत रही। खुदरा बिक्री भी पिछले वर्ष की तुलना में अगस्त में 30.1 प्रतिशत बढ़ी, जो किसानों के सकारात्मक रुख को दिखाती है। आईसीआरए ने बताया कि 17 सितंबर तक देश में औसत बारिश 108 प्रतिशत रही, इससे कृषि गतिविधियों और ग्रामीण मांग में तेजी दिखाई दी है। ट्रैक्टर पर 5 प्रतिशत जीएसटी रेट और आगामी बीएस-6 उत्सर्जन मानदंड (1 अप्रैल 2026 से लागू) के कारण प्री-बाइंग की गतिविधियां भी बढ़ेंगी। स्थिर मांग, परिचालन लाभ और कच्चे माल की स्थिर कीमत के चलते ट्रैक्टर निर्माताओं का वित्तीय प्रदर्शन बेहतर रहेगा। दूसरी ओर, टू-व्हीलर इंडस्ट्री में अगस्त में थोक बिक्री 7.2 प्रतिशत बढ़कर 18 लाख यूनिट हुई। हालांकि, भारी बारिश और जीएसटी लाभ की उम्मीद के कारण खुदरा बिक्री में केवल 2.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। निर्यात ने भी योगदान दिया, अगस्त में विदेशी शिपमेंट 27.5 प्रतिशत बढ़ा। इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर की बिक्री में भी लगातार सुधार जारी है, अगस्त में 1,04,725 यूनिट बिकीं, जो पिछले महीने से 1.8 प्रतिशत अधिक है। टू-व्हीलर सेगमेंट में ईवी पेनेट्रेशन करीब 6-7 प्रतिशत पर स्थिर है। चालू वित्त वर्ष में घरेलू टू-व्हीलर बिक्री 6-9 प्रतिशत बढ़ने की उम्मीद है। रिपोर्ट में कहा गया है कि रिप्लेसमेंट डिमांड, शहरी बाजार में सुधार, अच्छी मानसून बारिश और जीएसटी कट से वाहन अधिक किफायती होंगे, जिससे सेगमेंट को मजबूती मिलेगी और उपभोक्ता खरीदारी बढ़ेगी। इस प्रकार, मजबूत मानसून, टैक्स रियायत और इलेक्ट्रिक वाहनों की बढ़ती लोकप्रियता इस वित्त वर्ष में ट्रैक्टर और टू-व्हीलर इंडस्ट्री के लिए सकारात्मक संकेत हैं।

रूस से कच्चे तेल का आयात सितंबर में बढ़ने की संभावना

भारत ने रूस से अब तक औसतन 16.3 लाख बैरल प्रति दिन कच्चा तेल आयात किया

नई दिल्ली

अगस्त की तुलना में सितंबर में भारत का रूस से कच्चे तेल का आयात बढ़ने की संभावना है। केप्लर के शिप ट्रैकिंग डेटा के अनुसार 24 सितंबर तक भारत ने रूस से औसतन 16.3 लाख बैरल प्रति दिन (बीपीडी) कच्चा तेल आयात किया है। अगस्त में यह आंकड़ा 17.1 लाख बीपीडी था। महीने के अंत तक रूस से तेल आयात में लगभग 2 लाख बीपीडी की वृद्धि होने की उम्मीद है। भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) की बीना रिफाइनरी में फिर से रूस से तेल आयात शुरू होने से यह वृद्धि संभव हो पाई है। अमेरिका ने रूस से तेल खरीदने के कारण भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाया था, जो अब कुल 50 प्रतिशत हो गया है। इसके बावजूद भारत ने रूस से तेल खरीदना जारी रखा है। यूरोपीय संघ ने भी रूस से तेल पर मूल्य सीमा घटाकर 47.6 डॉलर प्रति बैरल कर दी है और कुछ रिफाइनरियों पर प्रतिबंध लगाए हैं। फिर भी, भारत के रिफाइनर रूस से कच्चा तेल खरीद रहे हैं क्योंकि सरकार की ओर से आयात रोकने का कोई निर्देश नहीं आया है। भारत ने रूस के अलावा सऊदी अरब, इराक, और संयुक्त अरब अमीरात से भी कच्चे तेल का मजबूत आयात जारी रखा है। सितंबर में सऊदी अरब और इराक से क्रमशः 6.05 लाख और 7.86 लाख बीपीडी तेल आयात हुआ। यूएई से तेल आयात भी 5.32 लाख बीपीडी पहुंच गया है। साथ ही, अमेरिका से भी भारत का तेल आयात लगभग 2.2 लाख बीपीडी बना हुआ है। भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरत का लगभग 85 प्रतिशत आयात पर निर्भर करता है, जबकि केवल 15-25 प्रतिशत घरेलू उत्पादन होता है। इसलिए भारत तेल आपूर्ति में विविधता लाने का प्रयास कर रहा है ताकि भू-राजनीतिक जोखिमों से बचा जा सके।

देश के सात शहरों में कार्यालय स्थल की पट्टा मांग में एक फीसदी गिरावट

जुलाई-सितंबर तिमाही में सात प्रमुख शहरों में कुल मांग 172 लाख वर्ग फुट रही

नई दिल्ली देश के वाणिज्यिक रियल एस्टेट क्षेत्र में जुलाई-सितंबर 2025 तिमाही के दौरान हल्की सुस्ती देखने को मिली है। एक रियल एस्टेट सलाहकार की रिपोर्ट के अनुसार इस तिमाही में देश के सात प्रमुख शहरों में ऑफिस पट्टे की सकल मांग 1 प्रतिशत घटकर 172 लाख वर्ग फुट रह गई। पिछले वर्ष की समान अवधि में यह मांग 174 लाख वर्ग फुट थी। रिपोर्ट के मुताबिक, इस गिरावट की मुख्य वजह बेंगलुरु, हैदराबाद और दिल्ली-एनसीआर जैसे प्रमुख बाजारों में मांग में आई भारी कमी है। बेंगलुरु में पट्टे की मांग 25 फीसदी घटकर 47 लाख वर्ग फुट रही। दिल्ली-एनसीआर में यह 33 फीसदी गिरकर 16 लाख वर्गफुट पर आ गई वहीं हैदराबाद में 48 फीसदी तक की गिरावट संभावित है। हालांकि रिपोर्ट में इन शहरों में गिरावट के कारणों का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया है। इसके विपरीत, मुंबई, पुणे और चेन्नई जैसे शहरों में ऑफिस पट्टे की मांग में वृद्धि की संभावना जताई गई है, जिससे बाजार को संतुलन मिला है।

फ्लोर मिल्स ने केंद्र से गेहूं स्टॉक सीमा बढ़ाने का आग्रह किया

नई दिल्ली रोलर फ्लोर मिलर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया ने केंद्र सरकार से गेहूं सत्र की शुरुआत पर स्टॉक सीमा को मौजूदा 75 लाख टन से लगभग 140 फीसदी बढ़ाकर लगभग 184 लाख टन करने का अनुरोध किया है। यह मात्रा सार्वजनिक वितरण प्रणाली की वार्षिक जरूरत के बराबर है। फेडरेशन के एक अे धिकारी के अनुसार, इससे गेहूं के दामों में उतार-चढ़ाव पर नियंत्रण रहेगा और बाजार में स्थिरता बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि यह कदम गेहूं बाजार को निश्चितता देगा और सरकार की भंडारण क्षमता एवं सब्सिडी नीति में भी सुधार होगा। उत्तर भारत के विशेषकर पंजाब राज्य में बाढ़ के कारण खेतों में जमा हुई गाद के चलते गेहूं की बोआई में देरी होने की संभावना जताई गई है। पंजाब के पांच जिलों में खेतों से बाढ़ की गाद हटाने में कुछ हफ्ते लग सकते हैं, जो गेहूं उत्पादन पर असर डाल सकता है। चितलांगिया ने मवेशियों के स्वास्थ्य और दूध की गुणवत्ता पर डीडीजीएस (ड्राइड डिस्टिलर्स ग्रेन्स विद सॉल्यूबल्स) के प्रभाव का व्यापक अध्ययन कराने का भी आग्रह किया। उन्होंने बताया कि डीडीजीएस की बढ़ती मात्रा से मवेशियों के पाचन तंत्र और दीर्घकालिक उत्पादकता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

आईवैल्यू इंफोसॉल्यूशंस का शेयर पांच प्रतिशत की गिरावट पर सूचीबद्ध

नई दिल्ली आईवैल्यू इंफोसॉल्यूशंस` लिमिटेड का शेयर गुरुवार को शेयर बाजार में अपने निर्गम मूल्य 299 रुपए के मुकाबले करीब 5 फीसदी की गिरावट के साथ सूचीबद्ध हुआ। बीएसई पर शेयर की शुरुआत 285 रुपए पर हुई, जो निर्गम मूल्य से 4.68 फीसदी कम है। बाद में यह और गिरकर 274.05 रुपए तक पहुंच गया, जो 8.34 फीसदी की गिरावट दर्शाता है। एनएसई पर शेयर 284.95 रुपए पर लिस्ट हुआ। कंपनी के 560 करोड़ रुपए के आईपीओ को अंतिम दिन 1.82 गुना अभिदान मिला था, जिसमें प्राइस बैंड 284-299 रुपए रखा गया था। कमजोर लिस्टिंग से संकेत मिलता है कि निवेशकों का उत्साह सीमित रहा। बाजार विशेषज्ञ इसके पीछे बाजार की मौजूदा अस्थिरता और प्राइसिंग को संभावित कारण मान रहे हैं। निवेशकों को अब कंपनी की लंबी अवधि की संभावनाओं पर ध्यान देना चाहिए।

शिप निर्माण और समुद्री इकोसिस्टम को नई रफ्तार, केंद्र ने शुरू की मेगा योजना

पानी के जहाज निर्माण के लिए 69,725 करोड़ रुपये का पैकेज

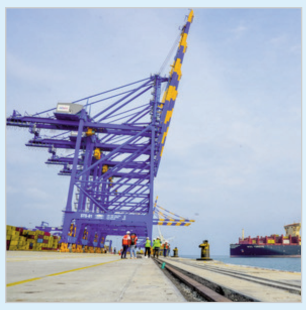

नई दिल्ली केंद्रीय मंत्रिमंडल ने भारत में पानी के जहाजों के निर्माण और क्षमता विकास के लिए 69,725 करोड़ रुपये के व्यापक पैकेज को मंजूरी दी है। यह पैकेज तीन मुख्य योजनाओं में विभाजित है: संशोधित जहाज निर्माण वित्त सहायता योजना (24,736 करोड़), समुद्री विकास कोष (25,000 करोड़) और जहाज निर्माण क्लस्टर विकास कार्यक्रम (19,989 करोड़)। यह योजना घरेलू क्षमता मजबूत करने, लंबी अवधि के ऋण प्रदान करने, नई परियोजनाएं विकसित करने और तकनीकी कौशल सुधारने पर केंद्रित है। इस एक दशक की योजना में 4.5 लाख करोड़ रुपये का निवेश होगा और 2,500 पानी के जहाजों का निर्माण होगा। मंत्रिमंडल ने अगले चार वर्षों में मेडिकल शिक्षा में 10,000 अंडरग्रेजुएट और पोस्टग्रेजुएट सीटों के विस्तार की मंजूरी दी है। इसके तहत सरकारी मेडिकल कॉलेजों की मौजूदा 5,023 एमबीबीएस सीटों को बढ़ाया जाएगा, जिससे चिकित्सा क्षेत्र में शिक्षा की पहुंच और गुणवत्ता दोनों में सुधार होगा। राष्ट्रीय राजमार्ग 139 डब्ल्यू साहेबगंज-अरेराज-बेतिया खंड के 78.94 किलोमीटर हिस्से को चार लेन करने की योजना को मंजूरी मिली है, जिसकी अनुमानित लागत 3,822.31 करोड़ रुपये है। इसके अलावा, बिहार में बख्तियारपुर-राजगीर-तिलैया रेलवे लाइन (104 किमी) के डबलिंग के लिए 2,192 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

सेंसेक्स 555, निफ्टी 166 अंक नीचे आया

मुंबई

भारतीय शेयर बाजार गुरुवार को गिरावट पर बंद हुआ। बाजार में ये गिरावट दुनिया भर से मिले कमजोर संकेतों के साथ ही दिग्गज कंपनियों के शेयरों में बिकवाली हावी रहने से आई है। इसी कारण दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 555.95 अंक नीचे आकर 81,159.68 और 50 शेयरों वाला एनएस निफ्टी 166.05 अंक टूटकर 24,890.85 पर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान आईटी , फार्मा और हेल्थकेयर शेयरों के नीचे आने से बाजार पर दबाव पड़ा। निफ्टी आईटी इंडेक्स 1.27 फीसदी नीचे आकर बंद हुआ। वहीं निफ्टी ऑटो 0.92 फीसदी, निफ्टी पीएसयू बैंक 0.52 फीसदी, निफ्टी वित्तीय सेवा 0.53 फीसदी और निफ्टी रियल्टी 1.65 फीसदी नीचे आकर बंद हुआ। केवल निफ्टी मेटल 0.22 फीसदी और निफ्टी इंडिया डिफेंस 0.67 फीसदी बढ़कर बंद हुआ।

आज कारोबार के दौरान ट्रेंट, पावर ग्रिड, टाटा मोटर्स, टीसीएस, एशियन पेंट्स, एनटीपीसी, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, एमएंडएम,एचसीएल टेक, एलएंडटी, टाइटन और कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर सबसे अधिक नीचे आये जबकि बीईएल, भारती एयरटेल और एक्सिस बैंक के शयरों को सबसे अधिक लाभ हुआ। जानकारों के अनुसार निवेशकों के सतर्क रवैये से भी बाजार नीचे आया है। एच-1बी वीजा नियमों में संभावित बदलाव को लेकर भी आईटी सेक्टर पर दबाव बना हुआ है, जिससे भी बाजार में अस्थिरता देखी गयी।

इससे पहले आज सुबह बाजार की कमजोर शुरुआत हुई। एशियाई बाजारों से मिले-जुले रुख और विदेशी निवेशकों की भारी बिकवाली के कारण निवेशकों में सतर्कता देखी गई। हालांकि शुरुआती गिरावट के बाद घरेलू खरीदारी के समर्थन से बाजार थोड़ा संभला। बीएसई सेंसेक्स 100 से अधिक अंकों की गिरावट के साथ 81,574 पर खुला, वहीं, निफ्टी-50 ने 25,034 के स्तर से शुरुआत की और थोड़ी ही देर में 25,072 पर पहुंच गया, जो 0.06 फीसदी की मामूली बढ़त दर्शाता है। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने बुधवार को भारतीय बाजारों से 2,426 करोड़ की बिकवाली की। वैश्विक बाजारों से भी उत्साहजनक संकेत नहीं मिले। अमेरिकी शेयर बाजार बुधवार को लगातार दूसरे दिन गिरे। नैस्डैक 0.33 फीसदी, एसएंडपी 500 में 0.28 फीसदी और डॉव जोन्स में 0.37 फीसदी की गिरावट रही।

सेबी के एनओसी के बाद आठ-नौ महीने में आएगा एनएसई का आईपीओ

नई दिल्ली नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के आईपीओ को मंजूरी मिलने में करीब 8 से 9 महीने लग सकते हैं। एनएसई के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने बताया कि सेबी से जून 2025 में सेटलमेंट के लिए आवेदन किया गया था। सेबी से नो ऑब्जेक्शन सर्टिफिकेट (एनओसी) मिलने के बाद आरएचपी (ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस) तैयार करने में 4-5 महीने लगेंगे। इसके बाद आरएचपी जमा कराकर आईपीओ की अंतिम मंजूरी में फिर 4-5 महीने का समय और लगेगा। कुल मिलाकर, एनओसी मिलने के बाद 8-9 महीने में एनएसई का आईपीओ बाजार में आ जाएगा।

अर्थव्यवस्था ने दिखाई मजबूती, दूसरी छमाही में अच्छी वृद्धि के संकेतः आरबीआई

रीपो दर में कटौती, आयकर में राहत और रोजगार बढ़ाने के उपायों से निवेश और उपभोग को बल

नई दिल्ली

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की ताजा मासिक आर्थिक रिपोर्ट में कहा गया है कि मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के साझा प्रभाव से भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी आने की संभावना है। रिपोर्ट के अनुसार, नीतिगत रीपो दर में 100 आधार अंकों की कटौती, आयकर में राहत और रोजगार सृजन के उपायों से निवेश और विकास का सकारात्मक चक्र शुरू हो सकता है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि हालिया वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) दरों में कटौती से खुदरा कीमतों में गिरावट आएगी, जिससे उपभोग मांग को बल मिलेगा। अगस्त के उच्च आवृत्ति संकेतकों के आधार पर आरबीआई ने आर्थिक गतिविधियों में मजबूती का संकेत दिया है। विनिर्माण और सेवा क्षेत्र दशक के उच्चतम स्तर पर हैं। वित्त वर्ष 2026 में आरबीआई ने सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि दर 6.5 फीसदी रहने का अनुमान जताया है, जिसमें तीसरी तिमाही में 6.6 फीसदी और चौथी तिमाही में 6.3 फीसदी वृद्धि की संभावना है। पहली तिमाही में अनुमानित 6.5 फीसदी की तुलना में वास्तविक वृद्धि 7.8 फीसदी रही, जो पांच तिमाहियों में सबसे अधिक है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख है कि अमेरिका द्वारा आयात शुल्क बढ़ाए जाने के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था ने लचीलापन दिखाया है। एसऐंडपी द्वारा सॉवरिन रेटिंग में सुधार भी भारत की आर्थिक मजबूती का संकेत है।

हर 10 में से 4 रूफटॉप सोलर आवेदन हुए खारिज, सिबिल स्कोर बना बड़ी वजह

नई दिल्ली

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबीएस) ने पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत फरवरी 2024 में इसकी शुरुआत से अगस्त 2025 तक प्राप्त कुल 8,03,515 आवेदनों में से 3,05,667 आवेदन खारिज कर दिए हैं। एक अधिकारी ने यह जानकारी देते हुए कहा कि 38.03 प्रतिशत आवेदनों को अस्वीकार कर दिया गया है। घर की छतों पर सौर बिजली संयंत्र लगाने को बढ़ावा देने और 300 यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान करने के लिए फरवरी 2024 में करीब 75,021 करोड़ रुपये आवंटन के साथ योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत सरकारी बैंकों ने कुल 447,736 आवेदन स्वीकार कर लगभग 8,417.5 करोड़ रुपये मंजूर किए हैं। सरकारी बैंकों के अलावा निजी बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां भी इस योजना के तहत ऋण को मंजूरी देती हैं। इस साल अगस्त में केंद्रीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रह्लाद जोशी द्वारा संसद में दिए गए जवाब में बताया कि राष्ट्रीय पोर्टल पर कुल 58 लाख आवेदन आए और इस साल 31 जुलाई तक इस योजना के तहत 16 लाख परिवारों को रूफटॉप सोलर इंस्टॉलेशन का लाभ मिला है। सरकारी पोर्टल के मुताबिक योजना के तहत 16 लाख रूफटॉप संयंत्र लगाए गए हैं, जबकि 61 लाख आवेदन मिले थे।

अब कतर में भी चलेगा यूपीआई

भारतीयों के लिए आसान हुआ डिजिटल पेमेंट

मुंबई भारत का लोकप्रिय डिजिटल पेमेंट सिस्टम यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) अब कतर में भी शुरू हो गया है। यह सुविधा एनपीसीआई इंटरनेशनल पेमेंट्स लिमिटेड (एनआईपीएल) और कतर नेशनल बैंक (क्यूएनबी) के बीच हुई साझेदारी के तहत शुरू की गई है। इसके अंतर्गत अब क्यूएनबी के प्वाइंट ऑफ सेल (पीओएस) मशीनों पर भारतीय यूपीआई ऐप्स के जरिए क्यूआर कोड स्कैन कर पेमेंट किया जा सकेगा। इस सेवा की शुरुआत कतर ड्यूटी फ्री से हुई है, जो यूपीआई स्वीकार करने वाला पहला मर्चेंट बना है। कतर जाने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों में भारतीयों की संख्या काफी अधिक है, और अब उन्हें करेंसी एक्सचेंज या कैश ले जाने की परेशानी नहीं होगी। अब भारतीय यात्री दुकानों, रेस्टोरेंट्स और टूरिस्ट स्थानों पर मोबाइल से तुरंत और सुरक्षित पेमेंट कर सकेंगे। यह सुविधा न केवल यात्रियों के लिए फायदेमंद है, बल्कि कतर की अर्थव्यवस्था को भी लाभ पहुंचाएगी।

जातिवाद पर प्रतिबंध योगी सरकार का ऐतिहासिक कदम

ललित गर्ग

भारतीय समाज में जातिवाद की जड़ें गहरी हैं। जाति व्यवस्था ने कभी सामाजिक पहचान और श्रम विभाजन का आधार बनकर काम किया, लेकिन समय के साथ यह भेदभाव, असमानता और सामाजिक विद्वेष का कारण बन गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- 'जातिवाद समाज की आत्मा को खोखला करता है।' डॉ. भीमराव आंबेडकर ने तो इसे भारतीय प्रगति की सबसे बड़ी बाधा बताया था।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाल ही में एक ऐतिहासिक और साहसिक कदम उठाया है। उन्होंने समाज में जाति आधारित विद्वेष को ही नहीं बल्कि विभेद को भी समाप्त करने की आवश्यकता को महसूस करते हुए सद्भाव के साथ सबके विकास को बल देने का सूझबूझभरा फैसला लिया है। इस फैसले के अन्तर्गत उन्होंने जाति-आधारित रैलियों, सार्वजनिक प्रदर्शनों और पुलिस रिकॉर्ड में जाति संबंधी उल्लेखों पर रोक लगा दी है। यह निर्णय इलाहाबाद उच्च न्यायालय के आदेश के बाद लिया गया, लेकिन इसका वास्तविक महत्व इससे कहीं अधिक है। यह केवल एक प्रशासनिक पहल नहीं बल्कि समाज को जातिगत बंधनों से मुक्त करने की दिशा में क्रांतिकारी प्रयास है। राजनीतिक दलों ने जाति आधारित वोटों को लुभाने एवं राजनीतिक स्वार्थ की रोटियां सेंकने के लिये समाज को बांटा है। यह गौर करने की बात है कि जाति आधारित संगठनों और रैलियों की बाढ़ आ गई है, जिससे एक-एक जाति के अनेक संगठन बने और इन जातिगत संगठनों ने सड़कों पर उतर कर न केवल सार्वजनिक व्यवस्था, इंसान-इंसान के बीच दूरियां-विद्वेष बढ़ा दिया बल्कि राष्ट्रीय एकता को भी क्षत-विक्षत कर दिया।

भारतीय समाज में जातिवाद की जड़ें गहरी हैं। जाति व्यवस्था ने कभी सामाजिक पहचान और श्रम विभाजन का आधार बनकर काम किया, लेकिन समय के साथ यह भेदभाव, असमानता और सामाजिक विद्वेष का कारण बन गई। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था- 'जातिवाद समाज की आत्मा को खोखला करता है।' डॉ. भीमराव आंबेडकर ने तो इसे भारतीय प्रगति की सबसे बड़ी बाधा बताया था। दुर्भाग्य से आजादी के बाद भी जातिवाद ने राजनीति और समाज दोनों में गहरी पैठ बनाई और देश की एकता को कमजोर करने का काम किया। जाति-आधारित राजनीति ने सत्ता के समीकरण तो बदले लेकिन समाज को बांटने का काम किया। चुनाव के समय उम्मीदवारों का चयन जातिगत समीकरणों के आधार पर होता रहा। समाज के बंटवारे का यह खेल लोकतंत्र के स्वस्थ आदर्शों के लिए चुनौती बना। जातिगत रैलियां और प्रदर्शन सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करते रहे। पुलिस रिकॉर्ड में जाति का उल्लेख अपराधी को अपराधी नहीं बल्कि किसी जाति का प्रतिनिधि बना देता था, जिससे कानून-व्यवस्था पर भी प्रतिकूल असर पड़ता था। इन जटिल स्थितियों में योगी सरकार का यह निर्णय विषमताओं एवं विसंगतियों को समाप्त करने की दिशा में एक नया अध्याय है। यदि इसे सख्ती और ईमानदारी से लागू किया गया तो निश्चित ही समाज में सौहार्द, भाईचारा और समानता का वातावरण बनेगा। जाति-आधारित पहचान की जगह व्यक्ति की योग्यता, आचरण और योगदान

को महत्व मिलेगा।

किसी जाति के प्रति लगाव दशार्ने के लिए किसी अन्य जाति को नीचा दिखाने की भी गलत परंपरा पड़ती दिख रही है। जाति आधारित पोस्टर या प्रतीक न केवल गलियों में, मकानों पर बल्कि अपने वाहनों पर भी लगाए जा रहे हैं। ऐसे में, परस्पर भेद, ऊंच-नीच की भावना बढ़ती जा रही है। ऐसे भेद को मिटाने की मांग उठती रही है। समाज के लिए चिंतित रहने वाले लोग यही चाहते हैं कि जातिगत झंडों और पोस्टरों पर एक हद तक लगाम लगनी चाहिए, लेकिन ऐसा साहस राजनीतिक स्वार्थों के चलते अब तक किसी भी राजनेता ने नहीं दिखाया, लेकिन योगी सरकार ने यह साहस दिखाया है तो उसका स्वागत होना ही चाहिए। योगी सरकार द्वारा जारी 10 सूत्रीय दिशा-निर्देश में यह बात विशेष रूप से गौर करने लायक है कि अब जाति के नाम, नारे या स्टिकर वाले वाहनों का केंद्रीय मोटर वाहन अधिनियम, 1988 के तहत चालान किया जाएगा। यहां तक कि प्रथम सूचना रिपोर्ट में भी जाति को दशार्ने से बचा जाएगा। अभी तक होता यह है कि अपराधी जाति के आधार पर अपनी पहचान बना लेते हैं और मजबूत हो जाते हैं।

यह बहुत अफसोस की बात है कि विशेष रूप से चुनाव के समय जाति आधारित बैनरों की बाढ़ आ जाती है। राजनीतिक दल एवं नेता जातिगत समीकरणों से समाज को बांटने में जुट जाते हैं। लेकिन अब यूपी सरकार की मंशा सराहनीय है और इन दिशा-निदेर्शों को पूरी तरह से लागू करने की जरूरत है। वाकई समाज से अपराध को मिटाने के लिए अपराधी की जाति देखना गैर-वाजिब है। हां, यह सावधानीपूर्वक कुछ मामलों में जाति का उल्लेख करने की छूट दी गई है। जैसे, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मामलों में जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल होता रहेगा। वाकई, कुछ मामले ऐसे होते हैं, जहां जाति की चिंता या उल्लेख जरूरी हो जाता है। यह भूलना नहीं चाहिए कि जाति आधारित भेदभाव अभी भी कई जगहों पर देखने को मिल जाता है। विशेष रूप से सोशल मीडिया पर भेदभाव की शिकायतें अक्सर आती हैं, ऐसे में, प्रशासन को ज्यादा सजग रहना पड़ेगा। निर्देश जारी हो जाना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि जातिगत भेदभाव के बिंदुओं को खोज-खोजकर मिटाने की ईमानदार पहल भी जरूरी है। सामाजिक चिंतक विनोबा भावे कहा करते थे 'जाति का भेद मिटेगा तो समाज में भाईचारा और सहयोग की भावना पनपेगी।' वास्तव में जातिवाद केवल सामाजिक समस्या नहीं बल्कि मानसिकता का रोग है। जब तक समाज इसे स्वीकार करता रहेगा, तब तक सच्चा विकास संभव नहीं।

योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश में एक आदर्श समाज व्यवस्था निर्मित करने के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देते हैं। उन्होंने जातिवाद के विरुद्ध आवाज ही नहीं उठाई, अपने राजनीतिक जीवन के अनेक उदाहरणों से समाज को सक्रिय प्रशिक्षण भी दिया। वे समता के पोषक हैं, इसलिये उन्होंने पूरी शक्ति के साथ जाति के दंश, प्रथा एवं विसंगति पर प्रहार कर मानवीय एकता का स्वर प्रखर किया। उनके शासन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन्होंने कानून-व्यवस्था को प्राथमिकता दी, जिससे राज्य में अपराध और अराजकता पर काफी हद तक नियंत्रण पाया गया। 'सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास' की नीति पर चलते हुए उन्होंने गरीबों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के उत्थान के लिए अनेक योजनाएं लागू कीं। बुनियादी ढांचे के विकास, धार्मिक स्थलों के पुनरोद्धार, निवेश को आकर्षित करने और रोजगार सृजन में भी उनके प्रयास उल्लेखनीय हैं। उनकी सकारात्मक सोच का ही परिणाम है कि उत्तर प्रदेश आज तेजी से विकासशील राज्यों में गिना जाने लगा है और जातिवाद, भ्रष्टाचार और असुरक्षा की छवि से बाहर निकलकर एक नए आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है। उनकी ताजा पहल समाज को बताती है कि नई पीढ़ी को जाति नहीं, योग्यता और नैतिकता के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए। यह निर्णय राजनीतिक दलों के लिए भी चेतावनी है कि उन्हें जातिगत समीकरणों की राजनीति छोड़कर राष्ट्रहित और जनहित की राजनीति करनी होगी।

जाति, रंग, भाषा आदि के मद से सामाजिक एवं राजनीतिक विक्षोभ पैदा होता है, इसीलिये यह पाप की परम्परा को बढ़ाने वाला पाप है। इसके कारण राष्ट्रीयता को भूल कर जातिगत संकीर्णताओं को लोग आगे बढाते रहे हैं, एक जाति के लोग मजबूत होने के बाद वे अपनी जाति को लाभ पहुंचाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहते हैं। यह धारणा भी बढती. रही है कि सबको अपनी जाति की चिंता करनी चाहिए। यह भ्रांति भी फैल रही है कि अपनी जाति के लोग या अधिकारी या नेता ही अपनी जाति के समुदाय या लोगों की मुसीबत में साथ खड़े होते हैं। ऐसी तमाम सामाजिक व प्रशासनिक खामियों एवं विडम्बनाओं से उबरने की जरूरत योगी सरकार ने महसूस की है। अन्यायी के खिलाफ बिना जाति देखे खड़ा होना चाहिए। संविधान की भी मंशा यही है कि हर नागरिक को अपने समाज की ताकत बनकर आगे बढ़ना चाहिए और ध्यान रहे, यह समाज मात्र एक जाति आधारित न रहे। हर जाति महत्वपूर्ण है और सबका विकास हो, पर जाति आधारित लगाव या राजनीति का दिखावा खत्म होना चाहिए। योगी आदित्यनाथ सरकार का यह कदम भारतीय समाज को जातिवाद की जंजीरों से मुक्त कराने का बड़ा अवसर है। यह केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं, पूरे देश के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन सकता है। अब आवश्यकता है कि अन्य राज्य भी इसे अपनाएं और भारत को सच्चे अर्थों में समानता, न्याय और बंधुत्व की धरती बनाएं।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संपादकीय

वसूली एजेंट बनाया

सुप्रीम कोर्ट ने कहा है, अदालतें धन वसूली के लिए एजेंट के तौर पर काम नहीं कर सकतीं। बकाया की वसूली के लिए गिरफ्तारी की धमकी नहीं दी जा सकती। अदालत ने धनवसूली के लिए आपराधिक मामले दर्ज कराने पर भी नाराजगी व्यक्त की और कहा यह पूरी तरह से दीवानी विवाद है। उप्र में आपराधिक मामले में वसूली को लेकर हुए विवाद में एक व्यक्ति के खिलाफ अपहरण के आरोप लगाए गए थे। अदालत ने गिरफ्तारी से पहले दिमाग लगाने की सलाह देते हुए समझने को कहा कि मामला दीवानी का है, या आपराधिक। आपराधिक कानून का दुरुपयोग न्याय प्रणाली के लिए खतरा पैदा कर रहा है। पुलिस सोय अपराधों में प्राथमिकी दर्ज नहीं करती तो सुप्रीम कोर्ट की 2013 के ललिता कुमार फैसले का पालन न करने पर फटकार भी लगाई जाती है। अदालत ने सुझाव दिया कि राज्य हर जिले में नोड़ल अधिकारी अधिमानतः सेवानिवृत्त जिला जज को नियुक्त कर सकता है जो पुलिस को बताएं कि मामला दीवानी अपराध है, या फौजदारी। बेशक, पीड़ित विवादों के जल्द निपटान के लिए दीवानी विवादों को फौजदारी में दर्ज कराने को उत्सुक रहते हैं। लंबी कानूनी लड़ाई से बचने के उद्देश्य से लोग ऐसा मार्ग चुनने को बेबस होते हैं,

जिससे समय व धन, दोनों की बचत हो सके। धनवसूली के उद्देश्य से होने वाली मार-पिटाई, झड़प, हाथापाई या आपराधिक हरकतों से मुकरा नहीं जा सकता। अगर फौजदारी/दीवानी का फर्क करने के लिए अतिरिक्त चैनल बनाया जाएगा तो विवाद का अवधि और भी लंबी हो सकती है। यह जिम्मा वकीलों के सुपुर्द करना बेहतर हो सकता है क्योंकि कई दफा खुद वकील मामले को गंभीर बनाने और जल्द सुनवाई के लोभ में अनाप-शनाप आरोप जोड़ते जाते हैं। वे सलीके से भांप सकते हैं कि मामला दरअसल, फौजदारी का है, या दीवानी का। दूसरे, बहुत गंभीर मामला न होने पर उसकी मियाद बढ़ाना रोका जाए। निचली अदालतों से लेकर हाई कोर्ट तक लाखों की संख्या में मुकदमे लंबित पड़े.हैं, जिनका निपटान समय पर करने की जरूरत बढ़ती जा रही है। पुलिस को भी अपनी भूमिका मुस्तैदी से निभाने में कोताही नहीं करनी चाहिए। मामला बड़ा हो या बहुत छोटा, आपराधिक कानूनों का दुरुपयोग उचित नहीं कहा जा सकता। दीवानी मामले को फौजदारी बनाने पर अदालतों को सख्ती बरतनी चाहिए और जरूरत होने पर वकीलों या पुलिस पर जुमार्ना भी लगाना चाहिए ताकि ऐसी गलतियां दोहराई न जा सकें।

चिंतन-मनन

ध्वनि तंरगों से रोगें का उपचार

यह बात जान कर आप सभी को आश्चर्य होगा की ध्वनि तंरगें से भी रोगों के उपाच होते है। यह विश्व जीवों से भरा है। ध्वनि तंरगों की टकराहट से सुक्ष्म जीव मर जाते है, रात्री में सूर्य की पराबैगनी किरणां के अभाव में सूक्ष्म जीव उत्पन्न होते है जो ध्वनि तरगों की टकराहट से मर जाते है। ध्वनि तरगों से जीवों के मरने की खोज सर्वप्रथम बर्लिन विश्वविधालय में 1928 में हुई थी। शिकागों के डॉ.ब्राइन ने ध्वनि तरगों से जीवों के नष्ट होने की बात सिद्ध की है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया कि शंख और घण्टा की ध्वनि लहरों से 27 घन फुट प्रति सेकिंड वायु शक्ति वेग से 1200फुट दूरी के बैक्टीरिया नष्ट हो जाते है।

पूर्व में मंदिरों का निमार्ण गुम्वजाकार होता था दरवाजे छोटे होते थे अन्दर की ध्वनि बाहर नही निकलती थी, बाहर की ध्वनि अन्दर प्रवेश नही करती थी। मन्दिर में एक ईष्ट देव की प्रतिमा, एक दीपक, एक घण्टा, शंख होता था। यहां कोई भी रोगी श्रद्धा से जाता घण्टा या शंख ध्वनि कर दीप जलता बैठ कर श्रद्धा से प्रार्थना भक्ति करता, मौन ध्यान करता। रोंगों के ठीक होने की कामना करता वह ठीक हो जाता था। इसका बैज्ञानिक कारण घण्टा - शंख ध्वनि भक्ति प्रार्थना की ध्वनि तंरगें बाहर न जाकर गुम्वजाकार शिखर से टकराकर शरीर से टकराती जिससे शरीर के रोगाणु नष्ट हो जाते रोग ठीक हो जाते। आज भी पुराने मंदिरों में यह होता है। इसलिये सीमित मात्रा में बोलना ठीक है। ध्वनि ज्यादा मात्रा में प्रदूषण का रूप ले लेती है, जो शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से हानिकारक होती है। मौन रहने में ही सुख एवं सुख मय जीवन है।

जितना स्वस्थ होगा पर्यावरण, उतना बेहतर होगा स्वास्थ्य

योगेश कुमार गोयल

हमारा पर्यावरण जितना स्वस्थ होगा, हमारा स्वास्थ्य भी उतना ही अच्छा होगा। इसका सीधा सा अर्थ है कि हम अपने स्वास्थ्य के लिए काफी हद तक पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी हैं और इसलिए पर्यावरणीय स्वास्थ्य की सुरक्षा सुनिश्चित करना हमारी प्रमुख जिम्मेदारी है। दरअसल पर्यावरणीय स्वास्थ्य का मानव स्वास्थ्य से बहुत गहरा संबंध है। उत्तम स्वास्थ्य के साथ प्रकृति और पर्यावरण हमें भोजन, कपड़े इत्यादि जीवित रहने के लिए भी हर चीज प्रदान करते हैं, इसलिए न केवल स्वस्थ रहने के लिए बल्कि धरती पर जीवन का अस्तित्व बचाए रखने के लिए प्रकृति और पर्यावरण का ध्यान रखा जाना बेहद जरूरी है लेकिन गहन चिंता का विषय यही है कि अब प्रकृति के साथ मानव जाति द्वारा किए जा रहे खिलवाड़ के कारण ही वैश्विक पर्यावरण को गंभीर नुकसान हो रहा है, जिसका खामियाजा अब दुनिया के लगभग तमाम देश भुगत भी रहे हैं। विकास के नाम पर प्रकृति के साथ किए जा रहे भयानक खिलवाड़ के ही कारण धरती लगातार गर्म हो रही है। चक्रवाती तूफानों का बढ़ता सिलसिला, बाढ़, सूखा, जंगलों में लगने वाली भीषण आग तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं में तेजी, ये सब पर्यावरण का स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण जलवायु में हो रहे बदलावों का ही परिणाम हैं। वैश्विक तापमान में निरंतर हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का बिगड़ता मिजाज समस्त मानव जाति के लिए गंभीर चिंता बनता जा रहा है। भारत के ही संदर्भ में देखें तो अब सर्दियां कम हो रही हैं और गर्म दिन बढ़ रहे हैं, बारिश के मौसम में भी कहीं सूखे जैसी स्थिति बनी रहती है तो कहीं चारों तरफ तबाही ही तबाही नजर आती है। इस वर्ष भी हिमाचल, उत्तराखण्ड, जम्मू कश्मीर, पंजाब, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश से लेकर देश के अनेक हिस्सों में जल तबाही का भयानक नजारा देखा जाता रहा है। पर्यावरण को हो रहे गंभीर नुकसान की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने, पर्यावरण की स्थिति के बारे में सार्वजनिक जागरूकता बढ़ाने तथा लोगों को इसे और बदतर होने से रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 26 सितम्बर को एक विशेष थीम के साथ 'विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है। 2025 के विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस का विषय है 'स्वच्छ वायु, स्वस्थ लोग', जो स्वच्छ वायु और अच्छे स्वास्थ्य के बीच सीधे संबंध पर जोर देता है। प्रदूषकों से मुक्त वायु श्वसन संबंधी बीमारियों को सीमित करने और लोगों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। 2024 में यह दिवस 'पर्यावरणीय स्वास्थ्यः आपदा जोखिम न्यूनीकरण और जलवायु परिवर्तन शमन तथा अनुकूलन के माध्यम से लचीले समुदायों का निर्माण' थीम के साथ मनाया गया था जबकि 2023 की थीम थी 'वैश्विक पर्यावरणीय सार्वजनिक स्वास्थ्यः हर दिन हर किसी के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए खड़ा होना' थीम के साथ मनाया गया था और 2022 की थीम थी 'सतत विकास लक्ष्यों के कार्यान्वयन के लिए पर्यावरणीय स्वास्थ्य प्रणालियों को मजबूत करना', जिसका अर्थ था पर्यावरणीय स्वास्थ्य तंत्र को इस प्रकार मजबूत बनाया जाए ताकि लंबे समय तक पर्यावरण और मानव की लंबी उम्र तथा अच्छी सेहत के लक्ष्य को पूरा किया जा सके। इस दिन पर्यावरण के कारण मनुष्यों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले हानिकारक प्रभावों के बारे में जागरूकता फैलाई जाती है। प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग से उत्पन्न खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाना अब पहले के मुकाबले ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। दरअसल पर्यावरणीय परिस्थितियों को बिगड़ने से रोकने के लिए कुछ भी नहीं करके हम न केवल पर्यावरण को बल्कि स्वयं को भी खतरे में डाल रहे हैं क्योंकि हमारा स्वास्थ्य हमारे पर्यावरण से जुड़ा है और पर्यावरण को हो रहे निरंतर नुकसान से मानव जीवन को भी नुकसान झेलना पड़ता है। बढ़ते प्रदूषण और प्रकृति से खिलवाड़ के कारण ग्रीनहाउस प्रभाव, जलवायु परिवर्तन, शहरीकरण इत्यादि के कारण हमारे भोजन, पानी और वायु की गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव पड़ता है, जिसके कारण लोगों को सांस लेने में तकलीफ, त्वचा संबंधी रोग सहित कई तरह की गंभीर बीमारियां भी हो रही हैं। पर्यावरण का स्वास्थ्य खराब होने से हमारा स्वास्थ्य भी खराब हो रहा है, जिसका सीधा असर हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता पर पड़ता है। ऐसी ही समस्याओं के मद्देनजर लोगों में पर्यावरणीय स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ाने के लिए 'इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ एनवायरनमेंटल हैल्थ' (आईएफईएच) द्वारा 26 सितम्बर 2011 को विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस की शुरूआत की गई थी। इसकी शुरूआत 2011 में डेनपास, बाली (इंडोनेशिया) में हुए पर्यावरण स्वास्थ्य शिखर सम्मलेन और आईएफईएच की बैठक के दौरान हुई थी और इस दिन को दुनियाभर में चिन्हित करने का मुख्य उद्देश्य लोगों की भलाई और स्वास्थ्य की तरफ उनका ध्यान आकर्षित करना था। आईएफईएच वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान के आदान-प्रदान पर केन्द्रित है और इसका बड़ा हिस्सा वैज्ञानिक एवं तकनीकी के लिए कार्य करता है। पूर्ण रूप से पर्यावरण और स्वास्थ्य कार्यों को लेकर समर्पित आईएफईएच पर्यावरण स्वास्थ्य विज्ञान और प्रशासन से संबंधित विषयों पर चर्चा करता है और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर सूचना का आदान-प्रदान करता है। पर्यावरण सुरक्षा कार्यबल के समर्थन के साथ आईएफईएच स्वास्थ्य और हरित पुनर्प्राप्ति में सहयोग करता है। यह उन राष्ट्रीय संस्थानों के लिए एक महासंघ है, जो पर्यावरण स्वास्थ्य से संबंधित मुद्दों पर कार्य करते हैं। 2018 में इस फेडरेशन ने 40 देशों को पूर्ण सदस्यों के तौर पर जगह दी थी। आईएफईएच के अध्यक्ष सुजान पैक्सो के अनुसार दुनिया को यह समझने की आवश्यकता है कि पर्यावरण, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था के बीच एक गहन संबंध है। बहरहाल, यह समझना बहुत जरूरी है कि आखिर पर्यावरण स्वास्थ्य है क्या? किसी क्षेत्र विशेष के रासायनिक, भौतिक और सांस्कृतिक वातावरण को उसके पर्यावरणीय स्वास्थ्य के रूप में जाना जाता है और किसी क्षेत्र का पर्यावरणीय स्वास्थ्य वहां की वायु की खराब गुणवत्ता, पर्यावरण में विविधता का नुकसान, रासायनिक असमानताएं तथा ऐसे सभी कारक, जो किसी क्षेत्र के पर्यावरणीय स्वास्थ्य को बिगाड़ते हैं, से प्रभावित होता है। किसी क्षेत्र के पर्यावरणीय स्वास्थ्य को मापने में पर्यावरणीय स्वास्थ्य संकेतक, प्रदूषण का स्तर, पारिस्थितिकी में विविधता, स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता, स्वच्छता की शर्तें, कृषि उत्पादकता इत्यादि प्रमुख भूमिका निभाते हैं। पर्यावरणीय स्वास्थ्य की देखभाल के महत्व को दशार्ता विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस वास्तव में न केवल पारिस्थितिक स्वास्थ्य की सुरक्षा की वकालत करता है बल्कि मानव स्वास्थ्य पर पर्यावरणीय स्वास्थ्य के पड़ने वाले प्रभाव और संबंध को समझने की जरूरत पर भी जोर देता है।

मुद्दाः शोधार्थियों को प्रोत्साहन की कमी

गिरीश पांड़े

पिछले एक दशक में भारत की ऊर्जा यात्रा उल्लेखनीय परिवर्तन की साक्षी बनी है। तीव्र क्षमता वृद्धि, सौर और पवन ऊर्जा में वैश्विक नेतृत्व और नवोन्मेषी फ्लैगशिप कार्यक्रमों के साथ भारत स्वच्छ और आत्मनिर्भर ऊर्जा की ओर तेजी से अग्रसर है। भारत में स्वच्छ ऊर्जा न केवल कार्बन उत्सर्जन को कम कर रही है, बल्कि हरित रोजगार भी पैदा कर रही है। ऊर्जा की पहुंच में सुधार हो रहा है, और वैश्विक जलवायु नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत की भूमिका दिनोंदिन मजबूत हो रही है।

पिछले महीने गुजरात के हंसलपुर में एक कार्यक्रम के दौरान हरित गतिशीलता योजनाओं का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि स्वच्छ ऊर्जा और स्वच्छ गतिशीलता एक वैश्विक केंद्र के रूप में भारत के भविष्य को आकार देंगे। मार्च, 2014 से जून, 2025 तक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता लगभग तीन गुना बढ़ कर 226.8 गीगावॉट हो गई है। सौर ऊर्जा उत्पादन 1 लाख 8 हजार गीगावॉट प्रति घंटे से भी ज्यादा हो गया हैङ्क जिससे भारत जापान को पीछे छोड़ते हुए दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सौर ऊर्जा उत्पादक बन गया है।

जुलाई, 2025 की स्थिति के अनुसार देश में अब पचास प्रतिशत स्थापित बिजली क्षमता गैर-पारंपरिक ईंधन स्त्रोतों से चालित है, और भारत ने यह लक्ष्य निर्धारित समय से पांच वर्ष पूर्व ही हासिल कर लिया है। यह उपलब्धि जहां पेरिस समझौते के अंतर्गत नेशनल डिटरमाइंड कांट्रिब्यूशन (एनडीसी) की प्रतिबद्धता के लिए निर्धारित लक्ष्य से पांच साल पहले ही प्राप्त कर ली गई वहीं देश जलवायु परिवर्तन की रोकथाम और टिकाऊ विकास के प्रति संकल्पित है, और स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने की गति लगातार बढ़ रही है। इसमें सौर, पवन, पनबिजली, जैव एवं परमाणु ऊर्जा शामिल हैं। कुल 484.82 गीगावॉट स्थापित क्षमता में इन नवीकरणीय स्त्रोतों की हिस्सेदारी 242.78 गीगावॉट हो गई। यह किसी भी विकासशील देश के लिए बहुत दुर्लभ मामला है, जिसने अपने लिए निर्धारित लक्ष्य से पहले ही ऐसी सफलता प्राप्त की। आज गैर-जीवाश्म स्त्रोत कुल बिजली उत्पादन का 49प्र. हिस्सा दे रहे हैं। इसका श्रेय उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन-पीएलआई योजना-जैसे क्रांतिकारी प्रयासों को जाता है। यह कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन खत्म करने के वैश्विक प्रयासों के लिए देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि है। जलवायु परिवर्तन की चुनौती का सामना करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों को अपनाना इसलिए और अनिवार्य हो गया है कि वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में अकेले जीवाश्म ईंधनों की हिस्सेदारी करीब तीन-चौथाई है।

भारत की रणनीति भी बहुत व्यावहारिक है। वह जीवाश्म ईंधनों से एकाएक पीछा नहीं छुड़ा रहा और कोयला एवं गैस आधारित संयंत्र अभी भी प्रमुख ऊर्जा आपूर्तिकर्ता बने हुए हैं। चूंकि भारत ने 2030 तक गैर-जीवाश्म क्षमता को 500 गीगावॉट तक ले जाने और 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया है, तो उसे ग्रिड आधुनिकीकरण, ऊर्जा भंडारणङ्क क्लीन टेक मैटीरियल रिसाइक्लिंग और ग्रीन हाइड्रोजन जैसे आधुनिक ईंधनों में निवेश बढ़ाना ही होगा।

प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन कम होने के बावजूद स्वच्छ ऊर्जा को अपनाने में हुई यह प्रगति मूल्यवान है, और भारत जी-20 के उन चंद देशों में शामिल है, जो जलवायु परिवर्तन की रोकथाम के अपने संकल्प को पूरा करने की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। सोलर पार्क और विंड कारिडोर स्वच्छ ऊर्जा में निवेश को लुभाने में भी सहायक बने हैं। उल्लेखनीय है कि बीते दशक में सौर एवं पवन ऊर्जा की लागत 80 प्रतिशत से भी अधिक घट गई है। इसके चलते कई क्षेत्रों में सौर-पवन ऊर्जा की लागत कोयले और गैस से बनने वाली बिजली से भी किफायती हो गई है। नवीकरणीय ऊर्जा कीमतों में स्थायित्व प्रदान करने के साथ ही यह ऊर्जा स्वतंत्रता भी सुनिश्चित करती है। एक बार इंस्टाल होने के बाद उसमें लागत लगभग नगण्य रह जाती है। कॉप शिखर सम्मेलनों में विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों के प्रति की गई वचबद्धता भी पूरी

नहीं हो रही है, इस बाबत भारत कॉप शिखर सम्मेलनों में इस मुद्दे को बराबर उठाता रहा है। अमेरिका में अभी भी 60 प्रतिशत से अधिक बिजली जीवाश्म इृधनों से पैदा हो रही है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा उत्सर्जक है, जिसकी आधी से अधिक बिजली अभी भी कोयले से बनती है। इसलिए विश्व की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं और सबसे बड़े कार्बन उत्सर्जक देश के तौर पर अमेरिका और चीन की जिम्मेदारी है कि अपने उत्सर्जन में तेजी से कमी लाएं, विकासशील देशों को वित्त और तकनीकी सहयोग दें, स्वच्छ ऊर्जा नवाचार साझा करें और प्रतिस्पर्धा से ऊपर उठ कर वैश्विक सहयोग को बढ़ाएं। (लेख में विचार निजी हैं)

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप की हत्या की साजिश रचने वाला अमेरिकी नागरिक दोषी करार

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक अदालत ने 59 वर्षीय रयान राउथ को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की हत्या की कोशिश का दोषी करार दिया। सितंबर 2024 में फ्लोरिडा के वेस्ट पाम बीच स्थित ट्रंप इंटरनेशनल गोल्फ क्लब में हुई घटना में वह राइफल लेकर झाड़ियों में छिपा मिला था। अभियोजन पक्ष ने बताया कि राउथ ने करीब 10 घंटे तक इंतजार किया और ट्रंप पर निशाना साधा, लेकिन एक सीक्रेट सर्विस एजेंट ने उसे गोली चलाते हुए देख लिया था। राउथ बिना गोली चलाए भाग गया, लेकिन कुछ घंटों बाद हाईवे पर गिरफ्तार हो गया। मौके से एसकेएस राइफल, बुलेटप्रूफ प्लेटें और कैमरा बरामद हुआ। राउथ पर हत्या की कोशिश, संघीय एजेंट को बाधा पहुंचाने और हथियार रखने सहित पांच आरोपों में दोष साबित हुआ। उसे आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है।

कोस्टा रिका के राष्ट्रपति रोड्रिगो चावेस को संसद में बड़ी राहत, सरकारी वकील बोले- जांच जारी रहेगी

सैन जोस, एजेंसी। मध्य अमेरिकी देश कोस्टा रिका के राष्ट्रपति रोड्रिगो चावेस को बड़ी राहत मिली है। संसद में उनकी प्रतिरक्षा समाप्त करने के प्रस्ताव पर मतदान कराया गया। मंगलवार को उनके विरोधी खेमे को इस प्रयास में असफलता हाथ लगी। विपक्ष को 38 वोटों की जरूरत थी, लेकिन केवल 34 वोट मिले। 21 ने प्रस्ताव का विरोध किया और दो अनुपस्थित रहे। यह देश के इतिहास में पहली बार था कि किसी वर्तमान राष्ट्रपति के खिलाफ ऐसे प्रस्ताव पर मतदान हुआ। चावेस पर आरोप है कि उन्होंने एक वीडियो निर्माता पर दबाव डाला कि वह अनुबंध की राशि का हिस्सा उनके पूर्व अभियान सलाहकार को दे। अटॉर्नी जनरल कार्लो डियाज़ ने कहा कि जांच जारी रहेगी और चावेस की प्रतिरक्षा उनके कार्यकाल (मई तक) समाप्त होने के बाद हट सकती है।

न्यूयॉर्क के जाम में फंसने पर मैक्रों ने ट्रंप को किया फोन

न्यूयॉर्क, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के उच्चस्तरीय सत्र के दौरान न्यूयॉर्क सिटी की सड़कों पर लगे जाम में फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों फंस गए। पुलिस ने उनके दल को रोक दिया, क्योंकि राष्ट्रपति ट्रंप के काफिले के लिए सड़कें बंद थीं। मैक्रों से एक पुलिस अधिकारी ने कहा, मिस्टर प्रेसिडेंट माफ कीजिए। अभी सब कुछ बंद है। ट्रंप का काफिला गुजर रहा है, जिससे ऐसा हुआ है। इसके बाद मैक्रों ने तुरंत ट्रंप को फोन किया और कहा, आप कैसे हैं? आप जानते हैं, मैं सड़क पर फंस गया हूं, क्योंकि आपके लिए सब बंद है। जब ये बातचीत हो रही थी, तब तक ट्रंप का काफिला जा चुका था। हालांकि मैक्रों कार में फिर नहीं बैठे। वह करीब आधे घंटे तक टहलते रहे और ट्रंप से फोन पर बात करते रहे।

श्रीलंका के पूर्व आव्रजन प्रमुख को अवमानना के आरोप में 2 साल कैद

कोलंबो, एजेंसी। श्रीलंका के पूर्व आव्रजन प्रमुख हर्ष इलुकपिटिया को अवमानना के आरोप में सुप्रीम कोर्ट ने दो साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। इलुकपिटिया पर पर्यटक वीजा प्रक्रिया संबंधी निर्देश की अवहेलना करने का आरोप है। इस मामले में वह पिछले साल 25 सितंबर से हिरासत में थे। तीन जजों की पीठ ने मंगलवार को इलुकपिटिया को आउटसोर्स इलेक्ट्रॉनिक पर्यटक वीजा-ऑन-अराइवल प्रणाली को रोकने और पुरानी व्यवस्था पर लौटने, अदालत के जुलाई 2024 के आदेश को लागू करने में विफल रहने का दोषी ठहराया।

भ्रष्टाचार के मामले में चीन के शीर्ष वैज्ञानिक हिरासत में

बीजिंग, एजेंसी। चीन में भ्रष्टाचार के एक मामले में शीर्ष वैज्ञानिक यू फैक्सिन को हिरासत में लिया गया है। यू सैन्य उपकरणों के लिए सेमीकंडक्टर चिप्स बनाने में विशेषज्ञता रखते हैं। वह हांग्जो स्थित झेजियांग विवि के एरोनॉटिक्स एंड एस्ट्रोनॉटिक्स स्कूल में प्रोफेसर भी हैं। यू की कंपनी झेजियांग ग्रेट माइक्रोवेव टेक्नोलॉजी ने एक बयान में कहा, उसे रविवार को पता चला कि उन्हें हुआंगशी के पर्यवेक्षी आयोग ने हिरासत में लिया है। हालांकि, कंपनी ने यह नहीं बताया कि उन पर क्या आरोप हैं।

गलत आरोप झेलने वाले दो अश्वेतों को 1.50 लाख डॉलर

बोस्टन , एजेंसी। अमेरिका के बोस्टन में साल 1989 में एक हाई-प्रोफाइल हत्या हुई थी। इस मामले में गलत तरीके से आरोपी बनाए गए दो अश्वेत पुरुषों, एलन स्वानसन और विली बेनेट को शहर से 1.5 लाख डॉलर का मुआवजा मिला है। कैरोल स्टुअर्ट की हत्या उसके पति चार्ल्स स्टुअर्ट ने की थी, लेकिन उसने झूठा आरोप एक अश्वेत हमलावर पर लगाया।

तुर्किये के राष्ट्रपति ने यूएन में फिर कश्मीर मुद्दा उठाया

कहा- भारत-पाकिस्तान सुरक्षा परिषद की मदद लें, 2019 से 6 बार जिक्र कर चुके

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। तुर्किये के राष्ट्रपति रेसेप तईप एर्दोगन ने मंगलवार को न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) के 80वें सत्र में एक बार फिर जम्मू-कश्मीर का मुद्दा उठाया। उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच बातचीत के जरिए कश्मीर मुद्दे को हल करने की वकालत की। एर्दोगन ने कहा, हमें खुशी है कि अप्रैल में भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के बाद सीजफायर हुआ। कश्मीर के हमारे भाइयों और बहनों के लिए, इस मुद्दे को यूएन सुरक्षा परिषद की मदद से सुलझाना चाहिए। भारत पहले भी ऐसी टिप्पणियों को खारिज कर चुका है। भारत का कहना है कि, जम्मू-कश्मीर हमारा आंतरिक मामला है। एर्दोगन 2019 से हर साल (2024 छोड़कर) यूएन में कश्मीर का जिक्र करते रहे हैं, जिसमें वे पाकिस्तान के तरफ अपना समर्थन दिखाते हैं।

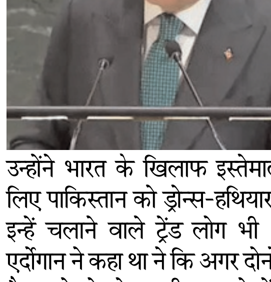

तुर्किये ने भारत-पाक संघर्ष के दौरान पाकिस्तान का साथ दिया : एर्दोगन ने भारत-पाक संघर्ष के बाद 17 मई,2025 को कश्मीर मुद्दे को लेकर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से बात की थी। उन्होंने खुलकर पाकिस्तान का समर्थन किया था। एर्दोगन ने कहा था कि वो कश्मीर मुद्दा सुलझाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करेंगे। उन्होंने भारत के खिलाफ इस्तेमाल के लिए पाकिस्तान को ड्रोन्स-हथियार और इन्हें चलाने वाले ट्रेंड लोग भी भेजे। एर्दोगान ने कहा था ने कि अगर दोनों देश तैयार हो तो वो कश्मीर मामले में रोल निभाएंगे। हम शांति चाहते हैं, हम दो पड़ोसियों के बीच कोई तनाव नहीं चाहते। वही, इस्तांबुल में 24 मई,2025 को शहबाज शरीफ और एर्दोगन से मुलाकात की थी। इस दौरान एर्दोगन ने पाकिस्तान को खुफिया जानकारी, टेक्नोलॉजिकल सपोर्ट, एनर्जी, ट्रांसपोर्ट और डिफेंस सेक्टरों में सहयोग देने का बाद कही थी।

भारत बोला था- जम्मू-कश्मीर हमारा अभिन्न अंग : एर्दोगन की टिप्पणी पर भारत ने कड़ी आपत्ति जताई थी। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा था, जम्मू-कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। किसी दूसरे देश को इस पर टिप्पणी करने का कोई अधिकार नहीं है। उन्होंने कहा, किसी देश के आंतरिक मामलों पर टिप्पणी करने के बजाय, यह अच्छा होता कि सीमा पार आतंकवाद को रोकने पर बात करते, जो जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए सबसे बड़ा खतरा बनी हुई है।

आईआईसी ने भारत से कश्मीरी कैदियों को छोड़ने को कहा : इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के जम्मू-कश्मीर संपर्क समूह की बैठक 23 सितंबर को महासभा के दौरान हुई। बैठक में अजरबैजान, पाकिस्तान, तुर्किये, सऊदी अरब और नाइजर के विदेश मंत्रियों और वरिष्ठ अधिकारियों ने हिस्सा लिया। ओआईसी महासचिव हिसेन ब्राहिम ताहा ने इसकी अध्यक्षता की। पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ के विशेष सहायक सैयद तारिक फातमी ने भारतीय हिस्से वाले जम्मू-कश्मीर की स्थिति पर जानकारी दी। समूह ने भारत-पाक के बीच सीजफायर को अच्छा कदम बताया। साथ ही, जोर दिया कि कश्मीर मुद्दे का हल करने से ही स्थायी शांति संभव है। इसके अलावा प्रमुख कश्मीरी नेता शब्बीर अहमद शाह को लगातार हिरासत में रखने और जमानत न देने पर चिंता जताई। समूह ने ओआईसी के मानवाधिकार आयोग से आजाद जम्मू-कश्मीर और कंट्रोल लाइन पर जांच करवाने की मांग की ताकि वहां की स्थिति की सटीक जानकारी मिल सके। वहीं, समूह ने भारत से आईओजेके में लोगों की स्थिति में सुधार करने, सभी कश्मीरी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने, गैरकानूनी कश्मीरी राजनीतिक दलों पर प्रतिबंध हटाने, सभी कठोर कानूनों को हटाने और जम्मू-कश्मीर पर यूएन सुरक्षा परिषद के प्रस्तावों को लागू करने की मांग की।

गाजा में इजराइली हमलों की निंदा की : कश्मीर के अलावा एर्दोगन ने अपने भाषण में इजराइल के गाजा में हमले की निंदा की। उन्होंने इसे जीवन का खात्मा करने वाला बताया। एर्दोगन ने कहा, हम यहां बैठकर बात कर रहे हैं, वहां, गाजा में एक नरसंहार जारी है। गाजा में 23 महीनों से हर घंटे एक बच्चे की मौत हो रही है। ये सिर्फ आंकड़े नहीं, मासूम जिंदगियां हैं।

फिलिस्तीन को मान्यता देने की मांग की : एर्दोगन ने दुनिया से फिलिस्तीन के समर्थन में खड़े होने और इंसानियत के नाम पर उसे मान्यता देने की मांग की। उन्होंने उन देशों को शुक्रिया कहा, जिन्होंने फिलिस्तीन को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता दे दी है।

ट्रंप से बात के बाद बोलीं उर्सुला- चरणबद्ध तरीके से टैरिफ हटेगा, सदस्यों को मानना ही होगा

न्यूयार्क, एजेंसी। 80वीं संयुक्त राष्ट्र महासभा की बैठक को संबोधित करने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ने यूरोपीय संघ की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन के साथ भी बातचीत की। इस वार्ता के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी उस बात को फिर दोहराया कि संयुक्त राष्ट्र कभी अपनी क्षमता का पूरा इस्तेमाल नहीं कर सका। उन्होंने कहा, मैंने सात युद्ध रोके और संयुक्त राष्ट्र ने मेरी कोई मदद नहीं की। मुझे कभी फोन तक नहीं किया गया... किसी दिन यूएन वही करेगा जो मैं कर रहा हूं।

संयुक्त राष्ट्र ने हमारी मदद नहीं की : उन्होंने कहा, अगर संयुक्त राष्ट्र वाकई अपना काम कर रहा है, तो हमें कोई युद्ध नहीं करना चाहिए... आपके पास एक बेहतरीन अवधारणा हो सकती है, लेकिन अगर आपके पास सही लोग नहीं हैं तो निर्णय नहीं होते। हमने इन सभी युद्धों को (समाधान किया) है। संयुक्त राष्ट्र ने हमारी मदद नहीं की... उन्होंने कुछ नहीं किया, जबकि इन समस्याओं का समाधान उन्हें (यूएन) को करना चाहिए। चरणबद्ध तरीके से टैरिफ हटाने का फैसला, ईयू सदस्यों को प्रतिबंधों पर सहमत होना होगा रूस पर सख्त कार्रवाई और टैरिफ के मुद्दे पर यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला

वॉन डेर लेयेन ने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं... हमने रूस से गैस की आपूर्ति में पहले ही भारी कटौती कर दी है... हम यूरोपीय संघ को आने वाली तेल आपूर्ति पर टैरिफ लगाना चाहते हैं... हम इससे पहले ही बाहर निकलना चाहते हैं। साल के अंत तक, हमने चरणबद्ध तरीके से टैरिफ हटाने का फैसला कर लिया है। अब हमारे पास प्रतिबंधों का प्रस्ताव है। सदस्य देशों को इस पर सहमत होना होगा।

कोलंबिया में सोने की खान में फंसे 20 से अधिक श्रमिक : बोगोटा , एजेंसी। दक्षिण अमेरिकी देश कोलंबिया के उत्तरी भाग में एक सोने की खान धंसने के बाद 20 से अधिक श्रमिक फंस गए हैं। कनाडा की खनन कंपनी के अनुसार, मुख्य शाफ्ट ढहने के बाद में कंपनी के पांच कर्मचारी फंस गए। बचावकर्मी फंसे खनिकों तक भोजन और पानी पहुंचा रहे हैं और उन्हें बुधवार तक सतह पर लाने की उम्मीद है। राष्ट्रीय खनन एजेंसी के अनुसार, सेगोविया नगर में 25 लोग फंसे हैं।

इटली की पीएम मेलोनी बोलीं- जंग खत्म कराने में भारत अहम भूमिका निभा सकता है

रोम, एजेंसी। इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी ने कहा कि भारत दुनिया में चल रहे संघर्षों को सुलझाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शांति प्रयासों की सराहना की। मेलोनी ने बताया कि उन्होंने हाल ही में मोदी से वैश्विक और क्षेत्रीय मुद्दों पर बातचीत की, जिसमें यूक्रेन युद्ध और भारत-इटली रणनीतिक साझेदारी पर चर्चा हुई। दोनों नेताओं ने निवेश, रक्षा, सुरक्षा, शिक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग को बढ़ाने पर जोर दिया।

इटली की पीएम ने फिलिस्तीन मुद्दे पर भी रुख साफ किया और कहा कि उनका देश केवल तभी फिलिस्तीन को मान्यता देगा जब हमास सरकार में शामिल न हो और सभी इजराइली बंधक रिहा किए जाएं। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय दबाव हमास पर होना चाहिए, न कि इजराइल पर।

ताइवान ने चीनी सैन्य जहाज का पता लगाया : ताइपेई, एजेंसी। ताइवान के रक्षा मंत्रालय ने बुधवार सुबह करीब छह बजे (स्थानीय समय) अपने जल क्षेत्र के आसपास एक चीनी सैन्य जहाज का पता लगाया। आमतौर पर पीएलए के विमान दिखते हैं, लेकिन इस बार कोई भी विमान नहीं दिखा। मंत्रालय ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, आज सुबह छह बजे ताइवान के आसपास पीएलए के नौसेना के एक जहाज का पता चला। ताइवान के सशस्त्र बलों ने स्थिति की निगरानी की और प्रतिक्रिया दी। हवाई मार्ग पर पीएलए का कोई भी विमान सक्रिय नहीं था, इसलिए हवाई मार्ग का कोई नक्शा या चित्र नहीं बन सका।

हॉन्गकॉन्ग पहुंचा साल का सबसे शक्तिशाली तूफान, सुपर टाइफून रागासा से ताइवान में 14 मौतें

हॉन्गकॉन्ग, एजेंसी। हॉन्गकॉन्ग में दो दिन से सुपर टाइफून रागासा के चलते भारी बारिश हो रही है। रॉयटर्स के मुताबिक ये साल 2025 का सबसे खतरनाक तूफान है। इसका असर ताईवान और चीन तक देखने को मिल रहा है। ताईवान में तूफान से 14 लोगों की मौत हो गई, जबकि कई लोग घायल हुए हैं।

हॉन्गकॉन्ग में हवाएं 200 किमी/घंटा की रफ्तार से चल रहीं हैं, हॉन्गकॉन्ग आब्जरवेटरी ने चेतावनी दी है कि अगले कुछ घंटों में तूफान घनी आबादी वाले शहरों के सबसे करीब होगा। साथ ही समुद्र का स्तर दोपहर तक 4 मीटर तक पहुंच सकता है। वहीं, हॉन्गकॉन्ग के फुलरटन होटल में समुद्र का पानी घुस गया, जिससे भारी नुकसान हुआ। त्सेंग क्वान और लांताउ द्वीप पर हवाई अड्डे के पास बाढ़ ने समुद्र तटों को तबाह कर

दिया। चीन के मौसम ब्यूरो ने रागासा को तूफानों का राजा बताया। रागासा एक फिलिपीनी शब्द है, जिसका मतलब जुनूनी होता है।

हॉन्गकॉन्ग में उड़ानें रद्द, ताइवान में संचार सेवाएं ठप हुई : हॉन्गकॉन्ग एयरपोर्ट पर भी टाइफून का असर दिखा। सुरक्षा कारणों से सैकड़ों उड़ानें रद्द करनी पड़ीं और हजारों यात्री फंसे रहे। शहर की मेट्रो और बस सेवाएं भी बाधित हुईं। कई इलाकों में पानी भरने से दुकानें और घरों को नुकसान पहुंचा है। यहां प्रशासन ने लोगों को घरों से बाहर न निकलने और सुरक्षित स्थानों पर रहने की सलाह दी है। ताइवान में स्थिति और भी गंभीर है। यहां भारी बारिश से लैंडस्लाइड और जलभराव की घटनाएं सामने आईं। राहत और बचाव कार्य लगातार जारी है। खराब मौसम की वजह से सेना और बचाव दल को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। कई इलाकों में बिजली और संचार सेवाएं ठप हो गई हैं, जिससे स्थानीय लोगों को भारी परेशानी हो रही है।

चीन ने 7.7 लाख लोगों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया : चीन के गुआंगडोंग प्रांत के तट की ओर बढ़ते हुए इसकी सुपर टाइफून तीव्रता बरकरार रहने की उम्मीद है, जहां 125 मिलियन से अधिक लोग रहते हैं, तथा जहां दोपहर (0400 GMT) से इसके पहुंचने की उम्मीद है।

चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में 7.7 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया। ग्वांगझोउ और शेनझेन जैसे बड़े शहरों में स्कूल, परिवहन और हवाई सेवाएं बंद हैं। समुद्र में 2.8 मीटर तक ऊंची लहरों की चेतावनी दी गई है।

जर्मनी ने भारतीय कामगारों को आने का न्योता दिया

बर्लिन, एजेंसी। भारत में जर्मन राजदूत फिलिप एकरमैन ने सोशल मीडिया और एक वीडियो मैसेज के जरिए कहा कि जर्मनी भारतीय प्रतिभाओं के लिए बेहतर और स्थिर विकल्प है। एकरमैन ने बताया कि जर्मनी की इमिग्रेशन पॉलिसी अचानक नहीं बदलती, बल्कि यह भरोसेमंद है। उन्होंने इसकी तुलना जर्मन कार से की, जो भरोसमंद, एडवांस होती हैं। एकरमैन ने कहा कि हम कड़ी मेहनत में यकीन करते हैं और अपनी बेस्ट जॉब, बेस्ट लोगों को देना चाहते हैं। एकरमैन ने यह भी कहा कि भारतीय जर्मनी में सबसे ज्यादा कमाई करने वालों में गिने जाते हैं। उन्होंने बताया कि जहां एक औसत जर्मन कामगार 3,945 यूरो (4.13 लाख रुपए) महीना कमाता है, वहीं भारतीय मूल के पेशेवर औसतन 5,359 यूरो (5.60 लाख रुपए)

कमाते हैं। राजदूत ने कहा कि इसका मतलब है भारतीय न सिर्फ मेहनती हैं बल्कि जर्मन समाज और अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान भी देते हैं।

जर्मनी को करीब 3 लाख प्रवासियों की जरूरत : जर्मनी को यह पहल इसलिए भी करनी पड़ रही है क्योंकि वहां की आबादी तेजी से बूढ़ी हो रही है। एक्सपर्ट्स के मुताबिक अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए 2040 तक हर साल लगभग 2.88 लाख प्रवासियों की जरूरत होगी। इस कमी को पूरा करने के लिए जर्मनी ने 2024 से पेशेवर वीजा की संख्या 10 % से ज्यादा बढ़ाने और भारतीयों के लिए खास मौके दिए जाने की घोषणा की है। पिछले साल जर्मन सरकार ने 2025 में 2 लाख पेशेवर वीजा जारी करने का वादा किया था, जिनमें से 90,000 भारतीयों के लिए तय किए गए। यह संख्या पहले की सीमा 20,000 से कई गुना ज्यादा है। इस समय तकरीबन 1.3 लाख भारतीय पेशेवर जर्मनी में रहकर काम कर रहे हैं और उनकी औसत कमाई स्थानीय कामगारों से कहीं अधिक है।

अमेरिका में मोहम्मद यूनुस का पुरजोर विरोध, काफिले पर अंडे फेंके गए : न्यूयॉर्क , एजेंसी। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के प्रमुख प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस को न्यूयॉर्क में विरोध का सामना करना पड़ा। शेख हसीना की अवामी लीग के नेताओं व कार्यकर्ताओं ने यूनुस के काफिले पर अंडे फेंके और उनके सहयोगी अख्तर हुसैन को आतंकवादी कहकर नारेबाजी की। हुसैन 2024 में हसीना विरोधी छात्र आंदोलन के नेता रहे थे। हालांकि यूनुस के साथ आए बीएनपी और जमात-ए-इस्लामी नेताओं को निशाना नहीं बनाया गया। यूनुस ने अमेरिका के विशेष दूत सर्जियो गोर से मुलाकात में कहा कि फरवरी 2026 में स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण चुनाव कराए जाएंगे। बैठक में व्यापार, क्षेत्रीय सहयोग, सार्क पुनर्जीवन, रोहिंग्या संकट और दुष्प्रचार जैसे मुद्दों पर चर्चा हुई। यूनुस ने रोहिंग्या शरणार्थियों के लिए निरंतर अमेरिकी सहयोग की मांग की।

संयुक्त राष्ट्र महासभा में कोलंबिया के राष्ट्रपति ने की ट्रंप के खिलाफ आपराधिक जांच की मांग की

न्यूयॉर्क, एजेंसी। कोलंबिया के राष्ट्रपति गुस्तावो पेट्रो ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र महासभा की वार्षिक बैठक में भाषण देते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और अन्य अधिकारियों के खिलाफ आपराधिक जांच की मांग कर दी। पेट्रो ने यह मांग इस महीने कैरेबियाई सागर में नावों पर हुए अमेरिकी हमलों के बाद उठाई, जिनमें कई लोगों की मौत हुई थी। बता दें कि अमेरिका ने इन हमलों को लेकर दावा किया था कि उसके निशाने पर मादक पदार्थ ले जा रहे तस्कर गिरोह थे और नावों के जरिए तस्करी ही हो रही थी। अमेरिकी अधिकारियों के मुताबिक, दो सितंबर को हुए पहले हमले में 11 लोग मारे गए थे। इसके बाद 16 सितंबर को दूसरे हमले में तीन लोगों की मौत हुई और फिर शुक्रवार को तीसरे हमले में भी तीन लोगों की जान गई। अमेरिका ने इन सभी नावों में ड्रग्स होने की बात कही थी।

क्या बोले कोलंबिया के राष्ट्रपति : कोलंबियाई राष्ट्रपति ने अमेरिका की तरफ से कैरिबियाई सागर में तीन हमलों की निंदा करते हुए कहा कि इन नावों पर सवार लोग वेनेजुएला के ट्रेन डे अरागुआ गिरोह से जुड़े नहीं थे, जैसा कि ट्रंप प्रशासन ने दावा किया था। उन्होंने कहा, आपराधिक कार्रवाई उन अधिकारियों पर शुरू होनी चाहिए, चाहे वह आदेश देने वाला सबसे ऊंचा पदाधिकारी ही क्यों न हो- यानी राष्ट्रपति ट्रंप। पेट्रो ने अमेरिका के मादक पदार्थ ले जा रही नावों को निशाना बनाने का दावा भी खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि इन नावों

में सवार यात्री महज गरीब लातिन अमेरिकी युवा थे, जिनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। पेट्रो ने महासभा में कहा, उन्होंने (अमेरिका ने) कहा कि कैरेबियन में मिसाइलों का इस्तेमाल ड्रग तस्करी रोकने के लिए किया गया। यह एक झूठ है। क्या वास्तव में निहत्थे, गरीब युवाओं पर बम बरसाना जरूरी था?

वेनेजुएला के राष्ट्रपति भी कर चुके हैं अमेरिका की आलोचना : दूसरी तरफ वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो ने भी कहा कि उनकी सरकार अमेरिकी हमलों से निपटने के लिए संवैधानिक आदेश जारी करने की तैयारी कर रही है। मादुरो ने आरोप लगाया कि अमेरिका मादक पदार्थ तस्करी का बहाना बनाकर सैन्य कार्रवाई कर रहा है, ताकि उनकी सरकार को गिराया जा सके।

अमेरिका ने अब तक नहीं दिए नावों में नशीले पदार्थ होने से जुड़े सबूत : दूसरी तरफ अमेरिकी प्रशासन का कहना है कि यह कार्रवाई मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए जरूरी थी। हालांकि, अभी तक यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि अमेरिका ने नावों में लदे कार्गो का आकलन कैसे किया और यात्रियों को गैंग से जुड़ा हुआ कैसे घोषित किया।

ट्रंप प्रशासन का यू-टर्न- फिर काम पर बुलाए गए नौकरी से हटाए गए सरकारी कर्मचारी, मस्क की कटौती नीति पड़ी महंगी

मियामी, एजेंसी। अमेरिका में जिन सैकड़ों संघीय कर्मचारिीं की नौकरियां चली गई थीं, अब उन्हें वापस काम पर बुलाया जा रहा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सलाहकार रहे एलन मस्क की सरकारी खर्चों में कटौती करने की योजना के तहत इन कर्मचारियों को हटाया गया था। सामान्य सेवा प्रशासन (जीएसए) ने इन कर्मचारियों को कहा कि इस हफ्त तक बताएं कि वे दोबारा नौकरी करना चाहते हैं या नहीं। ये कर्मचारी सरकारी दफ्तरों में देखभाल का काम करते थे। सरकारी नोटिस के मुताबिक, जो कर्मचारी लौटने को तैयार हैं, उन्हें छह अक्तूबर से काम पर लौटना होगा। इन सात महीनों में वे काम पर नहीं थे, लेकिन उन्हें वेतन मिलता रहा। इस दौरान जीएसए को कई सरकारी इमारतों के किराए पर भारी खर्च उठाना पड़ा। इसका बोझ आखिरकार करदाताओं पर ही पड़ा। जीएसए के एक पूर्व अधिकारी चाड बेकर ने कहा कि एजेंसी में कर्मचारियों की

भारी कमी हो गई थी और बुनियादी काम भी सही तरीके से नहीं हो पा रहे थे। अब एजेंसी को आपातकालीन स्थिति में चलाना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि मस्क और उनके सरकारी दक्षता विभाग (डॉज) ने बहुत जल्दी ज्यादा कटौती कर दी थी। जीएसए को 1940 के दशक में स्थापित किया गया था, ताकि सरकारी दफ्तरों को खरीदने और उनका प्रबंधन करने का सारा काम एक ही जगह से किया जा सके। कर्मचारियों को फिर से वापस काम पर बुलाने का फैसला केवल जीएसए में ही नहीं, बल्कि अन्य एजेंसियों में भी देखने को मिल रहा है। आयकर विभाग और श्रम विभाग ने भी कुछ पुराने कर्मचारियों को फिर से काम पर रखा है। राष्ट्रीय पार्क सेवा ने भी कुछ लोगों को वापस बुलाया है। जीएसए के लिए स्थिति संभालना जरूरी हो गया था, क्योंकि मार्च से हजारों कर्मचारियों ने या तो खुद सेवानिवृत्ति ले ली या उन्हें जबरन नौकरी छोड़ने को कहा गया। इसके अलावा, सैकड़ों कर्मचारियों को सीधे नौकरी से निकाल दिया गया। हालांकि, इन सभी को सितंबर के अंत तक वेतन मिलता रहा। जीएसए ने इस फैसले पर विस्तार से कुछ नहीं कहा और न ही कर्मचारियों की संख्या या खर्च को लेकर जानकारी दी। केवल इतना कहा गया कि जीएसए नेतृत्व ने कर्मचारियों से जुड़ी योजनाओं की समीक्षा की है और जो भी निर्णय लिया गया है।

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में जफर एक्सप्रेस पटरी से उतरी, ट्रेक पर विस्फोट होने से कई डब्बे पलटे

क्वेटा, एजेंसी। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में सोमवार को जफर एक्सप्रेस ट्रेन पटरी से उतर गई। ट्रेक में विस्फोट होने से कई डिब्बे पलट गए। कम से कम तीन डिब्बे क्षतिग्रस्त हुए

और मौके पर रेस्क्यू टीम भेजी गई। यह हमला पाकिस्तानी सुरक्षा बलों पर विस्फोट होने के कुछ घंटे बाद हुआ। इस साल 11 मार्च को भी इसी रूट पर जफर एक्सप्रेस पर हमला हुआ था, जिसमें छह सैनिक मारे गए और 450 से अधिक यात्री हथियारबंद मिलिटेंट्स द्वारा बंधक बनाये गए थे। उस हमले की जिम्मेदारी बलूच लिबरेशन आर्मी ने ली थी और उन्होंने चेतावनी दी थी कि किसी भी सैन्य प्रतिक्रिया से स्थिति और बिगड़ सकती है। बलूचिस्तान में अलगाववादी हिंसा लंबे समय से जारी है और सुरक्षा बलों के लिए यह लगातार खतरा बना हुआ है।

सिर्फ नमस्कार ही नहीं, पूजापाठ की ये क्रियाएं भी दूर करती हैं कई बीमारियां

हिंदू धर्म में पूजापाठ के बाद ईश्वर के सम्मुख हाथ जोड़कर यह प्रार्थना की जाती है कि हे भगवान हमें सुख समृद्धि के साथ अच्छी सेहत भी प्रदान करें। इतना ही नहीं भारतीय परंपरा में अपने से बड़ों और मेहमानों का अभिवादन भी हाथ जोड़कर नमस्कार करके किया जाता है। जब से कोरोना वायरस ने पांव पसारे हैं, तब से सारी दुनिया हाथ मिलाने की बजाए हाथ जोड़ने पर जोर दे रही है। यहां तक कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप भी अपने मेहमानों का स्वागत हाथ जोड़कर कर रहे हैं, लेकिन हम आपको बता दें कि हिंदू धर्म में सिर्फ हाथ जोड़ना ही नहीं, बल्कि कुछ और भी ऐसी क्रियाएं हैं तो कई बीमारियों को दूर रखती हैं। आइए जानते हैं इनके बारे में-

एक्यूप्रेशर का लाभ

हथेलियों में शरीर के अन्य अंगों की नसों के भी बिंदू होते हैं, जिन्हें एक्यूप्रेशर पाइंट कहा जाता है। ताली बजाने से इन बिंदुओं पर दबाव पड़ता है और इनसे संबंधित अंगों में रक्त संचार बढ़ता है, जिससे वे बेहतर काम करने लगते हैं। ताली बजाना हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

ऊं के उच्चारण से इन बीमारियों में लाभ

ऊं के उच्चारण से उत्पन्न होने वाली तरंगें दिमाग को शांत करने के साथ ही मन को सुकून पहुंचाती हैं। ओम का उच्चारण करने से गले में वाइब्रेशन होती है, जिससे थाइरॉयड प्रॉब्लम से बचा जा सकता है। ओम का उच्चारण करने से स्ट्रेस और घबराहट जैसी समस्या दूर होती हैं। रोज इस जाप को करने से लंग्स, बीपी, और ब्लड सर्कुलेशन इम्प्रूव होता है। इससे हार्ट भी हेल्दी रहता है।

आरती के वक्त ताली बजाने के लाभ

ईश्वर की पूजा करते हुए ताली बजाने का चलन है। भगवान की स्तुति, भक्ति, आरती आदि धर्म-कर्म करते हुए ताली बजाई जाती है। धार्मिक मान्यता है कि इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। विज्ञान के अनुसार ताली बजाना एक प्रकार का व्यायाम ही है, ताली बजाने से हमारे पूरे शरीर में खिंचाव होने लगता है और हमारे शरीर की मांसपेशियां सक्रिय हो जाती हैं। कुछ ही देर में हमारे शरीर से पसीना आना शुरू हो जाता है और पूरे शरीर में एक अलग तरह की ऊर्जा पैदा हो जाती है।

घंटी बजाने से नष्ट होते हैं वायरस

विज्ञान कहता है कि घंटी बजाने से वातावरण में कंपन्न पैदा होती है। इससे आस-पास के माहौल में स्थित जीवाणु, विषाणु मर जाते हैं। जहां सुबह शाम मंदिर की घंटी बजाई जाती है, वहां का वातावरण शुद्ध रहता है। इस ध्वनि के पीछे सेहत से जुड़ा कारण है कि यह ध्वनि हमारे मन को शांत करने में मददगार होती है, जिससे मानसिक तनाव का स्तर घटता है। जब हम इस ध्वनि से उत्पन्न कंपन्न को शांत मन से महसूस करते हैं तो हमारा बीपी नियंत्रित होता है।

घर की ये मामूली सी दिखने वालीं वस्तुएं डालती हैं आपकी किस्मत पर बड़ा असर

वास्तु का घर की खुशहाली, परिवार की सेहत और धन संपन्नता से सीधा वास्ता है। वास्तु से जुड़ी छोटी-छोटी बातें घर पर अच्छा और बुरा प्रभाव डालती हैं। घर में इस्तेमाल में आने वाली कुछ ऐसी चीजें होती हैं जिनकी अनदेखी घर में नकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करती हैं। जिनसे घर में तनाव उत्पन्न होने लगता है। लोग बीमार पड़ने लगते हैं, पैसों की कमी हो जाती है। आइए जानते हैं कौन सी हैं ये वस्तुएं-

झाड़ू को ऐसे न रखें

घर में झाड़ू को मां लक्ष्मी का दर्जा दिया जाता है और इसका सीधा संबंध घर की आर्थिक स्थित से होता है। झाड़ू का अनादर करना, टूटी हुई झाड़ू को रखना और झाड़ू से पैर लगाना बहुत ही गलत प्रकार का व्यवहार माना जाता है। जो कि सीधे तौर पर वास्तु दोष को बताता है। झाड़ू को घर में ऐसे स्थान पर रखना चाहिए, जो सबकी नजरों से दूर रहे। सूर्यास्त के वक्त कभी भी घर में झाड़ू नहीं लगानी चाहिए। ऐसा करने से दरिद्रता आती है।

कैंची रखें ऐसे

कैंची का संबंध राहु से माना जाता है और यह घर वालों के आपसी रिश्ते प्रभावित करती है। कभी भी खाली कैंची नहीं चलानी चाहिए। ऐसा करने से आपके रिश्तों में दरार पड़ सकती है। कैंची को सदैव कपड़े में लपेटकर किसी छिपे स्थान पर रखना चाहिए। अगर कोई पड़ोसी कैंची मांगने आता है तो उसे उधार न दे, ऐसा करने से उसके साथ संबंध खराब होते हैं।

चाकू से होता है ऐसा

चाकू घरों में अक्सर रसोई में ही रखा जाता है, किंतु ध्यान रखें कि चाकू हमेशा उल्टा करके रखें। उसके धार वाले हिस्से को नीचे की ओर रखें। इससे आप संतान पक्ष से खुश रहेंगे। ध्यान रखें कि घर में कभी भी ऐसे चाकू छुरी नहीं रखने चाहिए, जिनका आप इस्तेमाल न करते हों। ऐसा होने से आपके घर में दरिद्रता के साथ ही दांपत्य संबंधों में भी कड़वाहट आनी शुरू हो जाती है। घर में आपस में भी किसी के हाथ में चाकू सीधे नहीं पकड़ाना चाहिए।

घर के जूते चप्पल

घर में प्रयोग होने वाले जूते चप्पलों का प्रयोग सीधे शनि महाराज से ताल्लुक रखता है। ध्यान रखें, घर में कभी भी जूते-चप्पल इधर-उधर बिखेरकर नहीं रखना चाहिए। इससे आप शनि के कोपभाजन का शिकार भी हो सकते हैं। इतना ही नहीं बाहर से आते वक्त जूते सदैव घर के बाहर उतारकर घर में प्रवेश करना चाहिए, इससे बाहर की नकारात्मक ऊर्जा बाहर ही रह जाती है, लेकिन ध्यान रखें कि कभी भी मुख्य द्वार के सामने जूते नहीं उतारने चाहिए।

पांवदान नहीं होना चाहिए ऐसा

घर के मुख्य द्वार पर पांवदान कभी भी गंदा नहीं होना चाहिए। उसे रोजाना झाड़ू लगाने के बाद झाड़कर वापस डाल देना चाहिए। उसके आस-पास कूड़ा बिल्कुल भी न जमा होने दें। रोजाना ईश्वर से अपने घर आगमन की प्रार्थना करनी चाहिए। पांवदान पर किसी तरीके स्वास्तिक या फिर अन्य कोई भी धर्म से जुड़ा चिह्न नहीं होना चाहिए।

वक्त रहते बदल दें अपनी ये आदतें, नहीं तो बना सकती हैं कंगाल

आदतें अच्छी या बुरी कैसे भी हो सकती हैं, लेकिन कुछ आदतें व्यक्ति के जीवन को इस कदर प्रभावित करती हैं कि वह हर समय तकलीफ और समस्याओं से ही जूझता रहता है। जी हां वास्तु शास्त्र में इसका उल्लेख मिलता है, लेकिन यह भी कहा गया है कि अगर समय रहते ही इन आदतों में सुधार कर लिया जाए तो ये लाइफ को खुशियों की तमाम सौगात भी दे सकती है। ऐसी ही कुछ आदतों का हम यहां जिक्र कर रहे हैं, यदि आप भी जाने-अंजाने ऐसा करते हैं तो कोशिश करें अपनी इन खराब आदतों को बदलने की, जिससे आपका जीवन खुशहाल हो जाएगा।

आप भी ऐसे तो नहीं करते बात

आपने अक्सर ही घर पर बड़े-बुजुर्गों को यह कहते सुना होगा कि शांति से बात करनी चाहिए। किसी से कभी भी चिल्लाकर बात नहीं करनी चाहिए, लेकिन क्या आप जानते हैं कि जोर से या फिर चिल्लाकर किसी से भी बात करना क्यों गलत होता है? वास्तु शास्त्र में बताया गया है कि ऐसा करने से शनि दोष का प्रभाव बढ़ता है। जीवन में सबकुछ उल्टा-पुल्टा होने लगता है। विरोधियों की संख्या बढ़ने लगती है। बेवजह की टेंशन बढ़ती है और काम भी बिगड़ने लगते हैं, लेकिन शांति और स्नेह से बात करने से शनि देव प्रसन्न होते हैं। यही नहीं अगर जीवन में कुछ परेशानियां भी हैं तो वह भी खत्म होने लगती हैं।

यह आदत तो बिल्कुल ही खराब है

आपने किताबों में पढ़ा होगा या फिर घर-परिवार में बड़े-बुजुर्गों से सुना होगा कि जल्दी सोना और जल्दी उठना सेहत के लिए अच्छा होता है, लेकिन आजकल देर से सोना और देर तक सोना एक अलग तरह का स्टेट्स सिंबल माना जाने लगा है। हालांकि कई बार लोग काम अधिक होने का भी तर्क देते हैं। जिसके चलते देर रात सोना होता और देर सुबह से उठना होता है, लेकिन वास्तु शास्त्र में इस आदत को पूरी तरह से गलत बताया गया है। कहा जाता है कि इससे व्यक्ति का स्ट्रेस बढ़ता है और मानसिक तकलीफें बढ़ती हैं। कई बार सेहत में भी लगातार गिरावट होने लगती है।

ऐसा करने से रूठ ही जाती हैं मां लक्ष्मी

आपने अक्सर ही ऐसे लोगों को देखा होगा जो अपने आस-पास देखे बिना कहीं भी थूक देते हैं। वास्तु शास्त्र में इस आदत को तुरंत ही बदल डालने के बारे में कहा गया है। इसके मुताबिक ऐसा करने वालों से मां लक्ष्मी हमेशा के लिए रूठ जाती हैं। इन्हें जीवन भर पैसों और मान-सम्मान की तंगी झेलनी पड़ती है। इससे कई बार डिप्रेशन तक का शिकार हो जाते हैं। वहीं कभी इन्हें किसी के चलते पैसा या मान-सम्मान मिल भी जाए तो वह इनकी इसी आदत के चलते ज्यादा देर तक नहीं ठहरता। इसलिए ऐसी आदत को जितनी जल्दी हो बदल देना ही उचित होता है।

इनका भूले से भी न करें अपमान

आपने यह तो सुना ही होगा कि अपने से बड़ों का हमेशा ही सम्मान करना चाहिए। धर्मशास्त्र भी यही कहते हैं। मान्यता है कि जिस घर में बड़े-बुजुर्गों का सम्मान किया जाता है उनके जीवन में कभी भी किसी भी तरह की परेशानी नहीं आती, लेकिन अगर कोई बड़े-बुजुर्गों का अपमान करता है। उनके साथ ऊंची आवाज में बात करता है। या फिर उनका ख्याल नहीं रखता।

तो ऐसे लोगों के जीवन में सुख-समृद्धि की कमी बनी ही रहती है। मां लक्ष्मी ऐसे लोगों पर कभी भी कृपा नहीं करतीं, लेकिन अगर आप बड़े-बुजुर्गों का सम्मान करते हैं, उनका ख्याल रखते हैं मां लक्ष्मी के साथ ही सभी देवी-देवताओं की कृपा बरसती है। जीवन में किसी भी बात की कोई कमी नहीं होती।

ऐसा करने से घटने लगता है मान-सम्मान

वास्तु शास्त्र में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने के लिए कहा गया है। कहा जाता है जितनी सफाई रखी जाए मां लक्ष्मी उतनी ही मेहरबान होती हैं, लेकिन यह केवल घर या फिर कपड़ों की नहीं, बल्कि पैरों की भी होनी चाहिए। कहते हैं कि पैर जितने साफ रखें जाएं, किस्मत उतनी ही अच्छी होती है, लेकिन अधिकतर लोग अपने चेहरे का तो ख्याल रखते हैं, लेकिन पैरों पर ध्यान नहीं जाता। वास्तु के मुताबिक अगर किसी के पैर गंदे होते हैं तो उसके मान-सम्मान में कमी होती है। मानसिक तनाव भी बढ़ता है। साथ ही एक के बाद एक समस्या लगी ही रहती है।

दान पुण्य के ये कार्य बिगाड़ देंगे आपकी आर्थिक स्थिति

दान पुण्य के कार्यों के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आय का कुछ हिस्सा अवश्य निकालना चाहिए। धार्मिक उपदेशों में अक्सर ऐसी बातें कही जाती हैं, लेकिन क्या आपको पता है कि अनजाने में किया गया दान आपको पुण्य देने की बजाए कंगाल बना सकता है। ज्योतिष की मशहूर लाल किताब में दान से जुड़े कुछ ऐसे नियमों के बारे में बताया गया है, जिनको जानना हर व्यक्ति के लिए बहुत जरूरी है।

पीली वस्तुओं का दान: अगर आपकी कुंडली में सूर्य मजबूत स्थिति में है तो आपको भूलकर भी सोना, गेहूं और तांबे जैसी पीली वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आपका बलशाली सूर्य कमजोर हो सकता है। इससे कार्यक्षेत्र में परेशानी, धन का अभाव और स्वास्थ्य की हानि हो सकती है।

चंद्रमा इस भाव में हो तो : अगर आपकी कुंडली में चंद्रमा द्वितीय और चतुर्थ भाव में हो तो आपको भूलकर भी दूध, चांदी, मोती या फिर चावल जैसी सफेद वस्तुओं का दान नहीं करना चाहिए। यहां तक कि दोस्तों और रिश्तेदारों को उपहार के रूप में भी नहीं देना चाहिए। ऐसा करने से आपके घर में तंगी पांव पसार सकती है।

अगर मंगल हो मजबूत : अगर आपकी राशि में मंगल मजबूत स्थिति में है तो आपको भूलकर भी दान में मीठी चीजें, शहद या फिर लाल वस्तुएं नहीं देनी चाहिए। ऐसा करने से आपके ऊपर ही विपरीत प्रभाव पड़ सकता है और आपके ग्रहदोष कम होने की बजाए आपकी मुश्किलें और बढ़ सकती हैं।

जिनका बुध मजबूत हो: जिन जातकों की कुंडली में बुध मजबूत स्थिति में हो उन्हें, किसी भी व्यक्ति को कलम या फिर पैन उपहार के रूप में भी नहीं देना चाहिए। यहां तक कि उस व्यक्ति को हरी दाल या फिर हरे वस्त्र भी किसी को नहीं देने चाहिए। ऐसा करने से बुध उनके ऊपर उल्टा प्रभाव छोड़ सकता है।

अगर बृहस्पति हो बलशाली: अगर आपकी राशि के लिए देवों के गुरु बृहस्पति बलशाली हों तो आपको किसी को भी अपने हाथ सोने की वस्तुएं उपहार में नहीं देनी चाहिए। पीले कपड़े और केसर की बनी चीजें भी किसी को भूल से न दें।

शुक्र के मजबूत होने पर: अगर किसी व्यक्ति की कुंडली में शुक्र अच्छी स्थिति में है तो उसे किसी दूसरे को रेडिमेड कपड़े, परफ्यूम या फिर आभूषण नहीं देने चाहिए। ऐसा करने से उनके दांपत्य जीवन में परेशानियां आ सकती हैं और भौतिक सुविधाओं में कमी आ सकती है।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। कामकाज में आ रही बाधा को दूर कर लेंगे। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम पर पैनी नजर रखिए। यात्रा आवश्यक होगी। शुभांक-5-7-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर प्रपंच में ना पड़कर काम पर ध्यान दीजिए। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-6-8-9

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): दुर्लभ स्वप्न साकार होंगे। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कोई प्रिय वस्तु अथवा नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त होंगे। स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। शुभांक-7-8-9

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): विवाद समाप्त होंगे। शुभ संदेशों से मन खिला-खिला रहेगा। परेशानीयां स्वतः ही दूर होती प्रतीत होगी। अध्ययन में रुचि पैदा होगी। अभिभावकों के प्रति उत्तरदायित्व निभाने होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। स्त्री, संतान, मित्र के साथ मनोविनोद बढ़ेंगे। शुभांक-4-6-9

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने वाले कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। शुभांक-4-6-8

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): आवेश में आना आपके हित में नही होगा इसलिए व्यवहार व वाणी पर नियत्रंण रखें। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। अपने अधीनस्थ लोगों से कम सहयोग मिलेगा। बाहरी सहयोग की अपेक्षा रहेगी। विपरीत परिस्थितियों में भी हानि नहीं होगी। शुभांक-3-6-9

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। स्त्री-संतान पक्ष का सहयोग मिलेगा। शुभांक-5-7-8

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): समय पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। पुराने मित्र से मिलन होगा। स्वविवेक से कार्य करें। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): मेहमानों का आगमन होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। पैतृक सम्पत्ति से लाभ। पुरानी गलती का पश्चाताप होगा। विद्यार्थियों को लाभ। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। शुभांक-3-6-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): जीवनसाथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंग। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। इच्छित कार्य पूर्ण होंग। शुभांक-3-5-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होगी। कुछ भ्रामक धारणाओं का खंडन होगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-2-4-6

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। आवेग में आकर किये गए कार्यों का म्लान रहेगा। शुभांक-3-5-7

काकुरो पहेली - 2598

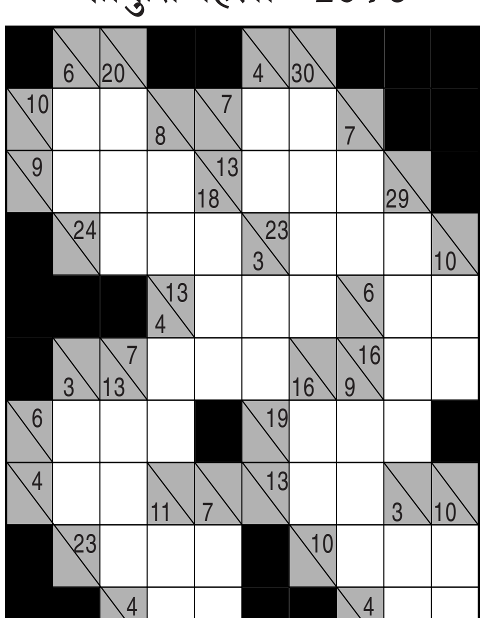

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणतः

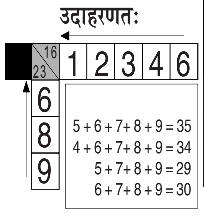

काकुरो - 2597 का हल

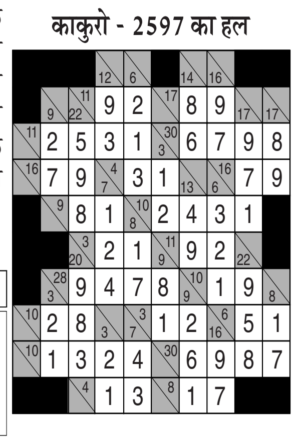

लॉफिंग ज़ोन

पति (पत्नी से) प्रिये यदि मुझे कुछ हो गया तो तुम क्या दूसरी शादी कर लोगी।

नहीं, कभी नहीं। मैं अपना बचा जीवन अपनी बड़ी बहन के साथ गुजार दूँगी लेकिन दूसरी शादी नहीं करूँगी।

पत्नी (पति से) : लेकिन यदि मुझे कुछ हो गया तो क्या तुम दूसरी शादी कर लोगे।

पति : नहीं, मैं भी तुम्हारी बहन के साथ ही रह लूँगा।

□ □ □

अपने प्रेमी की शिकायत करते हुए शीला ने गीता से कहा- यह रमन का बच्चा आजकल मुझसे फ्लर्ट कर रहा है।

गीता- क्यों क्या किया रमन ने?

शीला- कल शाम जब मैं एक रेस्त्राँ में उससे मिलने गई तो वह बहुत देर बाद आया। कारण पूछने पर कहने लगा- अरे, वो नरेश मुझे जबरदस्ती टॉकिज ले गया था फिल्म दिखाने।

गीता- तो इसमें फ्लर्ट की क्या बात है?

शीला- दरअसल, कल नरेश के साथ टॉकिज तो मैं गई थी।

□ □ □

फिल्म वर्ग पहेली- 2598

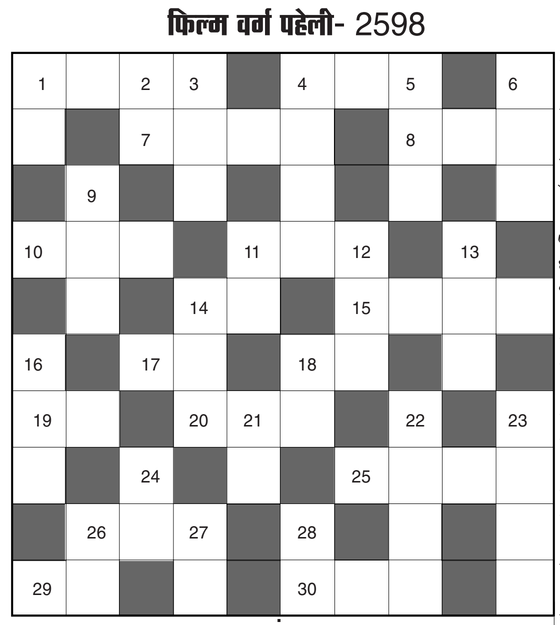

बायें से दायें:-

१. सैफअली खान, रानी मुखर्जी की 'सांसों को सांसों में ढलने दो' गीत वाली फिल्म-२,२
४. 'रंग भरे मौसम से रंग चुराके' गीत वाली जैकी श्रॉफ, जूही चावला की फिल्म-३
७. गोविंदा, मनीषा की 'ठहरो तो सही सोचो तो जरा' गीत वाली फिल्म-४
८. 'संडे की रात थी' गीत वाली गोविंदा, रवीना की फिल्म-३
१०. ऋषिकपूर, शाहरूख, दिव्या भारती की 'तेरी उम्मीद तेरा इंतजार' गीत वाली फिल्म-३
११. फिल्म 'मनोरंजन' में शम्मीकपूर के साथ नायिका कौन थी-३
१४. सलमान, सोमी की 'दिल मेरा यहां' गीत वाली फिल्म-२
१५. 'कब के बिछड़े हुए' गीत वाली अमिताभ, जीनत अमान की फिल्म-४
१७. अमजद खान, बिंदिया गोस्वामी की 'दिल के टुकड़े टुकड़े' गीत वाली फिल्म-२
१८. 'मेरे खयालों की मलिका' गीत वाली शाहरूख, चंद्रचूड़, ऐश्वर्या, प्रिया की फिल्म-२
१९. सुनील शेट्टी, रंभा की 'कहां गये ममता' गीत वाली फिल्म-२
२०. 'तुम भी चलो' गीत वाली अमिताभ, विनोद खन्ना, सायरा बानो की फिल्म-३
२५. अमिताभ, अरशद वारसी, करिश्मा, विजय शांति की फिल्म-४
२६. 'ये दपनियावाले' गीत वाली देवानंद, आशा पारेख की फिल्म-३
२९. धर्मेन्द्र हेमा की 'दुनिया जब' गीत वाली फिल्म-२
३०. अक्षयकुमार, सुनील शेट्टी, करिश्मा, सोनाली की फिल्म-३

ऊपर से नीचे:-

१. नसीरूद्दीनशाह, जैकीश्रॉफ, नगमा की फिल्म-२
२. करणनाथ, मनीषा नतान्यासिंह की 'क्यूं मेरा दिल' गीत वाली फिल्म-२
३. अमिताभ, वहीदा, जीनत की फिल्म-३
४. ऋषिकपूर, श्रीदेवी की 'बदली है ना बदलेगी' गीत वाली फिल्म-४
५. देवानंद, मधुबाला की फिल्म-३
६. 'बनाकेक्यूं बिगाड़ा रे' गीत वाली फिल्म-३
९. अमिताभ, संजयदत्त, अक्षयखन्ना, अमृता राव की फिल्म-३
११. 'यारा ओ यारा' गीत वाली फिल्म-२
१२. 'खाई है रे हमने' गीत वाली राजेंद्र, शर्मिला की फिल्म-३
१३. फिल्म 'सपने साजन के' की नायिका-३
१४. राजकपूर, दिलीपकुमार, नर्गिस की 'झूम झूम के नाचो आज' गीत वाली फिल्म-३
१६. 'हैलो हैलो बोल के' गीत वाली फिल्म-३
१८. सनी देओल, सुष्मिता सेन की 'मैं अपना नाम भूला' गीत वाली फिल्म-२
२१. 'मेरे तो गिरधर गोपाल' गीत वाली फिल्म-२
२२. मनोजकुमार, साधना की फिल्म-४
२३. 'जो उनकी तमन्ना है' गीत वाली फिल्म-४
२४. राजकपूर, नर्गिस की फिल्म-२
२६. 'सुना था देखा ना था' गीत वाली आफताब, उर्मिला की फिल्म-२
२७. अमिताभ, रितिक, प्रीति की फिल्म-२
२८. 'फूलों से जो खुशबू आए' गीत वाली फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 2597

दी	वा	ने		फू	ल	औ	र	कां	टे
वा		हा	सि	ल		जा		टे	
र	न		र्फ		शे	र	नी		झु
	सी		तु	म			य	ती	म
श	ब	न	म		स	पू	त		रू
त		र्गि		जू		र्णि		तू	
र		स	हे	ली		मा	ई	ल	व
ज	या		रा		ज		मा		र
	रा	ज	म	ह	ल		न		दा
ली	ना			म	वा	ली		डॉ	न

सूडोकु -2598

7							4	
		5		3			7	
					8			2
					1	9		
	2						8	
		6	7					
1			4					
	9			2		5		
	8							1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -2597 का हल

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7

शब्द पहेली - 2598

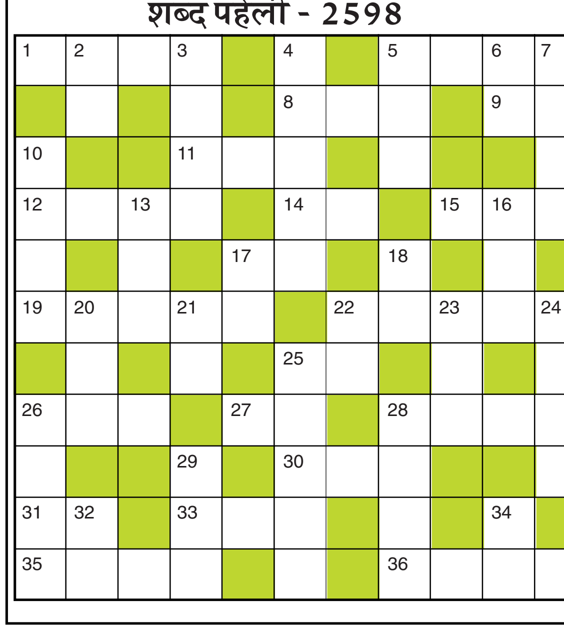

बाएँ से दाएँ

1.चिकित्सा,इलाज-4
5.पैतृक संपत्ति-4
8.बलवा,क्रांति-3
9.निम्न-2
11.सुअर,शूकर-3
12.चौबीसवें तीर्थंकर-4
14.केश-2
15.मुनाफा,अर्जित-3
17.मैदे की रोटी-2
19.मनोहर,आकर्षक-5
22.अनासक्ति,निर्विकारता-5
25.पानी,नीर-2
26.सूखा,दुष्काल-3
27.कांटा,कंटक-2
28.शांति,ध्वनिहीनता-4
30.तीक्ष्ण,तेजस्वी-3
31.लाख,गोंद-2
33.मधुक,महुआ-3
35.हृदयगति,स्पंदन-4
36.अनुक्रम,निरंतरता लयबद्ध-4

ऊपर से नीचे

2.पंख,पराया-2
3.राम का एक नाम-4
4.संरक्षक,देखरेख करने वाला,मुहाफिज-5
5.वियोग,जुदाई-3
6.गलत का विलोम-2
7.एकांतता,अकेलापन-4
10.मरियल,निर्बल-4
13.'क्योंकि सास भी कभी बहु थी' में तुलसी इस परिवार की बहु है-3
16.मक्खन-3
17.रिश्ता-2
18.लाश-3
20.माला का मोती-3
21.यमराज-2
22.ललाट-2
23.ताप वर्धक-3
24.विदिर्ण-2.2
25.पानी का बहना-5
26.जुर्म,गुनाह-4
28.रसहीनता-4
29.प्रणाम,नमस्कार-3
32.लड़ी,श्रृंखला-2
34.दोस्त,सखा-2

शब्द पहेली -2597 का हल

	बि	ज	ली	घ	र		मा	न	सि	क
दि	ल		ड		ख	न	न		ना	रा
ल		धा	र	दा	र		क	ली		मा
दु	ला	रा			खा	स		ख	प	त
ख		धा		ना	व		ग		र	
ना	म	र	ख	ना		च	म	क	दा	र
	यू		त		स	र		ट		वा
ह	र	म		शा	म			पी	स	ना
ड़		य	श		का	रा	वा	स		हो
ता	न		प	ग	ली		न		म	ना
ल	थ	प	थ		न	ग	र	व	धु	

कुलगाम से आतंकियों का एक सहयोगी गिरफ्तार, पहलगाम हमले में शामिल आतंकियों को दी थी रसद सहायता

एजेंसी

श्रीनगर। पुलिस ने दक्षिण कश्मीर से आतंकियों को एक सहयोगी को गिरफ्तार किया है, जिसने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान की थी। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि एक खुफिया जानकारी के आधार पर श्रीनगर पुलिस ने दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले से आतंकियों के एक सहयोगी को गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान मोहम्मद यूसुफ कटारी (26) के रूप में हुई है। अधिकारियों ने कहा कि पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान करने में उसकी भूमिका थी जो बाद में ऑपरेशन महादेव के दौरान मारे गए थे। 29 जुलाई की मुठभेड़ में सेना के कुलीन पैरा कमांडो ने श्रीनगर के बाहरी इलाके में तीन आतंकवादियों को मार गिराया था। उनमें सुलेमान उर्फ आसिफ भी शामिल था जिसे 22 अप्रैल के पहलगाम हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है जिसमें 26 लोग, मुख्य रूप से पर्यटक मारे गए थे। अन्य दो की पहचान जिबरान और हमजा अफगानी के रूप में हुई थी। जिबरान अक्टूबर 2024 में सोनमर्ग सुरंग हमले में शामिल था।

प्रतापराव जाधव ने की अश्विनी वैष्णव से मुलाकात, खामगांव-जालना नई रेल लाइन की मांग की

नई दिल्ली। आयुष मंत्री प्रतापराव जाधव ने केन्द्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात कर खामगांव-जालना नई रेल लाइन की मांग की। उन्होंने मुलाकात के बाद अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर अपने संदेश में कहा कि आज केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से भेंट कर बुलढाणा क्षेत्र के लिए अति महत्वपूर्ण खामगांव-जालना नई रेल लाइन के विषय में विस्तृत चर्चा की। यह रेल परियोजना सिर्फ़ बुलढाणा ही नहीं, बल्कि पूरे मराठवाड़ा के आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की आधारशिला बनेगी। व्यापार, पर्यटन, कृषि व उद्योग को नई गति मिलेगी और शिंगणापुर सहित आसपास के नगरों तक यात्रा सुगम होगी। उन्होंने कहा कि स्थानीय जनता, रेलवे लोक आंदोलन समिति, जनप्रतिनिधियों और सामाजिक संगठनों की वर्षों से चली आ रही मांग को देखते हुए रेल मंत्री से इस परियोजना को शीघ्र स्वीकृति प्रदान करने का विनम्र अनुरोध किया।

कुलगाम से आतंकियों का एक सहयोगी गिरफ्तार, पहलगाम हमले में शामिल आतंकियों को दी थी रसद सहायता

श्रीनगर। पुलिस ने दक्षिण कश्मीर से आतंकियों को एक सहयोगी को गिरफ्तार किया है, जिसने 22 अप्रैल को पहलगाम आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान की थी। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि एक खुफिया जानकारी के आधार पर श्रीनगर पुलिस ने दक्षिण कश्मीर के कुलगाम जिले से आतंकियों के एक सहयोगी को गिरफ्तार किया है। उसकी पहचान मोहम्मद यूसुफ कटारी (26) के रूप में हुई है। अधिकारियों ने कहा कि पहलगाम हमले में शामिल आतंकवादियों को रसद सहायता प्रदान करने में उसकी भूमिका थी जो बाद में ऑपरेशन महादेव के दौरान मारे गए थे। 29 जुलाई की मुठभेड़ में सेना के कुलीन पैरा कमांडो ने श्रीनगर के बाहरी इलाके में तीन आतंकवादियों को मार गिराया था। उनमें सुलेमान उर्फ आसिफ भी शामिल था जिसे 22 अप्रैल के पहलगाम हमले का मास्टरमाइंड माना जाता है जिसमें 26 लोग, मुख्य रूप से पर्यटक मारे गए थे। अन्य दो की पहचान जिबरान और हमजा अफगानी के रूप में हुई थी। जिबरान अक्टूबर 2024 में सोनमर्ग सुरंग हमले में शामिल था।

प्रख्यात साहित्यकार एसएल भैरप्पा का बेंगलुरु में निधन, प्रधानमंत्री ने जताया शोक

नई दिल्ली/बेंगलुरु। प्रख्यात साहित्यकार और साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य डॉ. एसएल भैरप्पा का बेंगलुरु के एक अस्पताल में हृदय गति रुकने से निधन हो गया। वह 94 वर्ष के थे। राष्ट्रोत्थान अस्पताल ने एक बयान में कहा, प्रख्यात उपन्यासकार, पद्मभूषण और सरस्वती सम्मान से अलंकृत डॉ. एसएल भैरप्पा का आज दोपहर 2.38 बजे हृदयगति रुकने से निधन हो गया।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके निधन पर गहरा दुख जताया है। भैरप्पा के निधन से साहित्य जगत में शोक की लहर है। साहित्य अकादमी ने उनके निधन को अपूरणीय क्षति बताया है। प्रधानमंत्री ने एक्स पोस्ट में लिखा, एसएल भैरप्पा के निधन से हमने एक ऐसे महान व्यक्तित्व को खो दिया है जिन्होंने हमारी अंतरात्मा को झकझोर दिया और भारत की आत्मा में गहराई से उतर गए। एक निडर और कालातीत विचारक, उन्होंने अपनी विचारोत्तेजक रचनाओं से कन्नड़ साहित्य को समृद्ध किया। उनके लेखन ने पीढ़ियों को चिंतन करने, प्रश्न करने और समाज के साथ अधिक गहराई से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। हमारे इतिहास और संस्कृति के प्रति उनका अटूट जुनून आने वाले वर्षों में लोगों को प्रेरित करता रहेगा। इस दुखद घड़ी में मेरी संवेदनाएं उनके परिवार और प्रशंसकों के साथ हैं।साहित्य अकादमी ने अपनी शोक संवेदना में कहा कि अत्यंत दुख और आघात के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि प्रख्यात उपन्यासकार, दार्शनिक, पटकथा लेखक, बहुमुखी विद्वान और साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य डॉ. एसएल भैरप्पा का निधन हो गया है। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों, परंपराओं और ऐतिहासिक कथाओं के प्रति जनमानस में गहन रुचि को पुनः सृजित किया।

चंद्रबाबू नायडु के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश विकसित राज्य की दिशा में तेजी से कर रहा प्रगतिः उपराष्ट्रपति

एजेंसी

विजयवाड़ा। उप-राष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन दोपहर में विजयवाड़ा पहुंचे। आंध्र प्रदेश के राज्यपाल न्यायमूर्ति अब्दुल नज़ीर, मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू और अन्य मंत्रियों ने गन्नावरम हवाई अड्डे पर उनका स्वागत किया। बाद में, उन्हें पुलिस सलामी दी गई।

उपराष्ट्रपति सीपी राधाकृष्णन पुन्नमी घाट पर आयोजित विजयवाड़ा उत्सव में शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उप-राष्ट्रपति बनने के बाद पहली बार विजयवाड़ा आकर बहुत खुशी हो रही है। उन्होंने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि आंध्र प्रदेश शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में अपना विकास जारी रखे हुए है। एक विकसित भारत एक वास्तविकता है। यह कोई सपना नहीं है। मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में आंध्र प्रदेश विकसित

राज्य की दिशा में तेजी से प्रगति कर रहा है। उपराष्ट्रपति ने कहा, आंध्र प्रदेश मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू के नेतृत्व में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में विकास की ओर अग्रसर है। आंध्र प्रदेश देश के लिए अन्नपूर्णा के समान है। यह राज्य सभी क्षेत्रों में प्रगति कर रहा है। उप-राष्ट्रपति राधाकृष्णन ने कहा कि वह चाहते हैं कि विजयवाड़ा उत्सव अगले सौ वर्षों तक जारी रहे। उन्होंने कहा कि विजयवाड़ा सबसे गर्म शहर है, यहां के लोग बहुत शांत हैं। राधाकृष्णन ने कहा, कनक दुर्गा के नाम में हम प्रेम की कृपा और अमृत देख सकते हैं। भारत के विकास में योगदान देने के लिए राज्य के लोगों का हार्दिक आभार। उपराष्ट्रपति ने कहा कि नवरात्रि के दौरान, हम सभी देवी दुर्गा की भक्ति भाव से पूजा करते हैं। दुर्गा नवरात्रि पूरे देश में विशेष होती है। देश के लोग अद्भुत संस्कृति और परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। किसी अन्य त्योहार की तरह नौ दिनों तक देवी दुर्गा की पूजा करना सौभाग्य की बात है। नारी शक्ति का सम्मान करना भारतीयों की परंपरा है। देवी दुर्गा को अन्नपूर्णा देवी के रूप में मानने से शक्ति और भक्ति मिलती है।

जेपी नड्डा और जाधव ने राष्ट्रव्यापी स्वैच्छिक स्वच्छता अभियान के तहत किया श्रमदान

एजेंसी

नई दिल्ली। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय ने आज राष्ट्रव्यापी स्वैच्छिक स्वच्छता अभियान 'एक दिन, एक घंटा, एक साथ' के अंतर्गत निर्माण भवन और विदेश मंत्रालय भवन के पास सफाई अभियान का आयोजन किया। इस अवसर पर केंद्रीय स्वास्थ्यमंत्री जेपी नड्डा, राज्य मंत्री प्रतापराव जाधव ने श्रमदान कर सड़क की सफाई की।

मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की भी भागीदारी रही। इस अभियान के बाद एक्स पर नड्डा ने तस्वीरें साझा करते हुए कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर, 'सेवा पखवाड़ा' के अंतर्गत 'स्वच्छता ही सेवा - 2025' अभियान में भाग लिया। प्रधानमंत्री ने प्रत्येक नागरिक को इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने और सभी के लिए एक स्वच्छ, स्वस्थ और हरित भारत बनाने में योगदान देने का आग्रह किया। उल्लेखनीय है कि यह पहल स्वच्छता ही सेवा अभियान का हिस्सा है। इसका उद्देश्य स्वच्छ और स्वस्थ भारत के लिए सामुदायिक भागीदारी और नागरिक कार्रवाई को बढ़ावा देना है। मंत्रालय के सभी प्रभागों और अनुभागों के कर्मचारियों ने इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया और राष्ट्रव्यापी अभियान की भावना में योगदान दिया।

'आई लव मोहम्मद' प्रदर्शनों पर विहिप ने जताई चिंता, कहा- देश की शांति सुरक्षा के लिए एक चुनौती

एजेंसी

नई दिल्ली। विश्व हिन्दू परिषद विहिप ने देश के अलग-अलग राज्यों से 'आई लव मोहम्मद' के नाम पर हो रहे हिंसक प्रदर्शनों पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए इसे देश की शांति सुरक्षा के लिए एक कठिन चुनौती करार दिया है तथा अराजक तत्वों को मज़हब के नाम पर हिंसा से बाज़ आने की चेतावनी दी है। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ सुरेंद्र जैन ने बुधवार को दिल्ली में मीडिया से बातचीत में कहा कि मुस्लिम दुकानों पर नफरती सामान बेचा जा रहा है जो देश के लिए सही नहीं है। उन्होंने इसे देश की शांति-सुरक्षा के लिए कड़ी चुनौती बताया।

डॉ सुरेंद्र जैन ने कहा कि आई लव मोहम्मद शब्दों से विहिप को कोई आपत्ति नहीं है लेकिन इसके पीछे की मंशा पर सवाल है। उन्होंने कहा कि मुस्लिम लोगों की दुकानों में नफरती सामान बेचा जा रहा है जो देश में अशांति फैलाने का काम कर रहा है। हर जगह प्रदर्शन किए जा रहे हैं और इन प्रदर्शनों मेंगैर संवैधानिक नारे लगाए जा रहे हैं। इन प्रदर्शनों में पुलिस थानों पर हमले, पुलिस वालों को पीटने और वाहनों को जलाने की घटनाएं सामने आई हैं। उन्होंने कहा कि मुस्लिम लोगों का पैगंबर के प्रति प्रेम के इजहार का यह कौन सा तरीका है? ऐसे लोगों की मानसिकता पर तुरंत रोका जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिन्दू समाज को तैयार रहना चाहिए। देश में इस तरह के प्रदर्शन स्वीकार नहीं है। ये लोग न्यायपालिका को नहीं मानते है, संविधान को नहीं मानते। उल्लेखनीय है कि यह विवाद 9 सितंबर को शुरू हुआ, जब कानपुर पुलिस ने 4 सितंबर को बारावफात (ईद मिलाद-उन-नबी) जुलूस के दौरान सार्वजनिक सड़क पर 'आई लव मोहम्मद' लिखे बोर्ड लगाने के आरोप में नौ नामजद और 15 अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

की। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को पैगंबर मोहम्मद के प्रति प्रेम व्यक्त करने के अधिकार का पुरजोर बचाव किया। उन्होंने सवाल उठाया कि तीन साधारण शब्द - आई लव मोहम्मद - कैसे गैरकानूनी माने जा सकते हैं और अदालतों से इस पर तुरंत कार्रवाई करने का आग्रह किया। इसके साथ एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने अपने एक्स पोस्ट में कहा कि आई लव मोहम्मद कहना कोई अपराध नहीं है, इस मुद्दे ने राष्ट्र का ध्यान आकर्षित किया।

कृषि योगदान बढ़ने से ही विकसित राष्ट्र बनेगा भारतः गडकरी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए कृषि क्षेत्र का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में योगदान बढ़ाना जरूरी है। जब तक कृषि का योगदान 18 प्रतिशत से बढ़ाकर कम से कम 26 प्रतिशत नहीं होगा, तब तक प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा नहीं हो पाएगा। गडकरी 'क्रॉप केयर फेडरेशन ऑफ इंडिया' की 62वीं वार्षिक आम बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वर्तमान में कृषि का योगदान जीडीपी में 18 प्रतिशत है, जबकि मैन्युफैक्चरिंग का 24 से 26 प्रतिशत और सेवा क्षेत्र का 52 से 56 प्रतिशत योगदान है। कृषि क्षेत्र देश की 55 प्रतिशत जमीन पर आधारित है और करीब 40 प्रतिशत आबादी को रोजगार देता है, जिनमें 33 प्रतिशत महिलाएं भी शामिल हैं। मंत्री ने कहा कि आज भी 65 प्रतिशत आबादी कृषि पर निर्भर है, लेकिन आर्थिक मजबूरियों के चलते 30 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण आबादी शहरों की ओर पलायन कर चुकी है। उन्होंने कहा कि यदि गांवों में रोजगार के अवसर बढ़ेंगे तो पलायन रुक जाएगा गडकरी ने कहा कि कोविड-19 महामारी

के दौरान जहां अन्य वस्तुओं की उपलब्धता में कठिनाई हुई, वहीं खाद्यान्न की कमी महसूस नहीं हुई। देश ने बायो-फ्यूल और वैकल्पिक ईंधन को अपनाया है। पिछले वर्ष 1,400 करोड़ लीटर एथनॉल का उत्पादन हुआ, जिसमें 70 प्रतिशत हिस्सा फूड ग्रेन से बना। इसके बावजूद खाद्यान्न संकट नहीं आया। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि मक्के से एथनॉल उत्पादन की अनुमति मिलने के बाद मक्के की कीमत 1,200 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़कर 2,800 रुपये प्रति क्विंटल हो गई है। इसके चलते बिहार और उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों में मक्के की खेती तीन गुना बढ़ी है। वर्तमान में 22 प्रतिशत एथनॉल का उत्पादन मक्के से हो रहा है। गडकरी ने कहा कि कृषि क्षेत्र की उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ उत्पादन लागत कम करना भी समान रूप से जरूरी है। तभी जीडीपी में कृषि का योगदान बढ़ेगा और विकसित भारत का सपना साकार होगा।

लेह में प्रदर्शन पर भाजपा का कांग्रेस पर वार, कहा- देश को तोड़ने की कोशिश का जनता देगी जवाब

एजेंसी

नई दिल्ली। लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर हो रहे बंद और बड़े प्रदर्शन के दौरान लेह में हालात तनावपूर्ण हो गए। लेह में प्रदर्शन ने अब राजनीतिक रूप ले लिया है। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए इसे देश को तोड़ने की साजिश बताया। भाजपा ने कहा कि जिस प्रदर्शन को जेन जी आंदोलन बताने की कोशिश की जा रही है, वो वास्तव में कांग्रेस समर्थित है। भाजपा मुख्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता में सांसद संबित पात्रा ने कहा कि लेह में हो रहे प्रदर्शनों को 'जनरेशन-ज़ी आंदोलन' बताने की कोशिश की गई, लेकिन जांच से स्पष्ट हुआ कि इन्हें वास्तव में कांग्रेस ने आयोजित किया था। पात्रा ने आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्षद स्टैंजिंग त्सेपांग (ऊपरी लेह वार्ड) इस पूरे घटनाक्रम के मुख्य भड़काने वाले हैं। उन्होंने कहा, उनकी और उनके कार्यकर्ताओं की कई तस्वीरें सामने आई हैं, जिनमें वह हिंसा

भड़काते दिख रहे हैं। एक वीडियो में वह हथियार लेकर भाजपा कार्यालय की ओर भीड़ का नेतृत्व करते हुए दिख रहे हैं। वह भीड़ को भड़का रहे हैं और भाजपा कार्यालय को निशाना बना रहे हैं। भाजपा सांसद ने आरोप लगाया कि स्टैंजिंग त्सेपांग राहुल गांधी से जुड़े हुए हैं और इसका प्रमाण दोनों की एक साझा तस्वीर है। पात्रा ने आरोप लगाया, ÷कांग्रेस की नीयत खतरनाक है। उनका मूल नारा भारत को तोड़ने का कहा है। यह राहुल गांधी की जॉर्ज सोरोस के साथ मिलकर बनाई गई योजना है। क्योंकि उन्हें जनता का समर्थन नहीं मिल रहा है, इसलिए देश को तोड़ने की साजिश रची जा रही है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी देश में वैसी ही स्थिति भड़का रहे हैं जैसी बांग्लादेश, नेपाल और फिलीपींस में देखने को मिली। पात्रा ने सवाल उठाया, क्या यही कांग्रेस की नेतृत्व शैली है? पात्रा ने कहा, यह भारतवर्ष है- हजारों वर्षों की सभ्यता का इतिहास है। हमारे नागरिक अच्छे और बुरे में फर्क करने की समझ रखते हैं। जनता जानती है कि उनका प्रधानमंत्री उनके लिए क्या कर रहे हैं। दुनिया के बड़े नेता भी भारत की ताकत को स्वीकार कर रहे हैं। देश 7.8 प्रतिशत की दर से बढ़ रहे हैं।÷ कुछ लोग हिंसा भड़काने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन जनता सब जानती है। अगर देश को तोड़ने की कोशिश की गई तो देश जवाब देना जानता है।उल्लेखनीय है कि छठी अनुसूची के तहत विशेष दर्जा और लद्दाख को राज्य का दर्जा देने की मांग को लेकर हो रहे बंद और बड़े प्रदर्शन के दौरान लेह में हालात तनावपूर्ण हो गए। प्रदर्शन के दौरान कुछ युवाओं के उग्र हो जाने के बाद पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने और लाठीचार्ज करना पड़ा। प्रदर्शनकारियों ने भाजपा कार्यालय में आग लगा दी।

सफदरजंग अस्पताल में बच्चों के टाइप-1 मधुमेह के लिए स्थापित उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन

एजेंसी

नई दिल्ली। स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के आठवें दिन सफदरजंग अस्पताल में बच्चों के टाइप-1 मधुमेह के लिए स्थापित उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर सांसद मनोज तिवारी के साथ अस्पताल निदेशक डॉ. संदीप बंसल भी मौजूद रहे। डॉ. बंसल के मुताबिक स्वस्थ नारी सशक्त परिवार अभियान के तहत अब तक 74,933 लाभार्थियों को पंजीकृत किया गया है, जिनमें महिलाओं की भागीदारी 37,767 संख्या के साथ सबसे ज्यादा रही। इस अवसर पर मनोज तिवारी ने युवा रोगियों से बातचीत की और महिला प्रतिभागियों को बाजरा और सैनिटरी नैपकिन वितरित किए। उन्होंने कहा कि भारी संख्या में लोगों का आना निवारक स्वास्थ्य सेवा और लिंग-संवेदनशील प्रथाओं को अपनाने के प्रति जनता के बढ़ते संकल्प को दर्शाता है।

एबी-पीएमजेएवाई की 7वीं वर्षगांठ पर आरएमएल अस्पताल ने खोला आयुष्मान सुविधा केंद्र

एजेंसी

नई दिल्ली। आयुष्मान भारत -प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) के सात वर्ष पूरे होने पर राम मनोहर लोहिया अस्पताल में 'आयुष्मान सुविधा केंद्र' की स्थापना की गई है। जिसका उद्घाटन चिकित्सा निदेशक डॉ. अशोक कुमार ने किया। इस अवसर पर डॉ. उमेश तिवारी ने बताया कि इस केंद्र में 70 वर्ष से अधिक आयु के बुजुर्गों को आयुष्मान हेल्थ कार्ड बनाने में मदद की जाएगी। साथ ही आयुष्मान योजना के तमाम लाभार्थियों को अस्पताल में उपलब्ध चिकित्सा सेवाएं मुहैया कराई जाएंगी। यह नया आयुष्मान सुविधा केंद्र अब एक ही जगह पर लोगों को योजना से संबंधित तमाम जानकारी देगा। इससे पंजीकरण का काम जल्दी होगा और मरीजों को बेहतर इलाज के साथ अच्छा अनुभव भी मिलेगा। इस दौरान कुछ मरीजों ने आयुष्मान सुविधा केंद्र से प्राप्त मदद के लिए अपने अनुभव भी साझा किए। अस्पताल परिसर में स्वस्थ नारी स्वस्थ परिवार अभियान के तहत कई कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। आरएमएल अस्पताल की

नोडल अधिकारी पूजा सेठी ने स्वस्थ नारी, सशक्त परिवार अभियान पर कहा कि अब तक इसके तहत 64,000 मरीज़ों का इलाज किया गया है। उनकी विभिन्न बीमारियों की जांच की है और कई जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए हैं। हर दिन 40 विभागों की भागीदारी के साथ 14-15 गतिविधिया आयोजित करते हैं। आमतौर पर, यहां 12-13 गतिविधियां होती हैं जिसमें मौखिक स्वच्छता और अन्य स्वास्थ्य विषयों पर एक सत्र शामिल है।

अयोध्या छोड़कर चले जाएं मुसलमान, विनय कटियार का विवादित बयान

एजेंसी

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता और पूर्व प्रदेश अध्यक्ष विनय कटियार ने एक विवादित बयान दिया है। उन्होंने कहा है कि अयोध्या में मुसलमानों का क्या काम है? मुसलमान अयोध्या छोड़कर चले जाएं। धन्नीपुर मस्जिद का नक्शा खारिज होने के बाद विनय कटियार ने लखनऊ में कहा कि अयोध्या नगरी के अंदर मस्जिद का कोई मतलब नहीं है, धन्नीपुर में कुछ भी बनने वाला नहीं है। उन्होंने कहा कि अयोध्या जनपद के अंदर मुस्लिम समाज के लोग रह क्यों रहे हैं वो सरयू पार गोंडा या फिर बस्ती चले जाएं। अयोध्या में राम का मंदिर हैउच्चतम न्यायालय के आदेश के बाद अयोध्या के धन्नीपुर गांव में मस्जिद बनाने के लिए पांच एकड़ जमीन दी गई थी। इंडो-इस्लामिक कल्चरल फाउंडेशन इस मस्जिद के निर्माण की जिम्मेदारी संभाल रहा है। हाल ही में मस्जिद के नक्शे को लेकर प्रशासनिक स्तर पर अड़चनें सामने आई और उसका नक्शा खारिज कर दिया गया है।

मिशन-2027 के लिए अभी से जुट जाएं कार्यकर्ता, माहौल अनुकूल : बीएल संतोष

एजेंसी

देहरादून। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय महामंत्री संगठन बीएल संतोष ने नव नियुक्त पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को आगामी कार्यक्रमों की गति दोगुनी करने का आह्वान करते हुए कहा कि मिशन-2027 और 29 के लक्ष्य को लेकर लिए अभी से जुट जाएं। चुनाव की दृष्टि से पदाधिकारियों को पर्याप्त समय मिलना चाहिए,इसलिए शीघ्र पूरी तरह संगठन का विस्तार किया जाए। कुंवावाला स्थित स्थित एक होटल में राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष ने नवनियुक्त सभी प्रदेश और जिला पदाधिकारियों के लिए आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला को संबोधित करते हुए यह बातें कही। इस मौके पर बीएल संतोष ने कहा कि पार्टी में सबको दायित्व मिले या नहीं लेकिन सबकी भूमिका सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि पार्टी पदाधिकारियों के नेतृत्व में पार्टी को 2027 के चुनाव में पुनः जीतना है, हम जितने लायक हैं और माहौल भी अनुकूल है। लंबे समय विपक्ष में रहने के बाद हम आज सत्ता में है। इसलिए समस्या का समाधान लोगों की भाजपा सरकार से अपेक्षा है। सरकार लगातार 10 सालों से विभिन्न समस्याओं का समाधान देश को दे रही है,इसलिए जनता ने हमारे लिए

समाधान का पैमाना भी बढ़ा दिया है। ठीक इसी तरह हम विश्व की सबसे बड़ी और सबसे प्रभावी राजनीतिक संगठन है,लिहाजा हमें भी संगठन के कार्य क्षेत्र और योजनाओं का स्केल यानी पैमाना बढ़ाना है। उन्होंने केंद्र और कई राज्यों की सफल योजनाओं का जिक्र करते उत्तराखंड सरकार की सार्वजनिक संपत्ति पर कब्जा के खिलाफ कार्रवाई की प्रशंसा की। उन्होंने कहा धामी सरकार ने अवैध धार्मिक गतिविधियों के नाम पर अवैध कब्जों से मुक्ति में देश में अग्रणी भूमिका निभाई है। संगठन की कार्यपद्धति पर चर्चा करते हुए कहा कि जिस तरह रोजाना गंगा का जल एक ही स्थान पर रोज बदलता है लेकिन उसका महत्व और प्रकृति नहीं बदलती। ठीक उसी तरह पदाधिकारी का नाम बदला है लेकिन पद का दायित्व और प्रभाव संगठन के अनुरूप ही रहना चाहिए। इस मौके पर मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई देते हुए 2027 के विधानसभा ही नहीं, बल्कि 2029 के लोकसभा चुनाव में जीत दर्ज कराने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आज प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश सांस्कृतिक पुनर्जागरण के मूल मंत्र पर विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। अनेकों जन कल्याणकारी योजनाओं से राज्य का चौमुखी विकास हो रहा है।

राज्य, सतत विकास सूची में देश प्रथम स्थान पर पहुंचा है,इज ऑफ डूइंग में लीडरशिप की श्रेणी में आया है,बेरोजगारी धर्मेंद्र राष्ट्रीय औसत से भी अधिक कमी 4.4 फीसदी लाने में हम सफल हुए हैं। उन्होंने कहा कि डेमोग्राफी परिवर्तन की सभी कोशिशें को सख्त धर्मांतरण कानून, दंगारोधी कानून से रोक लगाने में सफल हुए हैं। नौ हजार एकड़ जमीन अवैध धार्मिक कब्जों से मुक्त कराई, 250 अवैध मदरसे बंद किए, 500 अवैध धार्मिक संरचनाओं को ध्वस्त किया। नीली, पीली,हरी किसी भी तरह की चादर डालकर किसी को जमीन हड़पने नहीं दिया जाएगा।

सेना की पश्चिमी कमान ने भारत-पाकिस्तान युद्ध के छह दशक पूरे होने की मनाई हीरक जयंती

एजेंसी

चंडीगढ़। भारत व पाकिस्तान के बीच 1965 में हुई लड़ाई पर जीत की हीरक जयंती बुधवार को सेना की पश्चिमी कमान, चंडीमंदिर में धूमधाम से मनाई गई।वीर स्मृति में समारोह की शुरुआत छह दशक पहले भारतीय सैनिकों के सर्वोच्च बलिदान और अदम्य वीरता को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ हुई। पूर्व सेना कमांडरों, थल सेनाध्यक्षों और वरिष्ठ पूर्व सैनिकों तथा पश्चिमी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ, लेफ्टिनेंट जनरल मनोज कुमार कटियार, पीवीएसएम, यूवाईएसएम, एवीएसएम ने श्रद्धांजलि अर्पित की, जिसके बाद हरियाणा के माननीय राज्यपाल आशिम कुमार घोष ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। इनके अलावा 1965 के युद्ध में भाग लेने वाले पूर्व सैनिकों

की श्रद्धांजलि ने शहीदों के प्रति राष्ट्र की कृतज्ञता को दर्शाया। हरियाणा के राज्यपाल अशीम घोष ने पूर्व सैनिकों और सेवारत कार्मिकों से बातचीत करते हुए भारतीय सेना के शौर्य, समर्पण और प्रतिबद्धता की सराहना की। उन्होंने पंजाब, राजस्थान और जम्मू-कश्मीर में पश्चिमी कमान की निर्णायक भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने लेफ्टिनेंट कर्नल एबी तारापोर, परमवीर चक्र (मरणोपरांत) और कंपनी क्वार्टरमास्टर हवलदार अब्दुल हमीद, परमवीर चक्र (मरणोपरांत) के अनुकरणीय साहस का विशेष उल्लेख किया, जिनकी वीरता और नेतृत्व की गाथाएं पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेंगी। राज्यपाल ने पश्चिमी कमान संग्रहालय का भी दौरा किया, जिसमें 1965 के युद्ध और उसके बाद के अभियानों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका भी शामिल थी।

टी20 रैंकिंग में भारत का दबदबा, पांड्या-चक्रवर्ती और अभिषेक टॉप पर बरकरार

दुबई (एजेंसी)। भारतीय ऑलराउंडर हार्दिक पांड्या, रहस्यमयी स्पिनर वरुण चक्रवर्ती और आक्रामक सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने बुधवार को जारी आईसीसी टी20 रैंकिंग में अपने-अपने वर्ग में शीर्ष स्थान बरकरार रखा। पिछले हफ्ते दुनिया के नंबर एक गेंदबाज बने चक्रवर्ती ने 14 रेटिंग अंक के फायदे से शीर्ष पर अपनी स्थिति और मजबूत की। उनके 747 अंक हो गए हैं।

पाकिस्तान और बांग्लादेश के खिलाड़ियों की प्रगति

पिछले हफ्ते 11 स्थान की छलांग लगाने वाले पाकिस्तान के अबरार अहमद को नवीनतम रैंकिंग में 12 स्थान का फायदा हुआ है। बांग्लादेश के अनुभवी तेज गेंदबाज मुस्ताफिजुर रहमान ने छह स्थान के फायदे के

साथ शीर्ष 10 में वापसी की है। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने एशिया कप के अपने पिछले दो मैच में आठ के औसत से छह विकेट चटकाए हैं।

पांड्या का ऑलराउंड प्रदर्शन

ऑलराउंडर सूची में शीर्ष पर बरकरार पंड्या गेंदबाजी रैंकिंग में छह स्थान आगे बढ़कर 60वें स्थान पर हैं।

अभिषेक की धमाकेदार बल्लेबाजी

बल्लेबाजी रैंकिंग में सलामी बल्लेबाज अभिषेक ने अपना शीर्ष स्थान बरकरार रखा है। उन्होंने ओमान के खिलाफ भारत के अंतिम ग्रुप मैच में 38 रन की तेजतर्रार पारी खेलने के अलावा रविवार को पाकिस्तान के 171 रन के स्कोर का पीछा करते हुए 74 रन की मैच विजयी पारी खेली। पाकिस्तान के खिलाफ 19 गेंद में नाबाद 30 रन की पारी खेलकर भारत को लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करने वाले तिलक वर्मा को भी तीन स्थान का फायदा हुआ है।

सूर्यकुमार, फरहान और तलत का उभार

कप्तान सूर्यकुमार यादव भी एक स्थान के फायदे से शीर्ष पांच में जगह बनाने के करीब पहुंच गए हैं। भारत के खिलाफ 45 गेंद में 58 रन की पारी खेलने वाले पाकिस्तान के साहिबजादा फरहान 31 स्थान के फायदे से 24वें पायदान पर हैं। श्रीलंका के खिलाफ धैर्यपूर्ण पारी खेलकर पाकिस्तान को जीत दिलाने वाले हुसैन तलत 1474 अंक की लंबी छलांग लगाकर पुरुष टी20 बल्लेबाजी रैंकिंग में संयुक्त रूप से 234वें स्थान पर हैं।

सैफ हसन की शानदार पारी

बांग्लादेश के सैफ हसन भी सुपर चार चरण के मैच में 61 रन की पारी खेलने के बाद 133 रन के फायदे से 81वें पायदान पर हैं।

प्रसिद्ध कृष्णा के सिर में लगी चोट, ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच के दौरान हादसा

लखनऊ (एजेंसी)। भारत ए के तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा को आज ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ दूसरे मैच के दौरान सिर में चोट लग गई, जिसके बाद बाकी बचे मैचों के लिए यश ठाकुर को कन्कशन सब्स्टिट्यूट के तौर पर मैदान में उतारा गया। यह घटना मैच के दूसरे दिन हुई जिससे वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी टेस्ट सीरीज से पहले चिंताएं बढ़ गई हैं। भारत ए की पारी के 39वें ओवर में ऑस्ट्रेलिया ए के तेज गेंदबाज़ हेनरी थॉर्नटन की गेंद कृष्णा के हेलमेट पर लगी, जब वे बाउंसर को पुल करने की कोशिश कर रहे थे।

चोट लगने के बाद कृष्णा का अनिवार्य कन्कशन असेसमेंट हुआ और उन्होंने शुरुआत में अपनी पारी जारी रखी। हालांकि, 42वें ओवर के बाद वे ड्रेसिंग रूम वापस चले गए और उनकी जगह मोहम्मद सिराज क्रीज पर आए। भारत ए की पारी आगे बढ़ने पर सिराज के आउट होने के बाद गुरनूर बरार 11वें नंबर पर आए। जब साई सुदर्शन आउट हुए तो यश ठाकुर को कन्कशन सब्स्टिट्यूट नियमों के तहत अंतिम एकादश में कृष्णा की जगह आधिकारिक तौर पर शामिल किया गया। भारत ए पहली पारी में 194 रन पर आउट हो गई और ऑस्ट्रेलिया ए के 420 रनों के विशाल स्कोर से पीछे रह गई। दूसरे दिन स्टंप्स के समय ऑस्ट्रेलिया ए ने अपनी दूसरी पारी में 3 विकेट पर 16 रन बनाए थे और मैच में अपनी स्थिति मजबूत बनाए रखी। कृष्णा की चोट की गंभीरता की अभी पुष्टि नहीं हुई है। भारत के चयनकर्ता 2 अक्टूबर से शुरू हो रही वेस्टइंडीज के खिलाफ आगामी दो मैचों की श्रृंखला के लिए टेस्ट टीम को अंतिम रूप देने के लिए आज बैठक करने वाले हैं। कृष्णा जसप्रीत बुमराह, सिराज और आकाश दीप के साथ तेज गेंदबाजी विभाग के दावेदारों में शामिल हैं। इन गेंदबाजों ने इस साल की शुरुआत में इंग्लैंड के पांच टेस्ट मैचों के दौरे के दौरान भारत के तेज गेंदबाजी आक्रमण का आधार बनाया था, जहां कृष्णा ने तीन मैचों में 37.07 की औसत से 14 विकेट लिए थे। वर्तमान भारत ए और ऑस्ट्रेलिया ए श्रृंखला अगस्त के पहले सप्ताह में इंग्लैंड दौरे के समापन के बाद से कृष्णा का पहला प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन है। पहले मैच में उन्होंने 21 ओवर में 90 रन देकर एक भी विकेट नहीं लिया था और दूसरे मैच की पहली पारी में उन्होंने 17 ओवर में 76 रन देकर 1 विकेट लिया था।

अभिषेक 900 रेटिंग का आंकड़ा पार करने वाले तीसरे भारतीय बल्लेबाज बने

दुबई (एजेंसी)। एशिया कप क्रिकेट में आक्रामक बल्लेबाजी कर सभी को प्रभावित करने वाले भारतीय टीम के युवा सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा को आईसीसी टी20 रैंकिंग में 23 अंकों का लाभ हुआ है। एशिया कप 2025 में ओमान के खिलाफ 38 और पाकिस्तान के खिलाफ 74 रनों की पारी खेलने के बाद उनकी रेटिंग 907 पहुंच गई है। इसी के साथ ही अभिषेक 900 रेटिंग का आंकड़ा पार करने वाले सूर्यकुमार यादव और विराट कोहली के बाद तीसरे भारतीय बल्लेबाज बने हैं। सबसे अधिक रेटिंग अंक इंग्लैंड के डेविड मलान के नाम 919 है। वहीं दूसरे नंबर पर सूर्यकुमार यादव हैं उनके 912 जबकि विराट कोहली के 909 रेटिंग अंक हैं। इसके बाद 907 रेटिंग अंक के साथ ही अभिषेक चौथे नंबर पर हैं।

वहीं गेंदबाजी रैंकिंग में वरुण चक्रवर्ती जबकि ऑलराउंडरों में हार्दिक पांड्या शीर्ष पर बरकरार हैं। भारतीय बल्लेबाजों में अभिषेक शर्मा के अलावा तिलक वर्मा और सूर्यकुमार यादव को 1-1 स्थान का फायदा हुआ है। तिलक तीसरे

जबकि सूर्यकुमार छठे स्थान पर पहुंच गए हैं। वहीं पाकिस्तान के साहिबजादा फरहान 31 स्थान के लाभ के साथ ही 24वें स्थान पर पहुंच गए हैं। पाक के ही हुसैन तलत को श्रीलंका के खिलाफ अच्छी पारी खेलने के कारण लाभ मिला है। वह 1474 पायदान की लंबी छलांग लगाकर संयुक्त 234वें स्थान पर पहुंच गए हैं। पाकिस्तान के स्पिनर अबरार अहमद ने गेंदबाजों की रैंकिंग में 12 पायदानों की लंबी छलांग लगाकर सीधा चौथे नंबर पर पहुंच गए हैं। वहीं भारत के स्पिनर वरुण चक्रवर्ती 747 की रेटिंग के साथ पहले पायदान पर बने हुए हैं। इनके अलावा श्रीलंका के वानिंदु हसरंगा एक पायदान ऊपर 6ठे जबकि बांग्लादेश के मुस्तफिजुर रहमान 6 पायदान की छलांग लगाकर 9वें नंबर पर पहुंच गए हैं।

वैभव सूर्यवंशी ने तोड़ा सर्वाधिक छक्कों का रिकॉर्ड, शानदार 70 रनों की पारी में लगाए 6 छक्के

स्पोर्ट्स डेस्क (एजेंसी)। भारत के 14 वर्षीय वैभव सूर्यवंशी अंडर-19 मैच में क्रिकेट को मैदान पर खींच ला रहे हैं। आईपीएल 2025 के बाद सूर्यवंशी ने 24 सितंबर को ब्रिस्बेन के इयान हीली ओवल में ऑस्ट्रेलिया ए के खिलाफ दूसरे यूथ वनडे में ताबड़तोड़ बल्लेबाजी की। ऐसा करते हुए उन्होंने अंडर-19 क्रिकेट वन-डे में किसी भारतीय द्वारा सर्वाधिक छक्के लगाने का रिकॉर्ड तोड़ दिया।

पिछला रिकॉर्ड भारत के अंडर-19 विश्व कप 2012 विजेता कप्तान उन्मुक्त चंद के नाम था, जिन्होंने 38 छक्के लगाए थे। भारतीय सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और विकेटकीपर-बल्लेबाज संजू सैमसन क्रमशः 30 और 22 छक्कों के साथ इस सूची में दूसरे स्थान पर हैं। वहीं इस बाएं हाथ के बल्लेबाज सूर्यवंशी के अब 10 मैचों में 41 छक्के हो गए हैं। वह एकदिवसीय क्रिकेट में लगभग 13 गेंदों पर एक छक्का लगाते हैं।

मैच में सूर्यवंशी ने धीमी शुरुआत के बाद तेज गति पकड़ी। पिछले मैच में 33 रनों की छोटी पारी खेलने के बाद सूर्यवंशी की शुरुआत धीमी रही क्योंकि उनके सलामी जोड़ीदार और कप्तान आयुष म्हात्रे दो गेंदों पर शून्य पर आउट हो गए। सूर्यवंशी ने चौथे ओवर में अपना पहला चौका लगाया। एक समय वह 29 गेंदों पर 10 रन बनाकर खेल रहे थे।

नौवें ओवर में जॉन जेम्स को मैदान पर उतारा गया और सूर्यवंशी ने उन्हें बैकवर्ड स्क्वेयर लेग पर छक्का जड़ा। 12वें ओवर में सूर्यवंशी ने हेडन शिलर की गेंद पर दो छक्के लगाए। उन्होंने 54 गेंदों में एक छक्के के साथ अपना अर्धशतक पूरा किया। 19वें ओवर में सूर्यवंशी यश देशमुख की गेंद पर आउट हो गए। उन्होंने 68 गेंदों में 70 रन की पारी में 6 छक्कों के अलावा पांच चौके भी लगाए। उनके आउट होने के समय भारत अंडर-19 का स्कोर 117/2 था।

सैमसन की जगह राहुल होता तो मैच पांच ओवर पहले ही खत्म हो जाता : अख्तर

लाहौर। पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज शोएब अख्तर ने कहा है भारतीय टीम में अगर विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन नहीं होते तो पाक टीम सुपर फोर मुकाबले में और भी जल्दी हार जाती। अख्तर ने एक शो में कहा, अगर इस टीम में केएल राहुल होते तो हमारी और खराब हार होती। उन्होंने कहा कि सैमसन की जगह केएल राहुल को होना था। अगर वह होता तो एक से बढ़कर एक शॉट लगाता। अगर राहुल होता तो ये मैच पांच ओवर पहले ही समाप्त हो जाता। एशिया कप के सुपर 4 मुकाबले में भारतीय टीम ने पाकिस्तान को 6 विकेट से हराया था। पाक टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट के नुकसान पर 171 रन बनाए थे। वहीं भारतीय टीम ने एक ओवर पहले ही चार विकेट के नुकसान पर ये लक्ष्य हासिल कर लिया था। भारतीय टीम की ओर से अभिषेक शर्मा ने 39 गेंद में 74 और शुभमन गिल ने 28 गेंद में 47 रन बनाये जबकि तिलक वर्मा ने 19 गेंदों में 30 रन बनाये। वहीं संजू सैमसन 17 गेंदों में केवल 13 रन ही बना पाये थे। वहीं इससे पहले ग्रुप स्तर के मुकाबले में भी भारतीय टीम ने पाक को एकतरफा मुकाबले में 7 विकेट से हराया था।

कार्तिक हांगकांग सिक्सेस में टीम इंडिया की कप्तानी करेंगे, अश्विन भी खेलेंगे

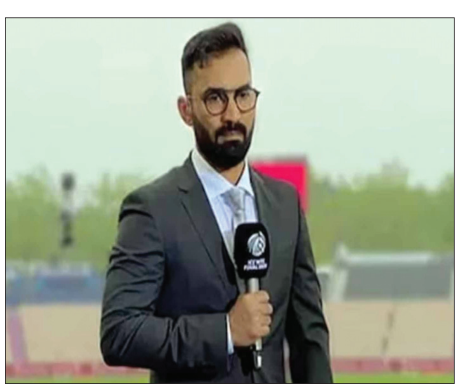

मुम्बई। पूर्व क्रिकेटर दिनेश कार्तिक को नवंबर में होने वाले हांगकांग सिक्सेस टूर्नामेंट के लिये टीम इंडिया का कप्तान बनाया गया है। इस टूर्नामेंट में पूर्व स्पिनर आर अश्विन भी खेलते हुए दिखेंगे। यह टूर्नामेंट सात नवंबर से शुरु होगा। कार्तिक ने कहा, ''हांगकांग सिक्सेस में टीम इंडिया की कप्तानी करना मेरे लिए सम्मान की बात होगी। इसमें मुझे कई अच्छे खिलाड़ियों के साथ खेलने का अवसर मिलेगा, इसलिए में इसमें खेलने को लेकर उत्साहित हूं। इसमें हमारा लक्ष्य निडर होकर खेलना रहेगा।'' वहीं हाल में आईपीएल को अलविदा कहने वाले अश्विन भी इस टूर्नामेंट में खेलने को लेकर उत्साहित हैं। संन्यास के बाद ही उन्होंने विदेशी लीग में संभावनाएं तलाशने की बात कह दी थी। ऐसे में हांगकांग सिक्सेज में खेलने को लेकर अश्विन भी काफी उत्साहत हैं। उन्होंने पिछले सप्ताह कहा थी कि यह बेहद रोमांचक साबित होगा, जिसमें वह अपने पूर्व साथियों के साथ खेलने को लेकर उत्सुक हैं। अश्विन और कार्तिक के खेलने को लेकर क्रिकेट हांगकांग चाइना के अध्यक्ष बुर्जी श्रॉफ भी उत्साहित हैं। श्रॉफ ने कहा, '' कार्तिक को हांगकांग सिक्सेस 2025 के लिये टीम इंडिया का कप्तान बनाकर हमें खुशी हो रही है। उनकी कप्तानी और अपार अनुभव टीम के काफी काम आयेगा और हमें भरोसा है कि उनकी मौजूदगी दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनेगी।''

हार से निराश श्रीलंकाई कप्तान बोले, लगातार दो विकेट गिरने से मैच हमारे हाथ से फिसला

अबू धाबी (एजेंसी)। एशिया कप के दूसरे सुपर फोर मैच में पाकिस्तान से मिली हार के बाद श्रीलंकाई क्रिकेट टीम के कप्तान चरिथ असलांका ने निराशा जतायी है। इस हार से श्रीलंकाई टीम फाइनल की रेस से तकरीबन बाहर हो गयी है। इस मैच में उसे पाक के हाथों पांच विकेट से हार का सामना करना पड़ा। वहीं पहले सुपर फोर में उसे बांग्लादेश ने हराया था। असलांका ने माना है कि बल्लेबाजी के दौरान आठवें ओवर में दो बल्लेबाजों के आउट होने से मुकाबला उनकी टीम के हाथ से निकल गया था। असलांका स्वयं उस ओवर में आउट होने वाले पहले बल्लेबाज थे। वहीं उनके बाद अगली गेंद पर ही दासुन शनाका भी पेवेलियन लौट गये। इससे श्रीलंकाई टीम श्रीलंका 133 रन ही बना पायी।

असलांका ने कहा, हमारे सलामी बल्लेबाज अच्छी शुरुआत नहीं दिला पाये। पावरप्ले के अंत तक हमारे पास केवल 53 रन थे। हमने तीन विकेट गंवा दिए थे पर हम तब भी अच्छी स्थिति में थे, क्योंकि पावरप्ले में इतने रन बनाना आसान नहीं होता पर मैं और दासुन लगातार गेंदों पर आउट हो गए और यही वह समय था जब सबसे अधिक नुकसान हुआ।

उन्होंने आगे कहा, जब हम आउट हुए, तब न तो दासुन और न ही मैं बड़े शॉट लगाने के प्रयास कर रहे थे। हालांकि पिच की खराब बल्लेबाजी के लिए हम इस प्रकार का बहाना नहीं बना सकते। हमें जिम्मेदारी लेनी ही होगी। इस मैच में कामिंदु मेंडिस ने 44 गेंदों पर 50 रन बनाकर टीम को कुछ सम्मानजनक बनाया।

उन्होंने आगे कहा, हमने अपनी पारी के पहले भाग में पांच विकेट गंवा दिए थे, और ऐसे में वापसी करना काफी कठिन होता है। कामिंदु और अन्य खिलाड़ियों ने काफी अच्छा प्रयास किया पर वानिन्दु के आउट होने से टीम

का और अधिक रन बनाने का सपना टूट गया। कप्तान ने कहा, हमने अब तक एक अतिरिक्त गेंदबाज के साथ उतरकर देखा है पर तब हमें एक विशेषज्ञ बल्लेबाज की कमी खली जिससे टीम रनों के मामले में पीछे रह गयी। कई बार हमने एक अतिरिक्त बल्लेबाज के साथ खेला है पर तब हम कम गेंदबाज होने से कोर का बचाव नहीं कर पाए। ऐसे में अब हमें सीखना होगा कि र पार्ट-टाइम गेंदबाजों का बेहतर इस्तेमाल कैसे किया जाए। इसमें हमें सुधार करने की जरूरत है। पाक के खिलाफ मुकाबले में श्रीलंका ने इस मुकाबले के लिए अपने गेंदबाजी आक्रमण को मजबूत करने और कामिल मिशारा को बाहर करके करुणारत्ने को उतारा था।

इंग्लैड की महिला क्रिकेटर फ्रेया डेविस अब वकालत करती दिखेंगी

लंदन। इंग्लैंड की महिला क्रिकेटर फ्रेया डेविस अब वकालत करेंगी। फ्रेया ने 29 साल की उम्र में ही क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। ऐसे में अब उनका पेशा बदल रहा है। वह पेशेवर क्रिकेटर की जगह पर वकील बन गयी हैं। फ्रेया ने ये फैसला इसलिए किया है, क्योंकि अब वह वकालत की दुनिया में नाम कमाना चाहती हैं। वह ट्रेनी सॉलिसिटर के रूप में नय करियर शुरु कर रही हैं इस खिलाड़ी ने अपना अंतिम मुकाबला हैंपशायर की टी की ओर से लंकाशायर के खिलाफ एकदिवसीय विश्व कप का फाइनल खेला था। उस मैच में फ्रेया नंबर चार पर बल्लेबाजी करते हुए 41 गेंदों में 41 रन बनाये थे। इसके अलावा 9.3 ओवर में 38 रन देकर फ्रेया ने एक विकेट भी लिया था हालांकि वह अपनी टीम की हार नहीं टाल पायीं। फ्रेया ने ससेक्स के लिए डेब्यू किया था। फ्रेया ने इंग्लैंड के लिए टी20 और एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय भी खेले हैं पर वह टेस्ट प्रारूप में जगह नहीं बना पायीं फ्रेया को 35 अंतरराष्ट्रीय मैचों का अनुभव है। करीब 15 साल तक उन्होंने क्रिकेट खेला, लेकिन अब वह अदालत में बहस करती हुई दिखेंगी। साल 2019 के बाद से 2023 तक 9 एकदिवसीय और 26 टी20 मैच खेलने वाली फ्रेया डेविस ने टी20 अंतराष्ट्रीय क्रिकेट में 23 और एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 10 विकेट लिए थे।

कमाई कम होने और अवसर नहीं मिलने से डिकॉक ने बदला फैसला

जोहांसबर्ग (एजेंसी)। । दक्षिण अफ्रीका के पूर्व क्रिकेटर क्विंटन डिकॉक के एकदिवसीय क्रिकेट में संन्यास से वापसी का राज सामने आया है। इसके दो कारण सामने आये हैं। एक कारण संन्यास के बाद उम्मीद से कम कमाई होना और दूसरा टी20 में खेलने के पर्याप्त अवसर नहीं मिलना है। डिकॉक ने दो साल पहले खेल से संन्यास ले लिया था तब उनकी नजरें विदेशी लीग में मोटी कमाई पर थी पर उन्हें अधिक लाभ नहीं मिला। इसी कारण उन्हें वापसी करनी पड़ी है। डिकॉक ने साल 2021 में ही टेस्ट क्रिकेट को अलविदा कह

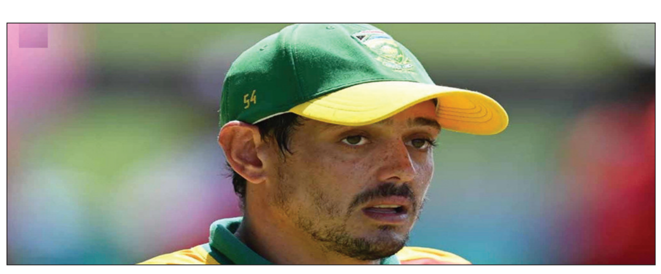

दिया था। इसके बाद से ही वह एकदिवसीय और टी20 अंतराष्ट्रीय में सक्रिय थे पर 2023 के एकदिवसीय विश्व कप के बाद उन्होंने एकदिवसीय प्रारूप को भी अलविदा कह दिया था। वह दुनिया की अलग-अलग टी20 लीग्स में खेलना चाहते थे और दक्षिण अफ्रीका के लिए सिर्फ टी20 क्रिकेट खेलने वाले थे पर एकदिवसीय से संन्यास के बाद उन्हें टी20 टीम से भी बाहर कर दिया गया था। उन्होंने अपना अंतिम टी20 मैच दक्षिण अफ्रीका के लिए टी20 विश्व कप 2024 में खेला था। डिकॉक को दक्षिण अफ्रीका की टीम में अधिक अवसर मौके नहीं मिल पा रहे थे। एक साल से ज्यादा समय से वे टी20 टीम से भी बाहर थे। डिकॉक के टीम में लौटने का दूसरा कारण ये भी है कि उनको रिटायरमेंट के बाद टी20 लीग में उतना पैसा नहीं मिल रहा, जितना उनको तब मिलता था जब वे देश के लिए खेलते थे।

इंडियन फुटबॉल के लिए बुरी खबर, 2026 एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले पाएगी पुरुष टीम

नई दिल्ली। भारतीय फुटबॉल प्रेमियों के लिए बुरी खबर है। दरअसल, साल 2018 में एशियाई खेलों में हिस्सा नहीं ले पाने के बाद भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम का अगले साल होने वाले एशियन गेम्स में हिस्सा लेना एक बार फिर असंभव लग रहा है। बता दें कि, भारतीय पुरुष फुटबॉल टीम को एशियाई खेलों में हिस्सा लेने के लिए फिर सरकार की दया पर निर्भर होगी। वहीं जापान के आइची-नागोया में 20वें एशियाई खेल होने हैं। इस बहु-खेल प्रतियोगिता का 19 सितंबर से 4 अक्टूबर 2026 तक होना है। टोक्यो में 1958 और हिरोशिमा में 1994 के बाद नागोया एशियाई खेलों की मेजबानी करने वाला तीसरा जापानी शहर होगा। खेल मंत्रालय ने बुधवार 24 सितंबर 2025 को आइची-नागोया एशियाड के लिए व्यक्तिगत एथलीटों और टीमों की पात्रता के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए। ताजा स्थिति के अनुसार, एशिया में 24वें स्थान पर काबिज फुटबॉल टीम उन सख्त मानदंडों को पूरा नहीं करती है जिनके अनुसार केवल पदक जीतने की क्षमता रखने वाली टीमों और एथलीटों को ही इस महाआयोजन में देश का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना जाएगा। बता दें कि, खेल मंत्रालय की तरफ से जारी परिपत्र में कहा गया है कि फुटबॉल और हॉकी जैसे टीम खेलों और रिले, युगल और मिश्रित युगल जैसी टीम स्पर्धाओं के लिए मानक एशियाई चैंपियनशिप में शीर्ष आठ में स्थान या महाद्वीप में टॉप 8 रैंकिंग होगी।

'शाहीन अफरीदी जान दे देगा': संभावित भारत बनाम पाक एशिया कप फाइनल पर बोले पाकिस्तानी तेज गेंदबाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान के तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी ने मंगलवार को अबू धाबी में श्रीलंका के खिलाफ सुपर फोर के करो या मरो वाले मुकाबले में अपनी टीम के लिए बेहतरीन प्रदर्शन किया। उन्होंने इस करो या मरो वाले मुकाबले में तीन अहम विकेट चटकाए जिससे पाकिस्तान की एशिया कप 2025 की उम्मीदें जिंदा रहीं। मैच के बाद एक रिपोर्टर ने शाहीन से पूछा कि जब भी पाकिस्तान और भारत के बीच मुकाबला होता है, तो उन्हें कितनी कड़ी निगरानी का सामना करना पड़ता है।

पत्रकार ने पूछा, 'मेरा सवाल यह है कि जब भी पाकिस्तान-भारत मैच होता है, तो हर कोई शाहीन अफरीदी पर नजर रखता है। लेकिन पिछले 4-5 मैचों में शाहीन अफरीदी ने ऐसा प्रदर्शन नहीं किया है। तो, अगर अगले मैच में पाकिस्तान-भारत फाइनल होता है, तो क्या हम शाहीन अफरीदी का खराब फॉर्म फिर से देख सकते हैं?' अफरीदी ने एक शरारती मुस्कान के साथ जवाब दिया, 'क्या आप मुझे ड्रॉप करने की कोशिश कर रहे हैं? (हंसते हुए)' अगर शाहीन अफरीदी पाकिस्तान से खेलेगा, तो अपनी जान भी दे देगा।'

एशिया कप में पाकिस्तानी खिलाड़ियों के आक्रामक व्यवहार को कई घटनाएं भी देखने को मिलीं - प्रशंसकों और विरोधियों, दोनों के प्रति और अफरीदी से पूछा गया कि क्या यह आक्रामकता हारिस रऊफ और साहिबजादा फरहान जैसे खिलाड़ियों की पूर्व नियोजित रणनीति का हिस्सा थी। रऊफ जहां भारतीय प्रशंसकों का मजाक उड़ाते नजर आए, वहीं रविवार को सुपर फोर मुकाबले के दौरान फरहान के गोलीबारी वाले जश्न की भी आलोचना हुई।

अफरीदी ने कहा, 'आक्रामक होने की कोई खास योजना नहीं है, हम खेलना शुरू करने के बाद से ही आक्रामक रहे हैं। क्रिकेट इसी तरह खेला जाता है और टीम का मनोबल ऊंचा रखा जाता है।' जब उनसे पूछा गया कि क्या टीम ने संभावित भारत-पाकिस्तान फाइनल पर चर्चा की है, तो अफरीदी ने इस चर्चा को कमतर आंकते हुए कहा। उन्होंने कहा, 'हम अभी फाइनल में नहीं हैं, जब पहुंचेंगे, तब इस बारे में सोचेंगे।'

ब्लैक कॉमेडी फिल्म लॉर्ड कर्जन की हवेली में नजर आने वाली हैं रसिका दुग्गल

मिर्जापुर वेब सीरीज में बीना त्रिपाठी के किरदार से मशहूर हुईं एक्ट्रेस रसिका दुग्गल जल्द ही एक ब्लैक कॉमेडी फिल्म में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म का नाम है लॉर्ड कर्जन की हवेली। रसिका दुग्गल ने फिल्म लॉर्ड कर्जन की हवेली का एक शानदार पोस्टर इंस्टाग्राम पर शेयर किया। फिल्म के इस पोस्टर में फिल्म के मुख्य कलाकार नजर आ रहे हैं।

लॉर्ड कर्जन की हवेली इस साल 10 अक्तूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म का निर्देशन अंशुमान झा ने किया है, जो उनकी पहली निर्देशित फिल्म है। इस फिल्म में अर्जुन माथुर, तन्मय धनानिया और परेश पाहुजा भी अहम किरदारों में नजर आएंगे।

लॉर्ड कर्जन की हवेली

मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, यह फिल्म पूरी तरह से ब्रिटेन में एक ही लेंस से शूट की गई है। यह एक रहस्यमयी और मजेदार कहानी है, जिसमें कॉमेडी, थ्रिलर और पहचान जैसे विषयों को दर्शाया गया है। रसिका ने बताया कि फिल्म का प्रीमियर मेलबर्न में हुआ था और इसे कई फिल्म समारोहों में दर्शकों ने खूब पसंद किया। खास तौर पर शिकागो में दर्शकों के साथ इसे देखने का अनुभव उन्हें बहुत अच्छा लगा। फिल्म का निर्माण गोल्डन रेशियो फिल्म्स और फर्स्ट रे फिल्म्स ने मिलकर किया है। इस फिल्म को मैक्स मार्केटिंग लिमिटेड प्रस्तुत कर रहा है।

सेलेब्स ने दी शुभकामनाएं

एक्टर संजय बिश्नोई ने रसिका की इस पोस्ट पर क्लैप इमोजी शेयर किया है। वहीं रसिका के फैंस उनकी इस फिल्म को लेकर बेहद उत्साहित हैं। एक फैन ने लिखा, अरे वाह नया वाला.. बहुत अच्छा लग रहा है.. इसे देखने के लिए उत्साहित हूं, एक और फैन ने लिखा, वाह, यह तो बहुत बढ़िया है, हवेली के लिए शुभकामनाए।

द बैड्स ऑफ बॉलीवुड फेम साहेर बंबा ने बताया आर्यन खान के साथ काम करने का अनुभव

अभिनेत्री साहेर बंबा ने हाल ही में रिलीज हुई वेब सीरीज द बैड्स ऑफ बॉलीवुड में अपने अनुभवों को साझा किया है। इस सीरीज में वह करिश्मा तंवर का किरदार निभा रही हैं। इस शो में उनका सबसे खास अनुभव आर्यन खान के साथ काम करना था। साहर ने कहा, आर्यन एक तरह से हार्ड टास्क मास्टर हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह एकदम सख्त हैं। वह कलाकारों से उनके बेहतरीन प्रदर्शन की उम्मीद करते हैं। वह केवल स्क्रिप्ट तक सीमित नहीं रहते, बल्कि कलाकारों को अपने किरदार की गहराई तक पहुंचने के लिए प्रेरित करते हैं। उनके काम के प्रति लगाव और स्पष्ट सोच देखकर ऐसा लगता है कि वह किसी अनुभवी निर्देशक से कम नहीं हैं। उन्होंने आगे कहा, निर्देशक के तौर पर आर्यन सेट पर पूरी तरह से उपस्थित रहते हैं और काम को लेकर उनका ध्यान हर छोटी से छोटी बात पर होता है। आर्यन के साथ काम करते हुए मुझे कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मैं एक नए निर्देशक के साथ काम कर रही हूं। बल्कि, ऐसा लगा जैसे मैं ऐसे निर्देशक के साथ काम कर रही हूं जो दशकों से इस क्षेत्र में है। सेट पर चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न हों, आर्यन पूरी शांति से अपने काम को संभालते हैं और किसी भी परेशानी से घबराते नहीं हैं। उनकी यह स्थिरता पूरे सेट के लिए एक प्रेरणा की तरह होती है। साहर ने बताया, आर्यन बहुत संवेदनशील और विचारशील व्यक्ति हैं। शूटिंग खत्म होने के बाद भी वह कलाकारों की परवाह करते हैं। वह कई बार शूटिंग खत्म होने के बाद कॉल करके पूछते थे कि कलाकारों को अपने सीन कैसे लगे, क्या वे अपने प्रदर्शन से खुश हैं या कोई सुधार चाहिए। यह छोटे-छोटे काम दिखाते हैं कि वह अपने कलाकारों की कितनी परवाह करते हैं। इस तरह का व्यवहार किसी भी कलाकार को आत्मविश्वास देता है। द बैड्स ऑफ बॉलीवुड वेब सीरीज ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफ्लिक्स पर उपलब्ध है।

आवेज दरबार से रिश्ते के बारे में बताने की जरूरत नहीं

हाल ही में 'बिग बॉस 19' के घर से बाहर हुई अभिनेत्री नगमा मिराजकर ने साथी कंटेस्टेंट आवेज दरबार के साथ अपने रिश्ते को लेकर खूब सुर्खियां बटोरीं थीं। उन्होंने एक विशेष बातचीत में अपने रिश्ते और बिग बॉस हाउस में चल रहे लव एंगल्स पर बात की। अपने और आवेज के रिश्ते पर बात करते हुए नगमा ने कहा, मैं आवेज दरबार को लंबे समय से जानती हूं और उनके बारे में कोई बात मुझसे छुपी नहीं है। मुझे किसी को भी हमारे रिश्ते के बारे में बताने की जरूरत नहीं है। हम एक-दूसरे को जानते हैं और यही मायने रखता है।

शादी की प्लानिंग के बारे में बात करते हुए नगमा ने ने कहा, वह और आवेज जल्द ही शादी करने की योजना बना रहे हैं। मैं चाहती हूं कि वह बिग बॉस में अंत तक रहे और जीतकर वापस आए। उसके बाद इंशाअल्लाह, हम शादी के बंधन में बंध जाएंगे। नगमा को कुछ प्रोजेक्ट में इसलिए लिया गया कि वो आवेज दरबार को जानती हैं, इस पर नगमा बोलीं, मुझे लगता है कि ऐसा कहना अनुचित है। हमने एक-दो गानों पर साथ काम किया है, लेकिन यह दावा करना कि हमें कनेक्शन के जरिए काम मिलता है, सही नहीं है। हर किसी को अपनी मेहनत और प्रतिभा से काम मिलता है। हमने यहां तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत की है और ईश्वर की दया से हम अपनी मेहनत से आगे बढ़ते रहेंगे। नगमा ने कहा कि वह बाहर से ही आवेज दरबार को सपोर्ट कर रही हैं और चाहती हैं कि इस बार वह विनर बनें।

नोरा फतेही ने इंटरनेशनल पंजाबी एंथम के बाद बांग्ला गाने की दी झलक

हाल ही में, ग्लोबल स्टार नोरा फतेही ने यो यो हनी सिंह के साथ अपने धमाकेदार इंटरनेशनल पंजाबी एंथम, आई एम सो रिच की घोषणा की। इस ट्रैक को पहले से ही अगला ग्लोबल पार्टी एंथम माना जा रहा है। लेकिन यह एंथम रिलीज़ होने से पहले ही, नोरा ने संगीतकार संजॉय के साथ अपनी हालिया बातचीत से एक नया उत्साह जगा दिया है — इस बार बांग्ला में! यह हल्की-फुल्की बातचीत जल्द ही एक मज़ेदार वादा बन गई, जब नोरा ने हँसते हुए कहा, दोस्तों, मुझे नहीं पता इस आदमी ने मुझसे क्या करवाने के लिए राजी कर लिया है... हम एक बांग्ला गाना कर रहे हैं। मेरे लिए दुआ करना! संजॉय ने तो एक संभावित हुक लाइन भी सुझा दी- की माया, लगाइसो।

अगर यह प्रयोग साकार होता है, तो बांग्ला दर्शकों को जल्द ही नोरा की आवाज़ में अपनी भाषा का कोरस सुनने को मिल सकता है — और यह उनकी बहुभाषी ग्लोबल आर्टिस्ट की पहचान को और मजबूत करेगा। नोरा ने कहा, सिर्फ ग्लोबल होना ही नहीं, बल्कि हर संस्कृति को सच्चे दिल से सेलिब्रेट करना ज़रूरी है। इस बीच, अपने संगीत प्रयोगों के अलावा, नोरा फ़तेही बड़े पर्दे पर भी अपने पंख फैला रही हैं — वह कंचना 4 में लीड रोल में नज़र आएंगी और कई नए प्रोजेक्ट्स की तैयारी में हैं। चाहे संगीत हो या सिनेमा, यह ग्लोबल स्टार फिलहाल रुकने के मूड में नहीं है।

संगीतकार संजॉय के साथ एक मज़ेदार बातचीत के दौरान नोरा ने बंगाली गाने में अपनी आवाज़ देने की संभावना को छेड़ा। संजॉय ने जब उन्हें बांग्ला कोरस गाने का सुझाव दिया, तो नोरा — जो पहले ही अरबी, स्वाहिली और पंजाबी में गा चुकी हैं — उन्होंने माना कि बांग्ला बहुत खूबसूरत लेकिन थोड़ा डर लग रहा है। उन्होंने मज़ाक में पूछा, अगर मैं बेवकूफ जैसी लगूं तो? जिस पर संजॉय ने भरोसा दिलाया, नहीं, तुम नहीं लगोगी। हम इसे एक जश्न बनाएंगे।

यश के साथ टॉक्सिक में दिखेंगी रुक्मिणी वसंत

ऋषभ शेट्टी अभिनीत फिल्म कांतारा चैप्टर 1 में अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत अहम भूमिका निभाएंगी। आज इस फिल्म का ट्रेलर जारी हुआ है। रुक्मिणी के पास ऋषभ शेट्टी के बाद एक और साउथ सुपरस्टार की फिल्म भी है। वे केजीएफ फेम रॉकी भाई उर्फ यश की अगली फिल्म में भी नजर आएंगी।

यश की इस फिल्म में नजर आएंगी रुक्मिणी

रुक्मिणी साउथ सुपरस्टार यश की अगली बहु चर्चित फिल्म टॉक्सिक में भी नजर आएंगी। रुक्मिणी वसंत चर्चित एक्ट्रेस हैं, जो साउथ इंडस्ट्री में सक्रिय हैं। वे मुख्य रूप से कन्नड़ तमिल और तेलुगु फिल्मों में काम करती हैं। उन्होंने बीरबल (2019) से अपने करियर की शुरुआत की थी।

कब रिलीज होगी कांतारा चैप्टर 1

रुक्मिणी ने हाल के दिनों में कांतारा चैप्टर 1 में अपनी एंट्री को लेकर सुर्खियों बटोरीं। इसके बाद रुक्मिणी यश की टॉक्सिक और प्रशांत नील-जूनियर एनटीआर की फिल्म ड्रैगन में भी अहम भूमिका में नजर आएंगी। बता दें कि 'कंतारा: चैप्टर 1' के निर्देशन की कमान भी ऋषभ शेट्टी ने संभाली है। यह होम्बले फिल्म्स के सबसे बड़े प्रोजेक्ट में से एक है। यह फिल्म दो अक्तूबर को दशहरा के मौके पर रिलीज होगी।

'निशानची' में रिंकू के किरदार में हो रही वेदिका पिंटो की चर्चा

अनुराग कश्यप की फिल्म 'निशानची' रिलीज हो चुकी है। फिल्म को लेकर काफी चर्चा हो रही है। अब रिलीज के बाद भी दर्शकों से फिल्म को मिली-जुली प्रतिक्रिया मिल रही है। फिल्म के रिलीज होने के बाद अब मुख्य अभिनेता ऐश्वर्य ठाकरे के अलावा अगर किसी की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है, तो वो हैं वेदिका पिंटो। वेदिका 'निशानची' की हीरोइन हैं।

बचपन से डांस में थी रुचि

मुंबई में एक ईसाई परिवार में जन्मीं वेदिका पिंटो के पिता जॉनी पिंटो एक हिंदी फिल्म बिजनेस एसोसिएट थे और मां बैंकर हैं। वेदिका को शुरू से ही एक्टिंग और डांस में रुची थी। स्कूल के समय में उन्होंने कई नेशनल और इंटरनेशनल डांस प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ लंदन से ग्रेजुएशन किया है।

म्यूजिक वीडियो 'लिग्गी' से मिली पहचान

बॉलीवुड में एंट्री से पहले वेदिका कुछ एक म्यूजिक वीडियो में नजर आई हैं। वेदिका को पहचान 2019 में आए ऋत्विज के म्यूजिक वीडियो 'लिग्गी' से मिली। यह गाना काफी पसंद किया गया इसके बाद वो अरमान मलिक के गाने 'बस तुझसे प्यार हो' में भी नजर आईं।

'ऑपरेशन रोमियो' से की बॉलीवुड में शुरुआत

कई ऑडिशन देने के बाद वेदिका को पहली फिल्म मिली साल 2022 में, जब वो नीरज पांडे द्वारा निर्मित 'ऑपरेशन रोमियो' में नजर आईं। हालांकि, यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिरी। इसके बाद वो आदित्य रॉय कपूर और मृणाल ठाकुर की फिल्म 'गुमराह' में नजर आईं। यह फिल्म भी कुछ खास नहीं रही।

सोशल मीडिया पर एक्टिव हैं वेदिका

वेदिका सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहती हैं। वो अपने इंस्टाग्राम पर अक्सर अपनी फोटोज शेयर करती रहती हैं। इंस्टाग्राम पर वेदिका के 2 लाख 53 हजार से अधिक फॉलोअर्स हैं।

'निशानची' में वेदिका ने निभाया है डांसर का किरदार

'निशानची' वेदिका पिंटो की तीसरी फिल्म है। इस फिल्म में वेदिका ने रिंकू का किरदार निभाया है, जो एक डांसर है। फिल्म में वेदिका के अभिनय की काफी तारीफ भी हो रही है। अनुराग कश्यप ने भी हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान वेदिका के अभिनय की तारीफ की थी। अब देखना ये है कि क्या 'निशानची' वेदिका के करियर में मील का पत्थर साबित होगी या नहीं?

ये दोस्ती है कमाल की!

बाघ के बच्चे के साथ अंजना

अमेरिका के एक अभयारण्य में रहने वाली चिम्पैंजी है अंजना। वह इतनी दयालु है कि उसने बहुत से जानवरों के बहुत से अनाथ बच्चों को अपनाया है। अब वह मां की तरह एक बाघ के बच्चे की देखरेख कर रही है और उसकी अठखेलियों में खुश भी हो रही है। वैसे चिम्पैंजी काफी बुद्धिमान और समझदार होते हैं और वे अपने साथ रहने वालों का भी ख्याल रखते हैं।

थेंबा का साथी एल्बर्ट

मां के मर जाने से नन्हा थेंबा (हाथी) बहुत दुखी हुआ और कई दिनों तक इसका शोक मनाता रहा। दक्षिण अफ्रीका के एक अभयारण्य में लाए जाने के बाद भी उसने खाना-पीना छोड़ रखा था। इसी दौरान उसे एल्बर्ट नाम की भेड़ के रूप में एक अच्छा दोस्त मिला। जल्द ही दोनों में गहरी दोस्ती हो गई। खेलने के साथ दोनों झपकियां भी साथ ही लेते। नए दोस्त ने इतनी खुशियां दीं कि थेंबा अपने दुख भूल गया और फिर से खाना-पीना शुरू कर दिया।

बालू-लियो और शेर खान की तिकड़ी

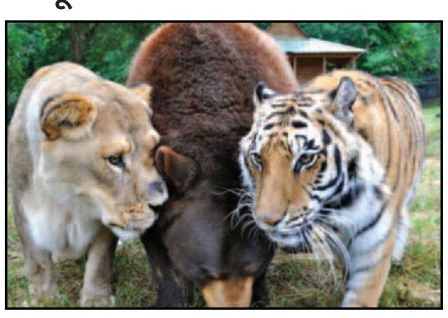

शेर खान दरअसल शेर नहीं, बल्कि एक बाघ है और उसके साथ बालू नाम का भालू और लियो नाम का शेर है। इन तीनों के साथ इनके मालिक ने बुरा सलूक किया था, जिस कारण बालू को चोट भी लग गई। इस मुश्किल की घड़ी में ये एक-दूसरे का सहारा बन गये और अब अमेरिका के एक अभयारण्य में ये अपना सारा वक्त साथ ही गुजारते हैं।

दुश्मन के भी दोस्त बनो

अमित लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती। फिर आखिर ऐसा क्या हुआ जो अमित को नीचा देखना पड़ा और वह बदल गया।

बहुत पहले की बात है। एक गांव था राजनगर। वहां पर करण नाम का एक लड़का रहता था। वह लड़का स्वभाव का बहुत अच्छा था। पढ़ाई में भी होशियार था। वह बहुत आज्ञाकारी और अपने मां-बाप का कहना मानता था। स्कूल में वह ज्यादातर बच्चों की तुलना में होशियार था। स्वभाव से वह विनम्र था और सभी के साथ अच्छा व्यवहार करता था। उसके स्कूल में चाहे उससे बड़े लड़के हों या फिर छोटे, सभी उसे पसंद करते थे। लेकिन इस कारण बहुत से लड़के करण से जलते भी थे। करण की ही क्लास में एक लड़का पढ़ता था, जिसका नाम था अमित। अमित पढ़ाई में तेज नहीं था। उसका स्कूल में खेलने में बहुत मन लगता था। वह अपने माता-पिता की बात नहीं सुनता था और उनसे रूखे तरीके से बात करता था। अपनी क्लास के लड़कों को वह चिढ़ाया करता था। यहां तक कि करण को भी वह खूब परेशान करता था। वह लगातार कोशिश करता था कि किसी भी तरह करण को नीचा दिखा सके और दूसरे बच्चों के सामने उसकी खिल्ली उड़ा सके। लेकिन उसकी लाख कोशिशों के बावजूद करण अपनी पढ़ाई में और बेहतर होता जा रहा था। चाहे बात पढ़ाई की हो या खेल की, करण हर किसी में बाजी मारता और हर जगह उसकी खूब तारीफ होती।

अपने आठवें जन्मदिन पर करण को अपने पिता की तरफ से गिफ्ट के तौर पर एक सुंदर सा पेन मिला। करण स्कूल में नोट्स लिखने के लिए वह पेन ले जाने लगा। वह पेन दिखने में तो सुंदर था ही, लिखता भी तेज था। जब अमित ने करण का पेन देखा तो उसे बहुत जलन हुई। अमित ने नजरें तिरछी करके करण से पूछा, 'यह पेन तुम्हें कहां से मिला? क्या तुमने इसे खरीदा है?'

'नहीं, मुझे यह पेन मेरे मम्मी-पापा ने बर्थ डे गिफ्ट में दिया है।' करण ने जवाब दिया।

इस बात से अमित का गुस्सा और भी ज्यादा भड़क गया। अपने माता-पिता से वह खुद इतना बुरा सलूक करता था कि अब तक उसे उनसे शायद ही कोई गिफ्ट मिला हो। जब लंच का वक्त हुआ, तो उसने करण का पेन चुराने का फैसला कर लिया। जब हर कोई लंच के लिए बाहर निकल गया, तो अमित ने चुपके से करण के बैग से पेन चुरा लिया। इसके बाद उसने पेन अपने बैग में छिपा लिया और लंच करने बाहर चला गया।

जब करण वापस लौटा तो उसे बैग में अपना पेन नहीं मिला। उसने अपने टीचर को इस बारे में बताया। इसके बाद पूरी क्लास में पेन खोजा गया, लेकिन वह नहीं मिला। तब टीचर ने क्लास के मॉनीटर से कहा कि वह सबके बैग की तलाशी ले। जल्द ही अमित के बैग से पेन मिल गया। उसे गुस्से से देखते हुए टीचर ने पूछा, 'अमित, पेन तुम्हारे बैग से निकला है, इस बारे में तुम्हें कुछ कहना है?'

अमित की आंखों में आंसू आ गए। वह कुछ नहीं बोला।

जब करण ने अमित को रोते हुए देखा, तो उसे अमित पर दया आ गई। उसके दिल में अमित के लिए कोई गिला-शिकवा नहीं था। उसने टीचर से कहा कि उसका खोया हुआ पेन वापस मिल गया है, अब वे अमित को सजा न दें। करण के इन शब्दों ने अमित की आंखें खोल दीं। वह हमेशा करण को परेशान करता था, लेकिन करण ने हमेशा उससे अच्छा व्यवहार किया। इस समय उसे एहसास हो रहा था कि करण कितना अच्छा लड़का है। उसने तुरंत करण और क्लास टीचर से माफी मांगी। इसके बाद करण और अमित दोस्त बन गए। फिर तो अमित का व्यवहार बदल गया और सभी उसे पसंद करने लगे। करण को अपने नए दोस्त पर नाज था।

हंसने वाला कोका

साथियों, क्या तुमने ऑस्ट्रेलिया के हंसने वाले कोका के बारे में सुना है? आजकल ऑस्ट्रेलिया में यह खूब चर्चित हो रहा है। हंसने वाले कोका का दरअसल राज यह है कि इसका मुंह इस तरह का बना होता है, मानो खुशी से हंस रहा हो। छोटे चूहे जैसा यह जानवर आजकल ऑस्ट्रेलिया में पर्यटकों के बीच खूब लोकप्रिय हो रहा है। ऐसा इसलिए, क्योंकि यह बेहद सेल्फी फ्रेंडली जानवर है। इसके साथ सेल्फी आती भी बड़ी मस्त है। इसकी स्माइलिंग वाले जबड़े की बनावट के कारण कुछ समय पहले इसे दुनिया के सबसे खुश जानवर की उपाधि भी मिल चुकी है। कोका वैसे तो एक साथ रहना पसंद करते हैं। आमतौर पर ये पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के दलदली इलाकों और जंगलों में रहते हैं। ऑस्ट्रेलिया के रॉटनेस्ट आइलैंड पर ये खूब पाए जाते हैं।

एक है कैट आइलैंड

तुमने वह कहानी तो सुनी ही होगी, जिसमें एक राजा ने मक्खियों को उड़ाने की नौकरी एक बंदर को दी थी। एक दिन राजा की नाक पर बैठी मक्खी को उस बंदर ने डंडे से ऐसा भगाया कि राजा की नाक ही टूट गई। उसके बाद राजा ने ऐसे दोस्तों से तौबा कर ली थी। कुछ ऐसा ही माजरा हुआ है दक्षिण जापान के एक दूर के द्वीप पर। वहां पर अधिकतर मछुआरे रहते हैं। बेचारों ने काफी समय पहले एक ऐसे दोस्त से दोस्ती कर ली, जो अब उनकी जान की मुसीबत बन गया है। दक्षिणी जापान के आओशिमा नामक द्वीप पर मछुआरों की दोस्त बनकर आई बिल्लियां अब संख्या में इतनी ज्यादा हो गई हैं कि जिधर नजर घुमाओ, बिल्लियां ही बिल्लियां नजर आती हैं। ये इतनी ज्यादा हो गई हैं कि यहां हर एक आदमी पर छह बिल्लियों का अनुपात बन गया है। बेचारे इस द्वीप के रहने वाले। हर वक्त उन्हें भगाते ही रहते हैं। कुछ उन्हें खाना भी खिलाते हैं। कुछ वर्षों पहले जब यहां चूहे बहुत ज्यादा हो गए थे और वे आए दिन मछुआरों की नाव काटने लगे, तो बिल्लियों को इस द्वीप पर लाया गया। अब चूहे तो नहीं रहे, लेकिन चारों तरफ बिल्लियां ही बिल्लियां हैं। इस द्वीप पर कुछ बुजुर्ग और युवा ही रहते हैं। बाकी सभी बड़े शहर चले गए हैं। अब यहां इतनी बिल्लियां हैं कि कोई रेस्टोरेंट या खोमचा नहीं खोला जा सकता। यहां केवल इस 'कैट आइलैंड' को देखने आने वालों को लाने-ले जाने वाली मोटरबोट ही ज्यादा दिखती हैं। हालांकि कुछ लोगों को इस द्वीप पर बिल्लियों को देखने में खूब मजा आता है।

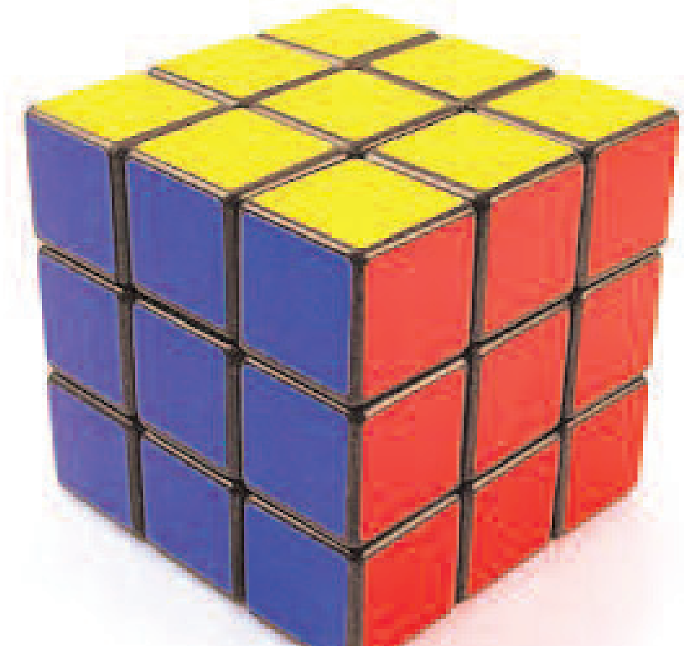

रूबिक क्यूब्स का तोड़ा रिकॉर्ड

अगर इंटेलिजेंट होने की बात आती है, तो रूबिक क्यूब्स में महारत की बात भी जरूर उठती है। आपको पता है कि रूबिक क्यूब्स क्या होते हैं?

दोस्तों, तुम सभी ने आकार में चौकोर कई रंग-बिरंगे खानों वाला यह क्यूब कभी न कभी खेला जरूर होगा। उसे हल करना आमतौर पर लोगों के लिए बहुत कठिन होता है। इसीलिए उसे जो सही-सही खेल ले, वह बड़ा बुद्धिमान माना जाता है। इस क्यूब को पसंद करने वालों में बहुत से ऐसे भी हैं, जो इसे सबसे जल्दी हल करने की प्रतियोगिता भी करते हैं। उन्हें 'स्पीड क्यूबर्स' के नाम से जाना जाता है। बहुत से लोग इसके लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे कि भारत के भार्गव नरसिम्हन। वह एक जाने-माने स्पीड क्यूबर हैं। उनके नाम रूबिक क्यूब के दो नेशनल रिकॉर्ड हैं और अब खबर है कि उन्होंने 5 रूबीस क्यूब का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। यह उन्होंने एक मिनट के अंदर हल कर दिया। यह काम उन्होंने केवल एक हाथ से ही कर दिखाया। वैसे भार्गव केवल 22 साल के हैं और अभी पढ़ाई कर रहे हैं। इनसे प्रेरणा लेकर तुम भी रूबिक क्यूब्स को जल्द से जल्द हल करने का मुकाबला रख सकते हो। तुम्हें बहुत मजा आएगा।